प्रेमबानी भाग ४ गजल १ - आज सतगुरु की सरन भाग से मैंने पाई	
हिंदी	संस्कृत
आज सतगुरु की सरन भाग से मैंने पाई । शब्द धुन बाज रही चाँदनी घट में छाई ॥ १ ॥	अद्य सद्गुरोः शरणं प्राप्तं भाग्याद् मया । नदति शब्दध्वनिः ज्योत्स्ना घटे व्याप्ता ॥ १ ॥
कर्म और धर्म भरम जान के सब छोड़ दिये । टेक पिछलों की तजी प्रेम गुरू में लाई ॥ २ ॥	कर्मधर्मश्च सर्वे त्यक्ताः भ्रमेति मत्वा । पुरा प्रथाः त्यक्ताः गुरौ प्रेमानीतवती ॥ २ ॥
सुन के सतगुरु के बचन पिया अमी रस सारा । बैठ सतसंग में परतीत हिये में आई ॥ ३ ॥	श्रुत्वा सद्गुरो: वचनानि पीत: सर्वामृतरसः । स्थित्वा सत्सङ्गे हृद्येऽऽगता प्रतीतिः ॥ ३ ॥
गुरु से ले शब्द का उपदेश किया अभ्यासा । घंटा और संख सुने जोत लखी नभ जाई ॥ ४ ॥	गुरोः शब्दोपदेशं गृहीत्वा कृतमभ्यासम् । श्रुतौ घंटाशंखौ अवलोकिता ज्योतिः सहस्रदलकमले ॥ ४ ॥
आगे चढ़ करके सुनी तिरकुटी में धुन मिरदंग । सुन में हंसन से मिली रागनी नइ नइ गाई ॥ ५ ॥	अग्रेऽऽरुह्य श्रुत: त्रिकुटीपदे मृदंगध्वनि: । सुन्नपदे हंसैः सह मिलिता गीतः नवनवसङ्गीतः ॥ ५ ॥
संग सतगुरु के चली जाय मिली सोहँग से । सतपुरुष मेहर करी बीन की धुन सुनवाई ॥ ६ ॥	सद्गुरुणा सह गता गत्वा मिलिता सोहंगपदेन । सत्तपुरुष: कृपा कृता श्राविता अहितुण्डवाद्यस्य ध्वनिः ॥ ६ ॥
लख अलख आगे अगम लोक का निरखा नूरा । राधास्वामी का दरश पाय चरन में धाई ॥ ७ ॥	अग्रे अलखपदं पश्य अगमलोकस्य प्रकाशः अवलोकितः । राधास्वामीदयालो: दर्शनं प्राप्य चरणौ धाविता ॥ ७ ॥

॥ ग़ज़ल २ ॥ आज सतगुरु के चरन में तू लगा ले नेहरा	
हिंदी	संस्कृत
आज सतगुरु के चरन में तू लगा ले नेहरा ॥ टेक ॥	अद्य सद्गुरोः चरणौ त्वं युञ्ज्याः प्रेम ॥ टेक ॥
शौक़ के साथ करो चेत के सतसँग उनका । मेहर से उनके तेरा छूटे चौरासी फेरा ॥ १ ॥	उत्साहेन कुर्याः तेषां सत्सङ्गं चैतन्यीभूय। आशीर्वृष्ट्या तेषां मुञ्चे: चतुरशीत्यामावागमनं तव॥१॥
चूके मत प्यारी कहन मान ले हितकर मेरी । माया और काल ने याँ डाला है भारी घेरा ॥ २ ॥	मा स्खल प्रिया कथनं स्वीकुर्याः हितकरं मम। मायाकालाभ्यामत्र स्थापयतः बृहद् पाशम्॥२॥
शब्द उपदेश गुरू से ले कमाओ निस दिन । चालो घर की तरफ़ अब छोड़ के मेरा तेरा ॥ ३ ॥	गुरोः शब्दोपदेशं गृहीत्वा अर्जेः प्रतिदिनम्। चलतु गृहं प्रति सम्प्रति मुक्तीभावेन मम तवेति॥३॥
राधास्वामी की सरन धार ले दृढ़ कर मन में । वे करें मेहर तेरा पार लगावें बेड़ा ॥ ४ ॥	राधास्वामीशरणं दार्ढ्येन मनसि धरेः। ते कुर्युः कृपां तव पारं कुर्युः तरणिम् ॥४॥

॥ ग़ज़ल ३ ॥ आज मम भाग जगे गुरु सतसँग आय मिली	
हिंदी	संस्कृत
आज मम भाग जगे गुरु सतसँग आय मिली ॥ टेक ॥	अद्य मम भाग्यानि जागृतानि आगत्य गुरुसत्सङ्गेन मिलिता॥ टेक ॥
सुनके सतगुरु के बचन हो गई मैं आज निहाल । संग में प्रेमी जनों के मैं मगन होय रली ॥ १ ॥	श्रुत्वा सद्गुरोः वचनानि कृतार्था जाता अद्याहम् । प्रेमीजनानां साकं तल्लीनं भूत्वा मिलिताहम् ॥ १ ॥
भेद सतगुरु ने दिया ऊँचे से ऊँचे देशा | और मत जितने हैं उनका रहा सिद्धान्त तली ॥ २ ॥	सद्गुरु: दत्तवन्तः भेदम् उच्चादुच्चदेशस्य । अन्यानि यानि मतानि सन्ति तेषां लक्ष्यस्थानमस्ति अध: ॥ २ ॥
शब्द घट घट में रहा बोल सुनो दिन और रात । भाग बड़ वह है जो सुनता है उसे चित से अली ॥३॥	प्रतिघटं शब्दः नदति दिने च रात्रौ च श्रृणु। श्रेष्ठभाग्यं तत् आलि यो श्रृणोति चित्तेन तम् ॥ ३ ॥
ध्यान गुरु आज सम्हालो सुनो धुन को घट में श्याम द्वारे के परे नभ में लखो जोत बली ॥ ४ ॥	संरक्षत्वद्य गुरुध्यानम् श्रृणु ध्वनिं घटे । श्यामद्वारमतिक्रम्य नभसि अवलोकयतु प्रज्वलिता ज्योतिम् ॥ ४ ॥
तिरकुटी जाय मिला अद्भुत दर्शन गुरु का । माया और काल की ताक़त यहाँ सब आज गली ॥ ५ ॥	त्रिकुटी पदं गत्वा प्राप्तम् गुरोः दर्शनमद्भुतम् । मायाकालाभ्यां च शक्तयः अत्राद्य सर्वा: नष्टाः ॥ ५ ॥
सुन्न के पार भँवर में गई सूरत चढ़ कर मुरली और बीन सुनी । सत्तपुरुष पास पली ॥ ६ ॥	सुन्नपदं पारं कृत्य भँवरपदम् गतात्मारुहय वेणुअहितुण्डवाद्यौ च श्रुतौ । सत्तपुरुषसमीपं पोषित: ॥ ६ ॥
गुरु से ले भेद चली आगे को सूरत प्यारी ।	गुरो: भेदं गृहीत्वा गत: अग्रे प्रियात्मा ।

राधास्वामी का दरश पाय के धुर धाम वली ॥ ७ ॥	राधास्वामीदर्शनं प्राप्तम् प्रभोरुच्चधामस्य (धाम्नः) ॥ ७ ॥

॥गज़ल ४॥ आज प्यारी तू समझ सोच के	
हिन्दी	संस्कृत
आज प्यारी तू समझ सोच के कर काम अपना ॥ टेक ॥	अद्य प्रिया त्वं विवेकेन कुरु स्वकार्यम् ॥ टेक ॥
क्यों पचो दुनिया में यह देश तुम्हारा नाहीं । मिलके सतगुरु से करो खोज भला धाम अपना ॥ १ ॥	कथं व्याकुलोऽसि जगति देशोऽयं नास्ति तव । मिलित्वा सद्गुरुणा सह कुरु अन्वेषणं निजधामस्य (धाम्नः) ॥ १ ॥
तेरा हितकारी नहीं दुनिया में गुरू सम कोई । वे जतावेंगे तुझे मेहर से निज नाम अपना ॥ २ ॥	न कोऽप्यस्ति तव हितकर्त्ता गुरुणा समं विश्वे । कृपया ते सञ्ज्ञापयस्यन्ति स्वकीय: निजनाम ॥ २ ॥
शब्द का भेद जुगत देवेंगे सतगुरु तुमको । नेम से करना तुम अभ्यास सुबह शाम अपना ॥ ३ ॥	शब्दस्य भेदं युक्तिञ्च दास्यन्ति सद्गुरुः तुभ्यम् । नियमेन कुर्याः त्वमभ्यासम् प्रातः सायञ्च स्वकीयः ॥ ३ ॥
राधास्वामी की सरन धार के चलना घर को । उनके चरन अंबु से तुम नित्त भरो जाम अपना ॥ ४ ॥	राधास्वामीशरणं धार्य चलतु स्वगृहम् । तेषां चरणामृतात् त्वं नित्यं भर स्व चषकम् ॥ ४ ॥

॥ ग़ज़ल ५ ॥ आज आनंद रहा मौज से चहूँ दिस छाई	
हिंदी	संस्कृत
आज आनंद रहा मौज से चहुँ दिस छाई । राधास्वामी की रहे सब मिल महिमा गाई ॥ १ ॥	अद्यानन्दः व्याप्तोऽस्ति प्रभो इच्छया चतुर्दिक्षु राधास्वामीदयालोः सर्वे मिलित्वा महिमां गायन्ति॥ १ ॥
मेहर से गुरु के मिला ऐसा सुहावन संजोग । ख़ुश हुए देख के यह औसर सज्जन भाई ॥ २ ॥	आशीर्वृष्ट्या: गुरोः प्राप्तः ईदृग् शोभामयः संयोगः दृष्ट्वा एनमवसरं प्रसन्ना: जाताः सज्जनाः भ्रातरः ॥ २ ॥
शादियाने के लगे बाजे चहूँ दिस बजने। राग और रागनी सुर संग उमँग कर गाई ॥ ३ ॥	प्रसन्नतायाः वाद्या: नदन्ति चतुर्दिक्षुः रागरागिन्यश्च ध्वनिना सह उत्साहेन गीताः ॥ ३ ॥
हर तरफ़ नारे खुशी के लगे करने गुंजार । अर्श ने गरज गरज बूँद अमी बरसाई ॥ ४॥	प्रतिदिशिं प्रसन्नतायाः ध्वनयः गुञ्जायमानाः भवन्ति गगनात् गर्जनै: सह अ़पतन् अमृतबिन्दवः ॥ ४ ॥
उमँग उमँग हर कोई देता है मुबारकबादी । राधास्वामी रहें निज मेहर से नित प्रति सहाई ॥ ५ ॥	अत्युत्साहेन प्रतिजनम् ददाति शुभाशयाः राधास्वामीदयालुः स्वकृपया नित्यं सहाय्याः भूयासुः ॥ ५ ॥

॥ ग़ज़ल ६॥ आज हंगामये शादी का गरम हो रहा देखो हर जा	
हिंदी	संस्कृत
आज हंगामये शादी का गरम हो रहा देखो हर जा । राधास्वामी की दया का करो सब शुक्र अदा ॥ १ ॥	अद्य विवाहस्य कोलाहलः वर्तते सर्वत्र पश्यन्तु । राधास्वामीदयायाः कुर्वन्तु सर्वे कृतज्ञताज्ञापनम् ॥ १ ॥
हंस और हंसिनी खुश होके बधाई देते । अर्श से भी चली आती है ख़ुशी की यह सदा ॥ २ ॥	हंसा: हंस्यश्च प्रसन्नं भूत्वा ददति शुभाशीषा: । आकाशादप्यायाति प्रसन्नतायाः ध्वनि अयम् ॥ २ ॥
राधास्वामी की दया से यह मुबारक जोड़ा। ख़ुश रहे याद में चरनों के करे मन को फ़िदा ॥ ३ ॥	राधास्वामीदयया मङ्गलमयोऽयं दम्पत्ति: । प्रसन्नं भूयास्तां चरणौ स्मरणे समर्पितं क्रियास्तां मनः॥ ३ ॥

॥ ग़ज़ल ७ ॥ आज गुरु प्यारे के चरनों में झलकती है	
हिंदी	संस्कृत
आज गुरु प्यारे के चरनों में झलकती है अजब मेंहदी की लाली ॥ टेक ॥	अद्य प्रियगुरोः चरणौ द्योतते अद्भुदरुणाभा मेन्धिकायाः ॥ टेक ॥
देखो गुरु प्यारे के चरनों में अजब मेंहदी की लाली । हाथ भी सुर्ख हैं और मुखड़े की छबि देखी निराली ॥ १ ॥	पश्यतु प्रियगुरो: चरणौ मेन्धिकाया अद्भुदरुणाभा । हस्तौ अपि ताम्रे आननस्य छविः दृष्टानुपमा ॥ १ ॥
हार और फूल लिये आती हैं सखियाँ घर से । मेंहदी हाथों में लगाती हैं सरब सूरत वाली ॥ २ ॥	हारा: पुष्पाणि च गृहीत्वा आयान्ति सख्यः गृहात् । मेन्धिकां हस्तौ लागयन्ति रूपलावण्यसम्पन्नाः सुन्दर्यः ॥ २ ॥
लाल रँग छाय रहा गुरु के महल में चहुँ दिस। देख परकाश तले रह गई माया काली ॥ ३ ॥	लोहितवर्णः व्याप्यते गुरो: सदने चतुर्दिक्षु । प्रकाशं वीक्ष्य अधः वसति कृष्णवर्णामाया॥ ३ ॥
सुर्त बन्नी का मिला भाग से गुरु बन्ने से जोड़ा । राधास्वामी की दया पाय के निज घर चाली ॥ ४ ॥	आत्मा वध्वा: सौभाग्याद् मिलितं गुरुवरेण सह युग्मम् । राधास्वामीदयालो: दयां प्राप्य निज गृहं याति ॥ ४ ॥

॥ ग़ज़ल ८ ॥ आज धुन अनहद बाज रही है	
हिंदी	संस्कृत
आज धुन अनहद बाज रही है । अधर चढ़ सूरत गाज रही है ॥ १ ॥	अद्य नदति अनाहतध्वनिः। **अधरमारुह्य गर्जत्यात्मा ॥ १ ॥**
देख घट जगमग जोत उजार । मगन होय भाग सराह रही है ॥ २ ॥	पश्य घटे प्रकाशमयीज्योतेः तेजम्। तल्लीनं भूत्वा भाग्यं प्रशंसति ॥ २ ॥
सुनत धुन गगना ओअंकार । रूप गुरु अद्भुत निरख रही है ॥ ३ ॥	*शृणोति गगने ओअंकारध्वनिम्।* करोत्यवलोकनं गुरोः रूपमद्भुतम् ॥ ३ ॥
सुन्न में खिली चाँदनी सार । ररँग धुन अक्षर गाज रही है ॥ ४ ॥	सुन्नपदे ज्योत्सनासार: विकसित:। अक्षरपदे गर्जति ररंगध्वनिः ॥ ४ ॥
बाँसरी बीन की परखत धार । दरश राधास्वामी झाँक रही है ॥ ५ ॥	वेणुअहितुण्डवाद्ययो: परीक्षते धाराम्। राधास्वामीदयालुं निगूढं पश्यति ॥ ५ ॥

॥ ग़ज़ल ९॥ न जग में चैन और न स्वर्ग सुख है	
हिंदी	संस्कृत
न जग में चैन और न स्वर्ग सुख है । न ब्रह्म पद में अमर अनंदा ॥ जहाँ तलक हैगा माया घेरा । वहाँ तलक हैगा जम का फंदा ॥ १ ॥	न जगति शान्तिः न सुखमस्ति स्वर्गे न ब्रह्मपदेऽस्ति अमरानन्दः ॥ यावद्पर्यन्तमस्ति मायाया आवरणम् तावद्पर्यन्तमस्ति यमस्य पाश: ॥ १ ॥
पड़े भटकते हैं जग में सारे । पदारथ और इंद्रियों के मारे ॥ वहाँ से अब उनको कौन उबारे । हुआ है अति करके जीव गंदा ॥ २ ॥	भ्रमन्ति जगति सर्वे पदार्थैः इन्द्रियश्च हताः ॥ तत्रत: कः तान् निष्कासयेत् अधुना अतिमलिनः जातः जीव: ॥ २ ॥
पुरानी टेकों में अटक रहे हैं । करम धरम में भटक रहे हैं ॥ सुरत शब्द की जुगत न मानें । हुआ है सारा ही जगत अंधा ॥ ३ ॥	पुरा प्रथासु संसक्ता: सन्ति । कर्मधर्मेषु पतन्ति ॥ सुरतशब्दस्य युक्तिं न स्वीकुर्वन्ति सर्वजगत् चक्षुहीनः जातः॥ ३ ॥
मिलें न जब लग गुरू पियारे । छुटे न मन के बिकार भारे ॥ न सुर्त चीन्हे न शब्द सम्हारे । रहे है बंधन में जीव बंधा ॥ ४ ॥	यावन्न प्राप्यन्ते प्रियगुरव: न मुच्यन्ते मनसः बृहद् विकारा: ॥ नात्मानं परिचिन्वन्ति न शब्दं संरक्षन्ति जीवः बन्धनेषु बद्धोऽस्ति ॥ ४ ॥
बिरह जगा गुरु चरन में धाओ । कर उनका सतसंग धर के भाओ ॥ उलट के धुन में सुरत लगाओ पिंड का चढ़के नाका खंडा ॥ ५ ॥	विरहं जागृतं कृत्वा गुरुचरणयोः धावतु श्रद्धां धार्य तेषां सत्संगं कुर्यात् ॥ उल्लुण्ट्य ध्वनौ आत्मानं युङ्क्ष्व आरुह्य मार्गावरोधं त्रुट पिण्डस्य॥ ५ ॥
गुरू मेहर से सुरत चढ़ावें सुन्न की धुन अजब सुनावें ॥ करम का लेखा तेरा चुकावें । लखावें निज घट की तोहि संधा ॥ ६ ॥	गुरुः कृपया आत्मानं आरोहयन्ति सुन्नपदस्याद्भुतध्वनिं श्रावयन्ति ॥ त्वां कर्मणां ऋणैः उऋणं कुर्वन्ति त्वां निजघटस्य मार्गं दर्शयन्ति ॥ ६ ॥
वहाँ से भी फिर अधर चढ़ावें । अलख अगम सत की धन सुनावें ॥ पियारे राधास्वामी से मिलावें । दिलावें भक्ती का तुझको झंडा ॥ ७ ॥	तत्रत अपि अधरं आरोहयन्ति अलखागमसत्तलोकानाञ्च ध्वनीन् श्रावयन्ति ॥ प्रियराधास्वामीदयालुना मेलं कारयन्ति त्वां भक्ते: ध्वजं दापयन्ति॥ ७ ॥

॥ ग़ज़ल १० ॥ लगे हैं सतगुरु मुझे पियारे	
हिंदी	संस्कृत
लगे हैं सतगुरु मुझे पियारे । कर उनका सतसंग शब्द धारे ॥ छुटे हैं मन के बिकार सारे । कहूँ मैं कैसे गुरू की गतियाँ ॥ १ ॥	मह्यं सद्गुरुः रोचन्ते। तेषां सत्संगं कृत्वा शब्दं धरामि॥ मनसः सर्वे विकारा अमुञ्चन्। गुरो:गतयः कथं वच्मि॥ १ ॥
सुरत शब्द में लगाऊँ दमदम । सुनूँ मगन होय धुनों की झमझम ॥ होत सब दूर मन की हमहम । सुने कौन ऐसी घट में बतियाँ ॥ २ ॥	आत्मानं शब्दे भूयोभूयः युनज्मि। तल्लीनं भूत्वा ध्वनीनां गुञ्जनं श्रृणोमि॥ दूरं भवति मनसः सर्वाहंकार: । कः ईदृशीं वार्तां घटे श्रृणोति॥ २ ॥
बढ़त पिरेम और पिरीत दिन दिन । होत मन से सुरत भिन भिन ॥ गावती गुरु की महिमा छिन छिन । रहत नित गुरु चरन में रतियाँ ॥ ३ ॥	प्रतिदिनं प्रेमप्रतीतिश्च वर्धेते। आत्मा मनसः पृथग् भवति॥ प्रतिपलं गुरुमहिमां गायति। नित्यं गुरुचरणयोः तल्लीन: भवति॥ ३ ॥
जगत के जीव हैं अभागी सारे । फिरें हैं मन इंद्रियों के मारे ॥ जाल से उनको को निकारे । सुनें न चित देके संत मतियाँ ॥ ४ ॥	सर्वे जगज्जीवाः असुकृतिनः। भ्रमन्ति मनसा इन्द्रियैश्च हताः ॥ पाशात् कः निष्कासयेत् तान् । चित्तेन संतमतं न श्रृण्वन्ति॥ ४ ॥
जगा है मेरा अपार भागा । चरन में राधास्वामी आन लागा ॥ गायें सब जीव माया रागा । रहे हैं थक मग में जोगी जतियाँ ॥५॥	मम अपारभाग्यं जागृतम् । राधास्वामीचरणयो अयुनजं मर्यादया॥ सर्वे जीवाः मायाया:गुणान् गायन्ति । श्रान्ताः मार्गे योगीजनाः यतयश्च ॥ ५ ॥

॥ ग़ज़ल ११ ॥ मन की मत मान के पछताओगे	
हिंदी	संस्कृत
मन की मत मान के पछताओगे । नज़रे मेहर से गिर जाओगे ॥ १ ॥	मनसः मतं स्वीकृत्य पश्चात्तापम् करिष्यसि। आशीर्दृष्टेः पतिष्यसि ॥ १ ॥
भूलो मत दुनिया में रहना हुशियार । काल के द्वारे पै टकराओगे ॥ २ ॥	मा विस्मर जगति पटुतया वस। कालस्य द्वारे प्रतिहनिष्यसि ॥ २ ॥
करनी का अपने क्या दोगे जवाब । धर्म के सामने चकराओगे ॥ ३ ॥	किं प्रत्युत्तरं दास्यसि स्वकर्मणाम् । आकुली भविष्यसि यमराजसमक्षे ॥ ३ ॥
पकड़ो सतगुरु के चरन जल्दी से । रक्षा हो जावेगी जो उनकी सरन आओगे ॥४॥	क्षिप्रं गृहाण सद्गुरुचरणौ । रक्षा भविष्यति तेषां शरणं आगमिष्यसि चेत्तर्हि ॥ ४ ॥
जो न मानोगे बचन काल करेगा सख़्ती । देख जमदूतों को घबराओगे ॥ ५ ॥	न स्वीकरिष्यसि वचनं चेत्तर्हि कालः कठोरः भविष्यति । व्याकुलः भविष्यसि यमदूतान् पश्य ॥ ५ ॥
सख़्त दुख भोगोगे चौरासी में । दामन अपना जो कहीं माया को पकड़ाओगे ॥६॥	क्लिष्टदुःखान् चतुरशीत्याम् लप्स्यसे। स्व वस्त्राञ्चलं चेत् मायां प्रग्राहयष्यसि ॥ ६ ॥
राधास्वामी का सुमिर नाम हिये से अपने । छिन में सब दुक्खों से बच जाओगे ॥ ७ ॥	स्वहृदयेन स्मर राधास्वामीनाम । क्षणे सर्वदुःखेभ्यः परिहर्तुं क्षमः॥ ७ ॥

॥ ग़ज़ल १२ ॥ जुड़ मिल के हंस सारे, दर्शन को गुरु के आये	
हिंदी	संस्कृत
जुड़ मिल के हंस सारे, दर्शन को गुरु के आये। बँगला अजब बनाया, सोभा कही न जाये॥ १ ॥	संयुज्य सर्वे हंसाः, गुरुदर्शनमागता: । सदनमद्भुतमलंकृतम्, शोभां वर्णितुं न शक्यते ॥ १ ॥
जब आरती सँवारी, हुई धूम धाम भारी । निज भाग सब सरावत, औसर अधिक सुहाये॥ २ ॥	यदा सज्जितारति:, जात: बृहद् कोलाहलः। प्रशंसन्ति सर्वे स्वभाग्यानि, अवसरोऽधिकः शोभामयः ॥ २ ॥
सब मिलके शब्द गावत, भर भर पिरेम लावत । नइ २ उमँग जगावत, चहूँ दिस हरष समाये ॥ ३ ॥	सर्वे मिलित्वा गायन्ति शब्दम् प्रेमाधिक्यम् आनयन्ति । नवोत्साहं जागृतं कुर्वन्ति, चतुर्दिक्षु हर्ष: संविशति ॥ ३ ॥
घंटा और संख गाजें, मिरदंग ढोल बाजें । सारंग सितार बीना, धुन बाँसुरी जगाये ॥ ४ ॥	गर्जतः घंटाशंखश्च, नदतः मृदंगपटहश्च । सारंगीसितारवीणावाद्या: वेणुध्वनिं जागृतं कृतवन्तः ॥ ४ ॥
हुये गुरु दयाल परसन, सबको लगाया चरनन । वारत रहे हैं तनमन, राधास्वामी ओट आये ॥ ५ ॥	सद्गुरुदयालुः प्रसन्नः जात:, सर्वान् चरणौ अयुञ्जन्। समर्पयन्ति तनुमनसी , राधास्वामीदयालोः शरणं आगताः ॥ ५ ॥

॥ मसनवी १ ॥ करूं संतमत का मैं थोड़ा बयाँ	
हिंदी	संस्कृत
करूँ संतमत का मैं थोड़ा बयाँ । वही सत्त मत हैगा अंदर जहाँ ॥ १ ॥	करोम्यहं अल्पवर्णनं सन्तमतस्य । संसारे अस्ति सैव सत्तमतम् ॥ १ ॥
उसी को कहें राधास्वामी पंथ सार । होवे जिस्से जीवों का सच्चा उधार ॥ २ ॥	तमेव कथ्यन्ते राधास्वामीपंथसार: । येन भवेत् जीवानां सत्योद्धार: ॥ २ ॥
परे सबके है कुल्ल मालिक का धाम । परम पुर्ष राधास्वामी है उनका नाम ॥ ३ ॥	सर्वेषां परे अस्ति सर्वप्रभो: धाम:(धाम) । परमपुरुषराधास्वामी इत्यस्ति तेषां नाम ॥ ३ ॥
यही नाम जाती है असली निदा । होत जिसकी धुन घट में सबके सदा ॥ ४ ॥	इदमेव यथार्थनाम सर्वप्रभो: यथार्थशब्दश्च। सर्वेषां घटे भवति यस्य ध्वनिः सदा ॥ ४ ॥
जो गावेगा यह नाम धर करके प्यार । उसी जीव का होगा सच्चा उधार ॥ ५ ॥	प्रेम धार्य यो गास्यति इदं नाम । तस्यैव जीवस्य भविष्यति सत्योद्धारः ॥ ५ ॥
मगर भेद भी जानना है ज़रूर । बिना भेद कारज न होवेगा पूर ॥ ६ ॥	परं मर्मस्य ज्ञानमप्यावश्यकम् । भेदं विना न पूर्णं भविष्यति कार्यम् ॥ ६ ॥
उठी स्वामी चरनों से इक आदि धार। वही कुल्ल रचना की करतार यार ॥ ७ ॥	स्वामीचरणाभ्यामुत्थितैकाधारा । भो मित्र सैवास्ति सर्वरचनाया: आदिकर्त्ता ॥ ७ ॥
उसी आदि धारा का राधा है नाम। उसी से सरें सबके कारज तमाम ॥ ८ ॥	तस्या एव आदिधारायाः राधास्वामीनाम । तया एव पूर्णाः भवन्ति सर्वेषां कार्याणि ॥ ८ ॥
जहाँ से वह धारा निकस्ती भई । वही आदि स्वामी है सबका सही ॥ ९ ॥	यत्रतः तस्या: धारायाः निर्गमनमभवत्। सैवास्ति सर्वेषां आदिप्रभुः सत्योऽस्ति ॥ ९ ॥
उतर कर के वह धार ठहरी जहाँ । अगम लोक की हुई रचना वहाँ ॥ १० ॥	अवतरणं कृत्वा सा धारा यत्र स्थिता। तत्राभवत् अगमलोकस्य रचना ॥ १० ॥
अगम लोक का भारी मंडल बँधा ।	अबधत् बृहद् मण्डल: अगमलोकस्य।

वही कुल्ल रचना का घेरा हुआ ॥ ११ ॥	सैवाभवत् सर्वरचानाया: परिक्रमः ॥ ११ ॥
हुई जिस क़दर उसके रचना तले । वह इक गोशे में उसके निस दिन पले ॥ १२ ॥	येनविधिनाभूत् रचना तस्याधः। तदेककोणे तस्य प्रतिदिनं अपुष्यत् ॥ १२ ॥
अगम की हुई जब कि रचना तमाम । उठी वहाँ से फिर इक धारा अगाम ॥ १३ ॥	यदा हि अगमलोकस्य रचना समाप्ता। तस्मात् स्थानादुद्भूता एकाग्रगामीधारा ॥ १३ ॥
उतर करके नीचे किया बास आय । अलख लोक की वहाँ रचना रचाय ॥ १४ ॥	अवतरणं कृत्वा अधोवासं कृतमागत्य। तत्र रचिता अलखलोकस्य रचना ॥ १४ ॥
बँधा उसका मंडल बदस्तूर आय । वहाँ से उतर धार सतपुर रचाय ॥ १५ ॥	आगत्याबधत् तस्य मण्डलं निरन्तरम्। तत्रतः अवतरणं कृत्वा धारया सत्तपुर: रचितः ॥ १५ ॥
हुआ सतपुरुष का वह सतलोक धाम । हुई गिर्द हंसों की रचना तमाम ॥ १६ ॥	सत्तपुरुषस्य सत्तलोकधाम:(धाम) बभूव सः। चतुर्दिक्षु समस्त हंसानां रचना जाता ॥ १६ ॥
जुदे दीप हंसों के पैदा किये । पुरुष का दरश कर मगन सब हुए ॥ १७ ॥	हंसानां पृथग् द्वीपाः निर्मिताः। पुरुषस्य दर्शनं कृत्वा तल्लीना: अभवन् सर्वे ॥ १७ ॥
हुआ सत्त रचना का यहाँ तक ज़हूर। नहीं जहाँ माया नहीं काल कूर ॥ १८ ॥	सत्तरचनायाः प्रकाशः अस्ति अत्रपर्यन्तम्। नास्ति यत्र माया न क्रूर कालः ॥ १८ ॥
नहीं कोई आसा नहीं कोई कार । दरश पुर्ष का और अमी का अहार ॥ १९ ॥	न काऽऽपि आशा न कोऽपि कार्यम्। पुरुषस्य दर्शनम् अमृताहारञ्च ॥ १९ ॥
करें मिल के सब ऐश आनंद सार । नहीं काल कष्ट और नहीं कर्म भार ॥ २० ॥	सर्वे मिलित्वा कुर्वन्ति विलासमानंदसारञ्च। न कालस्य कष्टः न कर्मणां भारश्च ॥ २० ॥
बहुत काल तक ऐसी रचना रही । वही देश सत्त और आनँदमई ॥ २१ ॥	दीर्घकालपर्यन्तं ईदृशी रचना आसीत् सैव सत्तदेशः आनंदयुक्तश्च ॥ २१ ॥
उठी नीचे सतपुर से इक श्याम धार । उतर कर किया उसने बहुतक पसार ॥ २२ ॥	सत्तपुरादधः एका कृष्णधारा उत्पन्ना। अवतरणं कृत्वा तया कृत: बृहद्प्रसारः ॥ २२ ॥

पुरुष सेव वह नित्त करती रही । वले मन में कुछ चाह धरती रही ॥ २३ ॥	सा नित्यं पुरुषस्य सेवामकरोत् । परं मनसि काचिदिच्छा अधरत् ॥ २३ ॥
किया उसने इस तरह इज़हार हाल । कि हे सतपुरुष मेरे दाता दयाल ॥ २४ ॥	सा अनेन प्रकारेण स्व स्थितिं प्रकटमकरोत् । हे सत्तपुरुष! मम दाता दयालु: ॥ २४ ॥
जुदे देश में राज दीजे मुझे । सुरत अंस का बीज दीजे मुझे ॥२५॥	पृथग्देशे राज्यं दद्यु: मह्यम् । आत्माशंस्य बीजं दद्यु: मह्यम् ॥ २५ ॥
मुझे यहाँ का रहना सुहाता नहीं । तुम्हारा मुझे देश भाता नहीं ॥ २६ ॥	अस्मिन् देशे वासं मह्यं न रोचते । तव देशः न रोचते मह्यम् ॥ २६ ॥
यह सुनकर दिया पुर्ष ने अस जवाब । निकल जाओ तू यहाँ से ख़ाना ख़राब ॥ २७ ॥	श्रुत्वायं पुरुषः प्रत्युत्तरं कृतवन्तः । गृहविकारिका निर्गच्छतु त्वं अस्माद् स्थानात् ॥ २७ ॥
तले देश में जाके रचना करो। वहाँ बैठ कर राज अपना करो ॥२८॥	निम्नदेशे गत्वा रचनां कुरु त्वम् । तत्र उपविश्य राज्यं संचालयतु स्व ॥ २८ ॥
निरंजन हुआ नाम उस धार का । हुआ काल का अंग उस धार का ॥ २९ ॥	तस्या: धाराया : नाम निरंजनः अभवत् । तस्याः धारायाः अंगः कालस्य अभवत् ॥ २९ ॥
पुरुष ने लई दूसरी धार उपाय। हुआ पीत रँग आद्या नाम ताय ॥३०॥	पुरुषेण उत्पादिता अन्या धारा । अभवत् पीतवर्ण आद्यानाम च तस्या: ॥ ३० ॥
हुकम से यह धारा उतारी गई । निरंजन के सँग जाय मिलती भई ॥३१॥	आदेशादवतारितेयं धारा । गत्वा निरंजेन सह मिलिता ॥ ३१ ॥
हुए सुन में पुर्ष और परकिर्त यह । हुए माया और ब्रह्म त्रिकुटी में यह ॥ ३२॥	अभवतां सुन्नप्रदेशे पुरुषप्रकृतिश्च इमौ । त्रिकुटीपदे अभवतां मायाब्रह्म च इमौ ॥ ३२ ॥
सहसदलकँवल जाय कीन्हा निवास । हुआ तीन गुन का यहाँ से उजास ॥३३॥	सहस्रदलपदे गत्वा निवासं कृतौ । अत्रतः त्रिगुणानां प्रकाशनमभवत् ॥ ३३ ॥
धारा आद्या ने यहाँ जोत रूप । निरंजन ने धारा शियामी सरूप ॥३४॥	अत्र आद्या ज्योतिरूपं धृतवती । निरंजनेन धृतः कृष्णवर्णरूपः ॥ ३४ ॥

प्रथम ब्रह्म सृष्टी इन्होंने करी । हुई फिर त्रिलोकी की रचना खड़ी ॥३५॥	प्रथमब्रह्मसृष्टि: रचिता आभ्याम् । तदनन्तरं त्रैलोक्याः रचना अभवत् ॥ ३५ ॥
निरंजन ने धारा पुरुष का धियान । हुई सारी रचना की जोती प्रधान ॥३६॥	निरंजनेन पुरुषस्य ध्यानं कृतम् । ज्योतिः सर्वरचनायाः मुख्या शक्तिः अभवत् ॥ ३६ ॥
हुए तीन गुन उसके नायब यहाँ । हुई उनसे फिर सारी रचना अयाँ ॥ ३७॥	अत्र त्रिगुणाः तस्य प्रतिनिधयः अभवन् । तैः समग्ररचना प्रकटिता ॥ ३७ ॥

॥ मसनवी २ ॥ करूँ पहिले महिमा गुरू की बयान	
हिंदी	संस्कृत
करूँ पहिले महिमा गुरू की बयान । किया जिसने रहमत से पैदा जहान॥ १ ॥	प्रथमं गुरो: महिमां वर्णयामि । यैः दयया संसारः प्रकटितः ॥ १ ॥
परम गुरु परम पुर्ष राधास्वामी नाम । अजब हैरतो हैरत है उनका धाम ॥ २ ॥	परमगुरु: परमपुरुषः राधास्वामीनाम इत्यस्ति तेषाम् । अद्भुताश्चर्यजनकोऽस्ति तेषां धाम:(धाम) ॥ २ ॥
लिया मुझको चरनों में अपने लगा । सुरत शब्द मारग का दीन्हा पता ॥ ३॥	मां स्वचरणयोः अयुञ्जन् । सुरतशब्दमार्गस्य ज्ञानं अकारयन् ॥ ३ ॥
दया से जो संजोग पैदा किया । मेहर का रहे हाथ उस सँग लगा ॥ ४ ॥	दयया यो संयोगः प्रादुर्भूतः । आशीर्हस्तः भूयात् तेन सह ॥ ४ ॥
जपूँ चित्त से नित्त राधास्वामी नाम | पाऊँ मेहर से एक दिन आदि धाम ॥ ५ ॥	चित्तेन राधास्वामीनाम्नः स्मरणं करोमि नित्यम् । कृपया प्राप्स्यामि एकस्मिन् दिने आदिधाम:(धाम) ॥ ५ ॥

॥ मसनवी ३ ॥ अहो मेरे सतगुरु अहो मेरी जान	
हिंदी	संस्कृत
अहो मेरे सतगुरु अहो मेरी जान । अहो मेरे प्यारे अहो मेरे प्रान ॥ १ ॥	अहो मम सद्गुरुः अहो मम जीवनम् । अहो मम प्रिय: अहो मम प्राण: ॥ १ ॥
नज़र मेहर की मुझ पै अब कीजिये । मुझे अबके जम से छुड़ा लीजिये ॥ २ ॥	आशीर्दृष्टिं अधुना मयि कुर्युः । माम सम्प्रति कालात् मोचयेयु: ॥ २ ॥
निकालो मुझे काल के जाल से । बचा लेव माया के जंजाल से ॥ ३ ॥	निष्कासयेयुः मां कालपाशात् । पायु: मायायाः आयासात् ॥ ३ ॥
तड़पता हूँ दर्शन को दिन रात मैं । सहूँ दुक्ख मन इंदरी साथ मैं ॥ ४ ॥	व्याकुलं भवामि अहोरात्रम् दर्शनायाहम् । मन इन्द्रियैश्च सह दुःखं सहे ॥ ४ ॥
जगत भोग देवें झकोले सदा । पंच दूत फोड़ें फफोले जुदा ॥ ५ ॥	जगद्भोगाः ददति झटका: सदा । पंचदूता: स्फोटयन्ति त्वग्स्फोटा: पृथक् ॥ ५ ॥
बिना दर्श तुम्हरे बने कैसे काम । मेहर बिन करे कौन मेरी सहाम ॥ ६ ॥	दर्शनं विना कथं पूर्णाः भवेयुः कार्याणि । कृपां विना कः कुर्यात् मम साहाय्यम् ॥ ६ ॥
सुनो बीनती मेरी दाता दयाल । दरश दे करो आज मुझको निहाल ॥ ७ ॥	दातादयालु: मन विनतीं श्रृणुयु: । दर्शनं दत्त्वा मम कृतार्थं कुर्यु: अद्य ॥ ७ ॥
जो चाहो करो मुझ पै छिन में दया । नहीं कुछ कठिन तुम्हरे आगे मया ॥ ८ ॥	वाञ्छसि चेद् मयि क्षणे दयां कुर्युः । तव कृपाया अग्रे न किमपि कठिनम् ॥ ८ ॥
मेरे वास्ते अब हुए क्यों कठोर । मैं क़ुरबान जाउँ तुम पै हे बंदीछोड़ ॥९॥	कथं कठोरः जात: अधुना मम कृते । हे बन्धकानां मोचक! करोम्यात्मसमर्पणं युष्मासु अहम् ॥९॥
सदा से तुम्हारा दयालू है नाम । करो क्यों नहीं मेरा अब पूरा काम ॥१०॥	सर्वदातः दयालुः वर्तते नाम युष्माकम् । कथं न कुर्वन्ति मम कार्यं पूर्णमधुना ॥१०॥
चरन में करूँ बीनती बार बार । सुनो हे दयाल मेरी जल्दी पुकार ॥११॥	भूयोभूयः चरणयोः करोमि विनतीम्। हे दयालु! शीघ्रं श्रृणुयुः ममाह्वानम् ॥११॥
दरश देके सूरत चढ़ा दीजिये ।	आरोहयेयु आत्मानं दर्शनं दत्वा ।

मुझे रस भरी धुन सुना दीजिये ॥१२॥	श्रावयेयु: रसपूर्णाध्वनिं माम् ॥१२॥
मिटाओ मेरे अब सभी दुक्ख साल । करो मुझको निरभय हे दाता दयाल ॥ १३॥	नष्टं कुर्युः मम सर्वाणि दुःखानिकष्टानि च । हे दातादयालु! मां निर्भीकं कुर्युः ॥१३॥
सरन में पड़ा तुम्हरे दुनिया से भाज। मेरे काज की अब है तुम ही को लाज ॥१४॥	जगतः पलायनं कृत्वा तव शरणं आगतोऽस्मि । तवैवास्ति मम कार्यस्य प्रतिष्ठा अधुना॥१४॥
तुम्हारा ही हूँ जैसा तैसा कपूत। बना लीजिये मुझको अपना सपूत ॥१५॥	तवैवास्मि कुपुत्रः यादृशः तादृशः। कुर्युः मां स्व सुपुत्रः ॥१५॥
सरापा भरा हूँगा मैं खोट से । बचाओ मुझे अपनी अब ओट दे ॥१६॥	पर्याप्तदोषैः परिपूर्णोऽस्मि अहम् । त्राहि मां स्व शरणं दत्त्वाधुना ॥ १६ ॥
करो राधास्वामी मेहर की निगाह । लेवो मुझको अब जैसे तैसे निबाह ॥१७॥	राधास्वामीदयालुः कुर्युः आशीर्दृष्टिम् । निर्वहेयुः मां येन केन प्रकारेण ॥ १७ ॥
बिना तुम चरन कोइ दीखे न ठौर । बिना तुम सहाई नहीं कोइ और ॥१८॥	न दृश्यते कोऽपि आश्रयः विना तव चरणौ । न कोऽप्यन्यः सहायक: तव विना ॥ १८ ॥
मैं बालक पड़ा हूँ तुम्हारी सरन । सम्हालो दिखाओ मुझे निज चरन ॥१९॥	बालोऽहं तव शरणमागतोऽस्मि । संरक्षेयुः दर्शयेयुः माम् निज चरणौ ॥ १९ ॥
बिरह में रहूँ मैं तपत रात दिन । दरश बिन नहीं चैन मोहि एक खिन ॥ २० ॥	अहोरात्रं विरहे व्याकुलोऽस्म्यहम् । नैकमपि क्षणं शांतिः दर्शनं विना माम् ॥ २० ॥
गुनाहों से अपने मैं शरमिंदा हूँ । छिमा कर छिमा मैं तेरा बंदा हूँ ॥२१॥	स्वदोषैः लज्जितोऽस्म्यहम् । क्षम्यतां क्षम्यतामहं तव सेवकः ॥ २१ ॥
नहीं बनते मुझ से जो पाप और क़सूर । छिमा की तेरी होती फिर क्या ज़रूर ॥ २२॥	पापापराधाश्च न भवेयुः मया चेत्तर्हि । तव क्षमादानस्य का आवश्यकतासीत् ॥ २२ ॥
मैं नालायक़ हूँ इसमें कुछ शक नहीं ।	निकृष्टोऽस्म्यहं नास्त्यस्मिन् काऽऽपि शंका ।

दया जो करें प्यारे अचरज नहीं ॥ २३ ॥	प्रियप्रभुः दयां कुर्युः चेत्तर्हि न कोऽप्याश्चर्यम् ॥ २३ ॥
क़सूरों को बख्शो मेरे हे दयाल । ग़रीबी पै मेरे धरो अब ख़याल ॥२४॥	हे मम दयालु: क्षम्यतां ममापराधान् । मम दरिद्रतायां विचारं कुर्यु अधुना॥२४॥
दया के भरोसे बने सब क़सूर । मेहर से देओ बख़्श आली हजुर ॥२५॥	दयायाः विश्वासे घटिताः सर्वे अपराधाः । हे बृहत्तमः स्वामिन् क्षम्यताम् आशीर्वृष्ट्या॥२५॥
मैं तुम्हरा हूँ और तुम हो मेरे सही । पिता पुत्र का नाता पूरा चही ॥२६॥	अहं तवास्मि त्वञ्च ममासि सत्यमिदम्। पितापुत्रस्य पूर्णं सम्बन्धं वाञ्छामि॥२६॥
पिता तुम हो और मैं हूँ बालक समान। करो मेहर दीन और निबल मोहि जान ॥२७॥	त्वं पिता असि अहञ्च बालेव अस्मि । कुर्यु: दयां दीनं निर्बलञ्च ज्ञात्वा माम्॥२७॥
लगाया जिसे तुमने चरनों के साथ । सम्हाला उसे मेहर से देके हाथ ॥२८॥	यं चरणाभ्यां युक्तवन्तः त्वया । तं संरक्षितवन्त: कृपया स्वहस्तं दत्वा॥२८॥
करो जब कि तुम निन्दकों का उधार । मुझे कैसे छोड़ोगे अब नौ के वार ॥२९॥	त्वन्तु निन्दकानां उद्धारं कुर्वन्ति । मम कथं मुञ्चेयुः नवेन्द्रियेभ्य: इतः॥२९॥
मेहर माँगूँ फिर मेहर माँगूँ दयार । लेवो प्यारे राधास्वामी जल्दी उबार ॥३०॥	हे दयालुः पुनः पुनः वाञ्छामि आशीर्वृष्टिम्। प्रिय राधास्वामीदयालु: शीघ्रं उद्धरेयु:॥३०॥

॥ शब्द १ ॥ आज सतसँग गुरु का कीजे	
हिंदी	संस्कृत
आज सतसँग गुरु का कीजे । दीखे घट बिमल बिलासा ॥टेक॥	अद्य गुरोः सत्संगं कुर्यात् । दृश्यते घटे विमलविलासः ॥ टेक ॥
यह जगत जाल दुखदाई । क्यों या में बैस बिताई ॥ ले सतगुरु की सरनाई । धर राधास्वामी चरनन आसा ॥ १ ॥	दुःखदः जगद् पाशोऽयम् । कथमस्मिन् वयं व्यतीतं कुर्यात् ॥ गृहाण सद्गुरुशरणम् । धर राधास्वामीचरणयो आशाम् ॥ १ ॥
गुरु बचन चित्त में धरना । सुत शब्द कमाई करना ॥ मन माया से नित लड़ना । तब देखे अजब तमाशा ॥ २ ॥	गुरुवचनानि चित्ते धरेत् । सुरतशब्दस्यार्जनं कुर्यात् ॥ मनमायया च सह नित्यं युद्धेत् । तदा पश्येत् अद्भुतकौतुकम् ॥ २ ॥
गुरु चरनन प्रीति बढ़ाना । मन सूरत अधर चढ़ाना ॥ राधास्वामी सरन समाना । तब पावे निज घर बासा ॥ ३ ॥	गुरुचरणयोः प्रीतिं वर्धेत। आत्मामनश्च अधरमारोहयेताम् ॥ राधास्वामीशरणं संविशेत् । तदा प्राप्नोति स्वगृहे वासम् ॥ ३ ॥
गुरु दया संग ले भाई । गगना में पहुँची धाई ॥ फिर सत्तनाम पद पाई । ॥ किया राधास्वामी चरन निवासा ॥ ४ ॥	हे भ्राता गुरुदयया साकम् । धावित्वा गगने गत:० ॥ तदा सत्तनामपदं प्राप्तम् । राधास्वामीचरणयोः वासं कृतम् ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥ आज मेघा रिमझिम बरसे	
हिंदी	संस्कृत
आज मेघा रिमझिम बरसे। हिये पिया की पीर सतावे ॥टेक॥	अद्य शीकरवर्षा: भवत्येयम् । हृदये प्रियस्य पीडा पीडयति॥टेक॥
पिया छाय रहे परदेसा । मैं पड़ी काल के देसा ॥ मोहि निस दिन यही रे अँदेसा । कोइ पिया से आन मिलावे ॥ १ ॥	प्रियः व्याप्यन्ते परदेशे । अहमस्मि कालस्य देशे ॥ प्रतिदिनं ममेयमेव चिन्ता । आगत्य कोऽपि प्रियेण सह मेलयेत् ॥१॥
पपिहा जब पिउ पिउ गावे । मोहि पिया प्यारे की याद आवे ॥ बिरह अगिन भड़क भड़कावे । पिया बिन को तपन बुझावे ॥ २ ॥	चातक: यदा पिउपिउ इति गायति । स्मराम्यहं प्रियप्राणाधारम् ॥ विरहाग्निः करोत्युद्दीपनमुत्तेजनं च । प्रियं विना क: तपनं निर्वापयेत् ॥२॥
सतगुरु हितकारी मिलिया । उन पिया का सँदेसा कहिया ॥ मारग का भेद सुनइया । सुत धुन सँग अधर चढ़ावे ॥ ३ ॥	प्राप्तवन्तः हितकर: सद्गुरु: । स: प्रियस्य सन्देशं कथितवन्तः॥ पथस्य भेदं अश्रावयन् । आत्मानं ध्वनिना सह अधरमारोहयन्ति ॥३॥
मोहि दीन अधीन निहारा । गुरु कीन्ही मेहर अपारा ॥ मोहि भौजल पार उतारा । सुत चढ़ चढ़ अधिक हरषावे ॥ ४ ॥	दीनाधीनं माम् अवलोकितवन्तः । सद्गुरुः कृता आशीर्वृष्टि अपारा ॥ मां भवसागरात् तारितवन्तः । आत्मारोहणं कृत्वा हर्षत्यधिकम् ॥४॥
धुन सुन सुत अधर सिधारी । सत अलख अगम्म लखा री ॥ पिया राधास्वामी रूप निहारी । उन महिमा छिन छिन गावे ॥ ५ ॥	ध्वनिं श्रुत्वा आत्माधरं प्राप्तम् । सतालखागमलोका अवलोकिता: ॥ राधास्वामीप्रियस्य रूपदर्शनं कृतम् । तेषां महिमां प्रतिक्षणं गायति ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥ आज गरज गरज घन गरजे	
हिंदी	संस्कृत
आज गरज गरज घन गरजे । मेरा जियरा सुन सुन लरजे ॥ टेक ॥	अद्य मेघाः नर्दयन् गर्जन्ति । श्रावं श्रावं प्रकम्पते मम हृदयः ॥ टेक ॥
श्याम घटा रही छाई । अमी धार की बरषा लाई ॥ दामिन की दमक सुहाई । मेरा पिया बिन मनुआँ तरसे ॥ १ ॥	कृष्णघटा व्याप्यते। अमृतधारायाः वृष्टिम् आनीतवती॥ विद्युतद्युतिः रोचते। मम मनः प्रियं विना तृष्यति॥ १ ॥
सतगुरु पिया भेद बतावें । गैल चलन की जुगत लखावें ॥ उनसे नित प्रीति बढ़ावें । तब पिया प्यारे का पद दरसे ॥ २ ॥	सद्गुरुः प्रियतमः भेदं वदन्ति। पथगमनस्य युक्तिं दर्शयन्ति ॥ तैः सह नित्यं प्रीतिं वर्धेरन् । तदा दृश्यते प्रियप्रभोः पदः ॥ २ ॥
मैं पिय की पीर दिवानी । मारग की पाय निशानी ॥ तन मन धन कर क़ुरबानी । गुरु चरन गगन जाय परसें ॥ ३ ॥	प्रियस्य पीडायामुन्मत्ताहम् । पथः संकेतं प्राप्य ॥ तनुमनधनञ्च समर्पितं कृत्वा। गगनमारुह्य गुरुचरणयोः स्पर्शं कृतम् ॥ ३ ॥
वहाँ से भी चली अगाड़ी । सतपुर सतरूप निहारी ॥ गइ अलख अगम के पारी । राधास्वामी दरश पाय हरषे ॥ ४ ॥	तत्रतः अपि अग्रे गतवती । सत्तपुरे सत्तरूपम् अवलोकितवती ॥ अलखागमपदं पारं कृत्य गता । राधास्वामीप्रभोः दर्शनं प्राप्य हर्षति ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥ मेरे तपन उठत हिय भारी	
हिंदी	संस्कृत
मेरे तपन उठत हिय भारी । गुरु प्रेम की बरषा कीजे ॥ टेक ॥	ममहृदये संतापं भवत्यधिकम् । सद्गुरुः प्रेम्ण: वृष्टिं कुर्युः॥ टेक ॥
बिरह अगिन सुलगत नित घट में। कस निरखूँ छबि तिल पट में ॥ मेरी उमर गई खटपट में । अब तो गुरु दरशन दीजे ॥ १ ॥	नित्यं घटे विरहाग्निः प्रज्वलति। तिलपटे छविं कथमवलोकयामि॥ असामञ्जस्ये मम वयं गतम्। अधुना दर्शनं देहि सद्गुरुः ॥ १ ॥
बिन दरशन जिय घबरावे । जग भोग नहीं अब भावे ॥ कोई बात न मोहि सुहावे । अस काया छिन छिन छीजे ॥ २ ॥	दर्शनं विना हृदयं व्याकुलं भवति । अधुना जगद्भोगा: न रोचन्ते ॥ काऽऽपि वार्ता मां न रोचते। एवं प्रतिक्षणं काया क्षीयते॥ २ ॥
गुरु मेहर करो अब भारी । देव चरनन प्रीति करारी ॥ तुम दरशन नित्त निहारी । तब सुरत प्रेम रँग भींजे ॥ ३ ॥	गुरु आशीर्वृष्टिं कुर्युः। चरणयोः गहनप्रीतिं देहि॥ तव दर्शनं नित्यं निरीक्षे। तदा आत्मा प्रेमरङ्गे क्लेदिष्यति॥ ३ ॥
तुम राधास्वामी समरथ दाता । मुझको भी करो सनाथा ॥ तुम चरन रहूँ रस राता । मेरी सुरत सरन में लीजे ॥ ४ ॥	भवन्तः समर्थाः राधास्वामीदातार:। मामपि शरणे लेहि॥ तव चरणरसे लीनः भवेयम् । ममात्मानं शरणे लेहि ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥ क्यों जग में रहे भरमानी	
हिंदी	संस्कृत
क्यों जग में रहे भरमानी । मिल गुरु से घर को चलना ॥टेक॥	कथं भ्रमिता जगति । गुरूणा सह मेलं कृत्वा गृहं गच्छेत्॥टेक॥
यह देश बिगाना भाई । नित तिमिर रहे यहाँ छाई ॥ और काल करम भरमाई । भोगन सँग छिन छिन गलना ॥ १ ॥	हे भ्राता देशोऽयं परकीयः । अत्र तिमिरः नित्यम् आच्छादति॥ अपि कालकर्माणि च भ्रमन्ति। प्रतिक्षणं भोगैः सह क्षयेत् ॥१॥
सतसँग का देख बिलासा । गुरु चरनन धर बिश्वासा ॥ निज घर की धारो आसा । जग भाठी में नहिं जलना ॥ २ ॥	सत्संगस्य विलासं पश्य । गुरुचरणयोः विश्वासं धर॥ स्वगृहस्याशां धर। जगतः भाष्त्रे मा ज्वलतु॥२॥
गुरु प्रेम हिये में धारो । जग आसा दूर निकारो ॥ दूतन को मार पछाड़ो । मन माया छिन छिन दलना ॥ ३ ॥	गुरु प्रेम हृदये धर। जगद् आशां निष्कासय दूतान् हत्वा पराजितं कुरु। प्रतिक्षणं मनमायां च विदारयतम् ॥३॥
सुत शब्द जुगत ले सारा। गुरु नाम करो आधारा ॥ करमों का काटो जारा । धुन सुन सुन घट में चढ़ना ॥ ४ ॥	सम्पूर्ण सुरतशब्दयुक्तिं गृहाण। गुरुनाम्नः आश्रयं लेहि॥ कर्मणां पाशं कृन्त। श्रावं श्रावं ध्वनिं अधरमारोहतु ॥४॥
त्रिकुटी का देख उजेरा । सतपुर जाय कीन्हा फेरा ॥ कर अलख अगम से नेहरा । फिर राधास्वामी से जाय मिलना ॥ ५॥	त्रिकुटीपदस्य प्रकाशं दृष्टवा सत्तपुरं गत्वा गमनागमनं कृतम् ॥ अलखागमाभ्यां सह प्रेम धर। पुनः राधास्वामीदयालुना सह मेलं कुरु॥५॥

॥ शब्द ६ ॥ क्यों सोच करे मन मूरख	
हिंदी	संस्कृत
क्यों सोच करे मन मूरख प्यारे राधास्वामी हैं रखवारे ॥टेक॥	मूर्खमनः कथं चिन्तयसि । राधास्वामीप्रिय: संरक्षकाः सन्ति॥टेक॥
जब जनमा तब दूध दियो तोहि । माता गोद पलाया ॥ सर्ब भाँति तेरी रक्षा कीन्ही । चरनन मेल मिलाया ॥ रहा था फँस नौ द्वारे ॥ १ ॥	यदा अजजन् दुग्धं अददु: त्वाम्। मातु: अङ्के अपालयन् ॥ सर्वविधिना तव रक्षां कृतवन्तः। चरणयोः मेलमकारयन्॥ नवद्वारेषु आसम् बद्धीभूतः ॥ १ ॥
सर्ब भोग इंद्रिन के दीन्हें । जगत तमाशा दिखाया ॥ ॥ खैंच लिया सतसँग में फिर तोहि । निज घर भेद सुनाया ॥ मेहर से खोल चलो दस द्वारे ॥ २ ॥	इन्द्रियाणां सर्वभोगाः अयच्छन्। जगद् कौतुकं अदर्शयन्॥ पुन: सत्संगे त्वाम् आकृष्टवन्त:। निजगृहस्य भेदम् अश्रावयन्॥ कृपया उद्घाट्य दशं द्वारं चल॥ २ ॥
बचन सुना तेरी समझ बढ़ावें । मन की निरख करावें ॥ करम भरम और टेक छुड़ाकर । शब्द में सुरत लगावें ॥ अधर चढ़ देख बहारे ॥ ३ ॥	वचनं श्रावयित्वा तव बोधं वर्धेरन्। मनसः परिवीक्षणं कारयन्ति॥ कर्मभ्रमाश्च प्रथा: च मोचयित्वा। आत्मानं शब्दे युञ्जन्ति॥ अधरमारुह्य आनन्दं पश्य॥ ३ ॥
घंटा संख सुनावें नभपुर । त्रिकुटी लख गुरु नूरा ॥ चंद्र चाँदनी चौक निहारो । गुफा परे पद पूरा ॥ आरती सतगुरु धारे ॥ ४ ॥	घंटाशंखयो ध्वनिं नभपुरे श्रावयन्ति। गुरुप्रकाशं त्रिकुटीपदे पश्य॥ इन्दुज्योत्स्नाया: चतुष्पथम् अवलोकयतु। पूर्णपदं गुहानन्तरम् ॥ सद्गुरो: आरतिं धरेत्॥ ४ ॥
ले दुरबीन पुरुष से प्यारी । अलख अगम को चाली ॥ तिस पर राधास्वामी धाम अपारा। लख लख हुई निहाली ॥ सीस उन चरनन डारे ॥ ५ ॥	प्रिया पुरुषाद् युग्मदूरेक्षिकां गृहीत्वा। अलखागमलोकौ गतवती॥ तत: परे अपार: राधास्वामीधाम:(धाम) । भूयोभूयः पश्य कृतार्था जाता॥ तेषां चरणयो: समर्पिता शिरसा ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥ क्यों अटक रही जग प्यारी	
हिंदी	संस्कृत
क्यों अटक रही जग प्यारी । यामें दुख भोगे भारी ॥ टेक ॥	कथं संसक्त: जगति प्रिया । अस्मिन् दुःखानि भुनक्षि बहवः ॥ टेक ॥
कोई यहाँ तेरा संग न साथी । स्वारथ सँग सब मिल रहते ॥ क्यों धोखा खाओ इन में । क्यों भोगन सँग नित बहते ॥ जम दंड सहो सरकारी ॥ १ ॥	न कोऽप्यत्र तव सङ्गं मित्रञ्च । स्वार्थवशेन सर्वे मिलित्वा वसन्ति ॥ कथं वञ्चनां प्राप्नोषि एषु । कथं भोगै: सह प्रवहसि नित्यम् ॥ राजकीयदण्डं सहसे॥ १ ॥
सतसँग में मेल मिलाना । गुरु चरनन भाव बढ़ाना ॥ सुन सुन निज बचन कमाना । घट में गुरु रूप धियाना ॥ गुरुभक्ती रीत सम्हारी ॥ २ ॥	सत्संगे मेलं कुर्या: । गुरुचरणयोः श्रद्धां वर्धेथा: ॥ श्रावं श्रावं निज वचनानि अर्जये:। घटे गुरुरूपं ध्याये: ॥ गुरुभक्तिरीति: अवधारिता ॥ २ ॥
सुत शब्द जुगत ले गुरु से । नित नेम से कर अभ्यासा ॥ मन इंद्री सुरत समेटो । फिर घट में देख बिलासा | ले गुरु की मेहर करारी ॥ ३ ॥	गुरोः गृहाण सुरतशब्दयुक्तिम् । नित्यं नियमेन अभ्यासं कुर्या:॥ मनेन्द्रियात्मनः च नियमनं कुर्या:। तदा घटे विलासं पश्य। गुरोः पूर्णदयां गृहाण॥ ३ ॥
गुरु करम भरम सब टारें । मन के करें दूर बिकारा । सब पिछली टेक निकारें । दरसावें फिर घर न्यारा ॥ लख उनकी गत मत न्यारी ॥४॥	गुरुः कर्मभ्रमान् च सर्वान् टलन्ति। मनसः विकारान् अपसारयन्ति । पुरासंस्कारान् निष्कासयन्ति। पुनः अद्भुतगृहं दर्शयन्ति॥ तेषां पृथग् गतिं मतञ्च पश्य॥४॥
राधास्वामी सरन सम्हारो । गुरू के संग अधर सिधारो ॥ लख जोत सूर और चंदा । सत अलख अगम को धारो ॥ हुई राधास्वामी चरन दुलारी ॥५॥	राधास्वामीशरणं धरे। अधरं प्राप्नुया: गुरूणा सह ॥ ज्योतिसूर्यचन्द्रञ्च पश्य । सतालखागमलोकान् धरे॥ राधास्वामीचरणप्रिया जाता॥५॥

॥ भाग २ ॥

॥ शब्द १॥ सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी । आज अचरज बचन सुनाय रहे री

हिंदी	संस्कृत
सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी । आज अचरज बचन सुनाय रहे री ॥टेक॥	अयि सखि! श्रृणु मम प्रिय रा धा/ध: स्व आ मीदयालुः । अयि अद्भुतवचनं श्रावयन्ति ॥टेक॥
सुन सुन बानी सब हुए हैं दिवाने । तन मन सुध बिसराय रहे री ॥१॥	वाणीं श्रावं श्रावं सर्वे उन्मत्ताः जाताः । अयि तनुमनसोः स्मृतिं विस्मारयन्ति ॥१॥
मेहर दया की बरषा भारी । प्रेम के बदरा छाय रहे री ॥२॥	आशीर्दयायाः तीव्रावृष्टिः । अयि प्रेम्ण: मेघाः आच्छादयन्ति ॥२॥
धुन झनकार सुनत घट अंतर । नइ नइ उमँग जगाय रहे री ॥३॥	घटान्तसि ध्वनिं झंकृतिञ्च श्रृण्वन् । अयि नवनवोत्साहं जागरयन्ति ॥३॥
सेवा कर हिये होत हुलासा । तन मन वार धराय रहे री ॥४॥	सेवां कृत्वा हृदि भवति हर्षः । अयि तनुमनसी अर्पयन्ति ॥४॥
राधास्वामी पर जावें बलिहारी । जुड़ मिल उन गुन गाय रहे री ॥५॥	रा धा/ध: स्व आ मीदयालौ समर्पयन्ति । अयि मिलित्वा गायन्ति तेषां गुणान् ॥५॥

॥ शब्द २ ॥ सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी	
हिंदी	संस्कृत
सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी । आज अद्भुत दरश दिखाय रहे री ॥ टेक ॥	अयि आली शृणु मम प्रियराधास्वामीदयालुः । अयि अद्याद्भुतं दर्शनं दर्शयन्ति ॥ टेक ॥
दर्शन कर मोहे नर नारी । छबि पर दृष्टि तनाय रहे री ॥ १ ॥	दर्शनं कृत्वा मोहिताः नरनार्यश्च । अयि छवौ दृष्टिं तन्वन्ति ॥ १ ॥
क्या कहूँ महिमा अचरज रूपा । बहु सूर चंद शरमाय रहे री ॥ २ ॥	किं वच्मि अद्द्भुतरूपस्य महिमाम् । अयि लज्जां कुर्वन्ति अनेके रविशशयः ॥ २ ॥
जिन जिन दरश करा मेरे गुरु का । सोइ निज भाग जगाय रहे री ॥ ३ ॥	येन येन कृतं मम गुरोः दर्शनम् । अयि तैव स्व भाग्यं जागरयन्ति ॥ ३ ॥
जगत जीव क्या जानें महिमा | सब करम धरम भरमाय रहे री ॥ ४ ॥	किं जानन्ति महिमां जगज्जीवाः । अयि सर्वे कर्मधर्मैः भ्रमन्ति ॥ ४ ॥
आओ रे आओ जीव सरनी आओ । राधास्वामी मेहर कराय रहे री ॥ ५ ॥	एहि एहि जीवाः शरणं आयात । अयि राधास्वामीदयालुः आशीर्वृष्टिं कारयन्ति ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥ सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी	
हिंदी	संस्कृत
सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी । आज नइ धुन घट में सुनाय रहे री ॥ टेक ॥	अयि आली शृणु मम प्रियराधास्वामीदयालुः । अयि अद्य नवध्वनिं घटे श्रावयन्ति ॥ टेक ॥
सुन सुन धुन सुत हुइ मतवाली। काल करम मुरझाय रहे री ॥ १ ॥	श्रावं श्रावं ध्वनिं उन्मत्तः जातः आत्मा। अयि म्लायन्ति कालकर्माणि च॥ १ ॥
मन और सुत दोऊ रस पावत । गगन ओर अब धाय रहे री ॥ २ ॥	आत्मामनश्च द्वौ रसं प्राप्नुतः। अयिअधुना गगनं प्रति धावतः ॥ २ ॥
हंसन संग करत नित केला। मानसरोवर न्हाय रहे री ॥ ३ ॥	हंसैः सह नित्यविलासम् कुरुत:। अयि मानसरोवरे स्नानं कुरुत:॥ ३ ॥
अधर जाय सुत मिली भक्तन से । भँवरगुफा ढिंग छाय रहे री ॥ ४ ॥	अधरमारुह्यात्मा भक्तैः सह मिलिता:। अयि भँवरगुहायाः समीपं स्थिता: ॥ ४ ॥
धुन सुन गई जहँ राधास्वामी प्यारे । अचरज दरश दिखाय रहे री ॥ ५ ॥	ध्वनिं श्रुत्वा गतौ यत्र विराजन्ति राधास्वामीप्रिया: । अयि अद्भुतदर्शनं दर्शयन्ति ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥ सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी	
हिंदी	संस्कृत
सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी । मोहि प्यार से गोद बिठाय रहे री ॥टेक ॥	अयि आली शृणु मम प्रियराधास्वामीदयालुः । मां प्रेम्णा अङ्के उपवेशयन्ति ॥टेक॥
मैं तो नीच अधम नाकारा । मेहर से मोहि अपनाय रहे री ॥ १ ॥	अहन्तु निकृष्टश्च अधमश्च अकर्मण्यश्च । अयि कृपया मां स्वीकुर्वन्ति ॥ १ ॥
सतसँग में मोहि खैंच लगाया । भक्ती रीति सिखाय रहे री ॥ २ ॥	आकृष्टः मां सत्सङ्गे । अयि शिक्षयन्ति भक्तिरीतिम् ॥ २ ॥
बल अपना दे सेव कराई । छिन छिन रक्षा कराय रहे री ॥ ३ ॥	स्वशक्तिं दत्वा सेवाम् अकारयन्। अयि प्रतिक्षणं रक्षां कारयन्ति ॥ ३ ॥
शब्द भेद दे जुगत बताई । घट में सुरत चढ़ाय रहे री ॥ ४ ॥	शब्दभेदं दत्वा युक्तिं अकथयन् । अयि घटे आत्मानम् आरोहयन्ति ॥ ४ ॥
क्योंकर करूँ शुकराना उनका । (मेरे) रोम रोम गुन गाय रहे री ॥ ५ ॥	कथं करोमि कृतज्ञताज्ञापनं तेषाम् । अयि (मम) प्रतिरोमं गायति गुणान् ॥ ५ ॥
चरन ओट दे जीव बचावें । काल और करम लजाय रहे री ॥ ६ ॥	चरणाश्रयं दत्वा जीवान् रक्षन्ति । अयि कालश्च कर्मश्च त्रपन्ति ॥ ६ ॥
जो कोइ चरन सरन में आये । सबका काज बनाय रहे री ॥ ७ ॥	यो कोऽप्यागच्छति चरणशरणम् । अयि सर्वेषां कार्याणि सिद्धं कुर्वन्ति ॥ ७ ॥
जीव निबल क्या करे विचारा | अपनी दया से निभाय रहे री ॥ ८ ॥	किं कर्तुं शक्यते अशक्तजीवः । अयि स्वदयया निर्वहन्ति ॥ ८ ॥
परम गुरु समरथ राधास्वामी । सब पर मेहर कराय रहे री ॥९॥	परमगुरुः राधास्वामीसमर्थाः । अयि सर्वेषु कारयन्ति आशीर्वृष्टिम् ॥९॥

॥ शब्द ५ ॥ सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी	
हिंदी	संस्कृत
सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी । मोहि मेहर से अँगवा लगाय रहे री ॥ टेक॥	अयि आली शृणु मम प्रियराधास्वामीदयालुः । मम प्रेम्णा अङ्गे युञ्जन्ति ॥ टेक॥
सतसँग कर बाढ़ा विश्वासा । गहरी प्रीति जगाय रहे री ॥ १ ॥	सत्सगं कृत्वा अवर्धत विश्वासः । अयि गहनप्रीतिं जागरयन्ति ॥ १ ॥
स्वामी चरनन पर जाऊँ बलिहारी । मेहर का सब गुन गाय रहे री ॥ २ ॥	स्वामीचरणयोः समर्पयामि । अयि कृपायाः गुणगानं कुर्वन्ति सर्वे ॥ २ ॥
शब्द अभ्यास करत मन सूरत । गगन ओर नित धाय रहे री ॥ ३ ॥	आत्मामनश्च शब्दाभ्यासं कुरुतः । अयि नित्यं गगनं प्रति धावतः ॥ ३ ॥
दया हुई सुत सतपुर आई । अलख अगम दरसाय रहे री ॥ ४ ॥	जाता दया आत्मा सत्तपुरम् आगतः । अयि अलखागमपदं दर्शयन्ति ॥ ४ ॥
राधास्वामी धाम गई सुत सज के । निज महल में संग खिलाय रहे री ॥ ५ ॥	राधास्वामीधामं(धाम) गतः आत्मा सज्जीभूय । निजसदने क्रीडयन्ति सार्धम् ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥ सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी	
हिंदी	संस्कृत
सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी । आज प्रेम रंग बरसाय रहे री ॥ टेक ॥	अयि आली शृणु मम प्रिय राधास्वामीदातारः। अद्य वर्षन्ति प्रेम्णः रङ्गम् ॥ टेक ॥
अनुरागी जन जुड़ मिल आय । बहु बिधि बिनती लाय रहे री ॥ १ ॥	अनुरागिणः संयुज्य आगच्छन्ति। अयि बहुविधयाचनां आनयन्ति ॥ १ ॥
प्रेम दान दीजे गुरु प्यारे । सब मन में तरसाय रहे री ॥ २ ॥	देहि प्रेमदानं प्रियगुरवः। अयि सर्वे मनसि तर्षन्ति ॥ २ ॥
सुन बिनती प्यारे राधास्वामी दाता । घट में सुरत चढ़ाय रहे री ॥ ३ ॥	शृणु विनतिं प्रिय राधास्वामीदातारः। अयि घटे आत्मानमारोहयन्ति ॥ ३ ॥
मगन होय सुन नइ धुन घट में । धन धन राधास्वामी गाय रहे री ॥ ४ ॥	तल्लीनं भूत्वा शृणु नवीनध्वनिं घटे। अयि धन्याः धन्या : राधास्वामीदातारः गायन्ति ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥ सुन री सखी मानो कहन मेरी	
हिंदी	संस्कृत
सुन री सखी मानो कहन मेरी । चलो गुरु सँग खेलो फाग आज ॥ टेक ॥	शृणु सखि स्वीकुरु मम वचनम् । चल गुरुणा सह क्रीड होलीमद्य ॥टेक॥
मोह नींद में कब लग सोना । मिल सतगुरु से जाग आज ॥ १ ॥	कियत् कालपर्यन्तं मोहनिद्रायां शयीथा: । सदगुरुणा सह मिलित्वा जागर्तु अद्य ॥१॥
सतसँग कर हित चित से उनका । तेरा सोता जागे भाग आज ॥ २ ॥	हितेन चित्तेन च तेषां सत्संगं कुरु। अद्य तव सुप्तभाग्यं जागृहि ॥२॥
शब्द जुगत ले घट में बैठो । सुन ले अनहद राग आज ॥ ३ ॥	शब्दयुक्तिं गृहीत्वा घटे उपविश । अद्य अनहदशब्दं शृणु॥३॥
दया मेहर ले चढ़ो अधर में। मारो काला नाग आज ॥ ४ ॥	आशीर्दययया साकं अधरम् आरोहयतु । जहि कृष्णसर्पमद्य॥४॥
सरन धार राधास्वामी मन में । माया घर से भाग आज ॥ ५ ॥	मनसि राधास्वामीशरणं धर । मायागृहात् पलायनं कुरु अद्य ॥५॥
मिल हंसन से खेलो होली । छोड़ो संगत काग आज ॥ ६ ॥	हंसैः सह मिलित्वा क्रीड होलीम् । त्यज कागस्य संगतिमद्य॥६॥
सत्त अलख और अगम के पारा । राधास्वामी चरनन लाग आज ॥ ७ ॥	सत्तालखागमपदेभ्य: पारम्। अद्य राधास्वामीचरणयो: युनक्तु ॥७॥

॥ शब्द ८ ॥ चलो री सखी आज गगनपुरी	
हिंदी	संस्कृत
चलो री सखी आज गगनपुरी । जहँ गुरु प्यारे फाग रचाय रहे री ॥ टेक ॥	रे आलि अद्य चल गगनपुरीम् । अयि यत्र सद्गुरप्रिय: होलीं रचयन्ति॥ १ ॥
गुरु सतसंगी सब मिल खेलें । प्रेम का रंग बहाय रहे री ॥ १ ॥	गुरुश्च सत्संगिनश्च सर्वे मिलित्वा क्रीडन्ति । अयि प्रेमरङ्गं प्रवहन्ति॥ २ ॥
आगे चल देखो सुन नगरी । जहँ हंस हंसिनी गाय रहे री ॥ २ ॥	अग्रे गत्वा पश्य सुन्ननगरीम् । अयि यत्र गायन्ति हंसहंसस्त्रियश्च ॥ ३ ॥
शब्द शोर जहँ मच रहा भारी । अमृतधार चुवाय रहे री ॥ ३ ॥	शब्दकुतूहलं भवति यत्राधिकम् । अयि अमृतधारां स्रवन्ति॥ ४ ॥
महासुन्न चढ़ भँवरगुफा लख । जहँ बंसी मधुर बजाय रहे री ॥ ४ ॥	आरुह्य महासुन्नं भँवरगुहां दृष्ट्वा । अयि यत्र मधुरं मुरलीं नदन्ति॥ ५ ॥
सतपुर जाय दरश पुर्ष कीन्हा । जहँ अचरज बीन सुनाय रहे री ॥ ५ ॥	सतपुरं गत्वा पुरुषस्य दर्शनं कृतवान् । अयि यत्राद्भुतम् अहितुण्डवाद्यं श्रावयन्ति । ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन हुई लौलीना । जहँ अलख अगम दर छाय रहे री ॥ ६ ॥	राधास्वामीचरणयो: तल्लीन: जात:। अयि यत्र द्वारे स्थितौ अलखागमौ ॥ ७ ॥
प्रेम का सोत पोत जहँ भारी । मेहर दया उमँगाय रहे री ॥ ७ ॥	प्रेम्ण: स्रोतः भण्डारश्च यत्राधिकः । अयि आशीर्दयां च उत्साहितं कुर्वन्ति ॥ ८ ॥
राधास्वामी मात पिता पति मेरे । मोहि प्यार से गोद बिठाय रहे री ॥ ८ ॥	राधास्वामीदाता मम पितरौपतिश्च । अयि मां प्रेम्णा अङ्के उपवेशयन्ति ॥ ९ ॥

॥ शब्द-९ ॥ अचरज आरत गुरु की धारूँ	
हिंदी	संस्कृत
अचरज आरत गुरु की धारूँ । उमँग नई हिये छाय रही री ॥ टेक ॥	अद्भुदारतिं गुरोः धरामि । हृदये आच्छादितः नवीनोत्साहः ॥टेक॥
सतसंगी सब हरषत आये । सतसंगिन उमँगाय रही री ॥ १ ॥	आगता: सर्वे सत्संगिन: हर्षितं भूत्वा। उत्साहितं कुर्वन्ति सत्संगिनी: ॥ १ ॥
अजब समा क्या बरन सुनाऊँ । चहुँ दिस आनँद गाय रहे री ॥ २ ॥	किं वर्णयामि अद्भुदवसरः। आनन्दं गायन्ति चतुर्दिक्षु ॥ २ ॥
बस्तर भोजन बहु बिधि साजे । देख भाव हरषाय रहे री ॥ ३ ॥	आच्छादनश्च भोजनश्च बहुविधिना सज्जिता:। भावं दृष्ट्वा हर्षिताः भवन्ति ॥ ३ ॥
बढ़त हुलास हिये में भारी । धन फल फूल लुटाय रहे री ॥ ४ ॥	अत्युल्लासः वर्धते हृदये । धनंफलानिपुष्पाणि लुण्ठयन्ति ॥ ४ ॥
धूम मची आरत की भारी । बहु जिव अब घिर आय रहे री ॥ ५ ॥	आरते: कोलाहल: अधिक: जात:। बहुजीवाधुना एकत्रीभूय आगच्छन्ति ॥ ५ ॥
सकल समाज हरष रहा मन में । उमँग बधाई गाय रहे री ॥ ६ ॥	सर्वसमाज: हर्षति मनसि। उल्लासेन गायन्ति मंगलगीतम् ॥ ६ ॥
अस अस देख बिलास नवीना । सब जीव अचरज लाय रहे री ॥ ७ ॥	ईदृशं नूतनविलासं दृष्ट्वा। सर्वेजीवा आश्चर्यं कुर्वन्ति ॥ ७ ॥
राधास्वामी दयाल प्रसन्न होय कर । मेहर दया फ़रमाय रहे री ॥ ८ ॥	राधास्वामीदयालुः प्रसन्नं भूत्वा। आशीर्दयां आदिशन्ति ॥ ८ ॥
अपनी दया से काज बनाया । आपहि करनी कराय रहे री ॥ ९ ॥	स्वदयया कार्यं सिद्धं कृतवन्तः । स्वयमेव क्रियां कारयन्ति ॥ ९ ॥
सेव कराय दया से अपनी । जन का भाग जगाय रहे री ॥१०॥	स्वदयया प्रेरयन्ति सेवायै । सेवकस्य भाग्यं जागरयन्ति ॥ १० ॥
राधास्वामी मेहर से हिये में सबके । छिन छिन प्रेम बढ़ाय रहे री ॥ ११ ॥	राधास्वामीदाता दयया सर्वेषां हृदयेषु । प्रतिक्षणं प्रेम वर्धयन्ति ॥ ११ ॥

॥ शब्द १० ॥ प्रेम भरी भोली बाली सुरतिया	
हिंदी	संस्कृत
प्रेम भरी भोली बाली सुरतिया । पल पल गुरु को रिझाय रही ॥ १ ॥	प्रेम्णापूर्णा सरला बालात्मा । प्रतिपलं गुरुं प्रसन्नं करोति॥ १ ॥
दीन होय लागी सतसँग में । बचन सुनत हरषाय रही ॥ २ ॥	दीनं भूत्वा सत्संगे अयुनक् । प्रवचनं श्रुत्वा हर्षित: भवति ॥ २ ॥
लिपट रही चरनन में हित से । हिये गुरु रूप बसाय रही ॥ ३ ॥	प्रेम्णा चरणयो: लिप्लिम्पति। हृदये गुरुस्वरूपं स्थापयति॥ ३ ॥
शब्द उपदेश पाय मगनानी । धुन में सुरत जमाय रही ॥ ४ ॥	प्राप्य शब्दोपदेशं तल्लीन: । ध्वनौ आत्मानं स्थिरं करोति ॥ ४ ॥
गुरु की दया परख अंतर में । उमँग उमँग गुन गाय रही ॥ ५ ॥	निरीक्ष्य गुरुदयां अन्तसि । अत्युत्साहेन गुणान् गायति ॥ ५ ॥
प्रेम बढ़ा अब हिये अंतर में । तन मन वार धराय रही ॥ ६ ॥	प्रेमावर्धताधुना हृदन्तसि । तनुमनसी समर्पयति ॥ ६ ॥
गुरु का सतसँग लागा प्यारा । दरशन को नित धाय रही ॥ ७ ॥	प्रतीतः प्रियः गुरो: सत्संग: । नित्यं धावति दर्शनाय ॥ ७ ॥
जस जल मीन हरष दरशन कर । हिये का कँवल खिलाय रही ॥ ८ ॥	यथा हर्षति मत्स्य: जलं पश्य । हृद्कमलं विकासयति ॥ ८ ॥
खेलत बिगसत संग गुरू के । मेहर दया नित चाह रही ॥ ९ ॥	क्रीडति हर्षति गुरुणा सार्धम् । वाञ्छति नित्यं आशीर्दयाम् ॥ ९ ॥
प्रेमी जन सँग नाचत गावत । सुध बुध सब बिसराय रही ॥१०॥	नृत्यति गायति च प्रेमीजनैः सह । स्मरणं ज्ञानञ्च सर्वं विस्मरति ॥ १० ॥
राधास्वामी दयाल लिया अपनाई । नित नया प्रेम जगाय रही ॥११॥	राधास्वामीदयालु: स्वीकृतवन्त:। नित्यं नूतन प्रेम जागरयति॥ ११ ॥

॥ शब्द १ ॥ प्रेमी जइयो रे सतसँग में	
हिंदी	संस्कृत
प्रेमी जइयो रे सतसँग में । लीजो सुरत जगाय ॥ टेक ॥	अयि प्रिय यायात् सत्सङ्गे। जागृयात् आत्मानम् ॥ टेक ॥
बिन सतसँग मन चेते नाहीं । सतगुरु प्यारे की सरनाय ॥ १ ॥	न चैतन्यं भवति मनः सत्संगं विना । आयायाः प्रियगुरोः शरणम् ॥ १ ॥
अमृत रूपी बचन गुरू के । सुन सुन रहे चरन लौ लाय ॥ २ ॥	सद्गुरो: अमृतवचनानि । श्रावं श्रावं तल्लीनाः भवन्ति चरणयो: ॥ २ ॥
शब्द भेद लेकर सतगुरु से । मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ ३ ॥	सद्गुरो: शब्दभेदं गृहीत्वा। मनः आत्मानं च अधरमारोहयेताम् ॥ ३ ॥
सुन सुन धुन सूरत मगनानी । मन से लीना खूँट छुड़ाय ॥ ४ ॥	श्रावं श्रावं ध्वनिं उन्मत्तात्मा । अमुञ्चत् सम्बन्धं मनसः ॥ ४ ॥
सतगुरु लार चली फिर प्यारी । सत्तलोक किया आसन जाय ॥ ५ ॥	पुनः सद्गुरुसाकं गतवान् प्रिय:। गत्वा सतलोकं कृतमासनम् ॥ ५ ॥
सत्तपुरुष का दरशन पाया । हंसन सँग लिया मेल मिलाय ॥ ६ ॥	प्राप्तं सत्तपुरुषस्य दर्शनम् । कृतं मेलं हंसै: सार्धम् ॥ ६ ॥
वहाँ से राधास्वामी धाम सिधारी । मगन होय निज भाग सराय ॥ ७ ॥	तत्रतः प्राप्ता राधास्वामीधामम्(धाम)। प्रशंसति निजभाग्यं तल्लीनं भूत्वा ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥ प्रेमी मिलियो रे सतगुरु से	
हिंदी	संस्कृत
प्रेमी मिलियो रे सतगुरु से | देवें काज बनाय ॥ टेक ॥	प्रियः मिलेत् सद्गुरुणा । पूर्णं कुर्युः कार्याणि ॥ १ ॥
दया निधान परम हितकारी। जीवों को दें ओट बुलाय ॥ १ ॥	दयायागारः परमहितकरः । जीवान् शरणं आह्वयन्ति॥ २ ॥
दीन होय जो सरनी आवे । ताको मेहर से लें अपनाय ॥ २ ॥	यो आयाति शरणं दीनं भूत्वा । तं स्वीकुर्वन्ति दयया ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ा चरनन में । सुरत शब्द अभ्यास कराय ॥ ३ ॥	चरणयोः वर्धित्वा प्रीतिप्रतीतिञ्च सुरतशब्दाभ्यासं कारयन्ति ॥ ४ ॥
घट में तेरे दरशन देकर। मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ ४ ॥	दर्शनं दत्वा तव घटे । मनः आत्मानञ्च अधरमारोहयन्ति ॥ ५ ॥
शब्द शब्द से मेला करके । इक दिन दें निज घर पहुँचाय ॥ ५ ॥	प्रतिशब्दं मेलं कृत्वा । स्वगृहं प्रापयन्ति एकस्मिन् दिवसे ॥ ६ ॥
जो कुछ करें करें गुरु प्यारे । जीव निबल क्या कार कमाय ॥ ६ ॥	यद् किमपि कुर्वन्ति सद्गुरु एव कुर्वन्ति । अशक्तजीवः किं अर्जितुं शक्यते ॥ ७ ॥
राधास्वामी सतगुरु प्यारे । महिमा उनकी को सके गाय ॥ ७ ॥	प्रिय राधास्वामीसद्गुरुः । कः गातुं शक्यते तेषां महिमाम् ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥ प्रेमी भागो रे जगत से	
हिंदी	संस्कृत
प्रेमी भागो रे जगत से । या सँग क्यों तू धोखा खाय ॥ टेक ॥	प्रणयिजनः कुरु पलायनं जगतः । कथं वञ्चसि अनेन सह ॥ टेक ॥
यह दुनिया काहू की नाहीं । भोग दिखा लिया जीव फँसाय ॥ १ ॥	न कस्यापि इदं जगत् । जीवमपाशयत् भोगान् दर्शयित्वा॥ १ ॥
याते छूटन कठिन बिचारो । सब ही या सँग गये लुभाय ॥ २ ॥	कठिनं ध्यायेः मुञ्चनमस्माद् । सर्वे अनेन सह मोहिताः ॥ २ ॥
बिन सतगुरु कोइ छूटे नाहीं । उनका सतसँग करो बनाय ॥ ३ ॥	कोऽपि न शक्नोति मुञ्चितुं सद्गुरुं विना । अवधानेन कुरु तेषां सत्सङ्गम् ॥ ३ ॥
बचन सुनो और चित में धारो । सूरत घट धुन संग लगाय ॥ ४ ॥	श्रृणु वचनानि धर चित्ते च। आत्मानं ध्वनिना सह घटे युङ्ग्धि ॥ ४ ॥
प्रीति प्रतीति चरन में धारो । राधास्वामी इक दिन काज बनाय ॥ ५ ॥	धर चरणयोः प्रीतिप्रतीतिञ्च । एकदिवसे कार्यं पूर्णं करिष्यन्ति राधास्वामीदाता ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥ प्रेमी मानो रे बचन को	
हिंदी	संस्कृ त
प्रेमी मानो रे बचन को । रहियो गुरु चरनन लौ लाय ॥ टेक ॥	प्रेमी अनुसर गुरुवचनम् । तल्लीनं भूत्वा गुरुचरणयोः वस ॥ टेक ॥
गुरु की महिमा कही न जावे । देवें घट का भेद लखाय ॥ १ ॥	गुरोः महिमां कथयितुं न शक्यते । घटस्य भेदं दर्शयन्ति ॥ १ ॥
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे के । चरनन में दें सुरत जुड़ाय ॥ २ ॥	पूर्णप्रभुः राधास्वामीप्रियाणां । चरणयो आत्मानं युञ्जन्ति ॥ २ ॥
नित अभ्यास करे जो घट में चरन धार रस ले त्रिपताय ॥ ३ ॥	यो घटे नित्याभ्यासं करोति। चरणधारायाः रसे तृप्तं भवति॥ ३ ॥
वही धार धुन शब्द पहिचानो । वही धार अमृत बरसाय ॥ ४ ॥	तामेव धारां शब्दध्वनि इति जानीहि । सैव धारा अमृतवृष्टिं करोति॥ ४ ॥
वही धार गह सुरत चढ़ाओ । उसी धार से रहो लिपटाय ॥ ५ ॥	तामेव धारां गृहीत्वा आत्मारोहणं कुरु। तयैव धारया सह लिप्लिम्प॥ ५ ॥
चढ़ चढ़ पहुँचो धुर दरबारा। राधास्वामी दरशन पाय ॥ ६ ॥	आरुह्यारुह्य आदिपदं प्राप। राधास्वामीदयालोः दर्शनं लभस्व ॥ ६ ॥

+

॥ शब्द ५ ॥ प्रेमी जागो रे तुम अब ही	
हिंदी	संस्कृत
प्रेमी जागो रे तुम अब ही । मोह की नींद बिसार ॥ टेक ॥	प्रेमी त्वं अधुनैव जागृहि। विस्मृत्य मोहस्य निद्राम् ॥ टेक ॥
भूल भरम में कब तक रहना । ग़फ़लत तज अब हो हुशियार ॥ १ ॥	त्रुटिभ्रमेषु कियत् कालपर्यन्तं वसे । प्रमादं त्यक्त्वा इदानीं निपुणः भव ॥ १ ॥
गुरु सतसँग से नाता जोड़ो । बिरह अनुराग सम्हार ॥ २ ॥	गुरोः सत्संगेन सम्बन्धं कुरु । विरहानुरागं च संरक्ष ॥ २ ॥
कुल मालिक राधास्वामी चरनन में। चित को जोड़ो धर कर प्यार ॥ ३ ॥	पूर्णप्रभुः राधास्वामीचरणयोः । प्रेम्णा चित्तं युङ्ग्धि ॥ ३ ॥
धुन झनकार सुनो फिर घट में प्रेम अंग ले सुरत सुधार ॥ ४ ॥	भूयः शृणु ध्वनेः झंकृतिं घटे । आत्मानं संरक्ष प्रेमाङ्गेन ॥ ४ ॥
बिमल बिलास लखे अंतर में । गुरु चरनन पै तन मन वार ॥ ५ ॥	अन्तसि विमलविलासः दृश्यते । गुरुचरणयोः तनुमनसी समर्पय ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें । पहुँचे इक दिन निज दरबार ॥ ६ ॥	राधास्वामीदाता कृपया आत्मानं आरोहयन्ति । एकस्मिन् दिने स्वसदने गच्छेत्॥ ६ ॥

॥ शब्द ६ ॥ प्रेमी रहियो रे हुशियार	
हिंदी	संस्कृत
प्रेमी रहियो रे हुशियार । माया घात बचाय ॥ टेक ॥	अयि प्रेमी चतुरः भव। मायायाः प्रहारात् रक्ष ॥ टेक ॥
यह मन माया दोउ संसारी । जीव गये इन हाथ ठगाय ॥ १ ॥	इमौ मन: माया च द्वावापि सांसारिकौ । जीवा: वञ्चिताः इमौ ॥ १ ॥
निकसन की कोई जुगत न पावें । बार बार जग में भरमाय ॥ २ ॥	न काऽऽपि युक्तिः निर्गमनस्य । भूयोभूयः भ्रमन्ति जगति ॥ २ ॥
कनक कामिनी मान बड़ाई । जाल बिछा लिया जीव फँसाय ॥ ३ ॥	कनककामिनीमानप्रशंसा: । जालं प्रसारितं जीवं अपाशयत् ॥ ३ ॥
बिन सतगुरु कोइ बचन न पावे । उनकी सरन पड़ो तुम जाय ॥ ४ ॥	सद्गुरुं विना न कोऽपि मुञ्चेत् । याहि तेषां शरणम् ॥ ४ ॥
सुरत शब्द की जुगत कमाओ । गुरु चरनन में प्रीति बढ़ाय ॥ ५ ॥	अर्ज सुरतशब्दस्य युक्तिम् । गुरुचरणयोः प्रीतिं वर्धस्व॥ ५ ॥
मेहर से घट में देहिं सहारा । पिंड अंड के पार पड़ाय ॥ ६ ॥	दयया घटे आश्रयं ददति। पिंडाण्डाभ्यां पारं प्राप्नुहि ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीनदयाल कृपानिधि । माया काल से लेहिं बचाय ॥ ७ ॥	राधास्वामीदीनदयालु: कृपानिधिः च । मायाकालाभ्यां रक्षां कुर्वन्ति॥ ७ ॥

॥ शब्द १ ॥ हेरी तुम कौन हो री	
हिंदी	संस्कृत
हेरी तुम कौन हो री । मोहि अटकावनहारी ॥ टेक ॥	अयि आलि का त्वम् । मम गत्यवरोधनं करणाय ॥ टेक ॥
मैं दर्शन को गुरु प्यारे के । जाऊँगी मानूँ न कहन तुम्हारी ॥ १ ॥	प्रियगुरो: दर्शनमहम् । गमिष्यामि न स्वीकरोमि तव कथनम् ॥ १ ॥
मेरा चित्त बसे गुरु चरनन । तुम बिरथा क्यों करो पुकारी ॥ २ ॥	मम चित्तः गुरु चरणयो: वसति । त्वं व्यर्थे कथं आह्वानं करोषि॥ २ ॥
गुरु मेरे दीन दयाल कृपाला । उनके चरन पर जाउँ बलिहारी ॥ ३ ॥	मम गुरु: दीनदयालव: कृपालवश्च सन्ति। तेषां चरणयोः समर्पयामि ॥ ३ ॥
मोसी अधम को चरन लगाया । तुमको भी वे लेहैं उबारी ॥ ४ ॥	निकृष्टं मां चरणयो अयुञ्जन् । त्वामपि उद्धरयन्ति ते ॥ ४ ॥
आओ चलो सजनी सँग मेरे । सतगुरु चरन सीस अब डारी ॥ ५ ॥	एहि सखि चलतु मम साकम् । शिरसा सद्गुरुचरणयोः समर्पयामि॥ ५ ॥
सब जीवन को यही सँदेसा । जैसे बने तैसे सरन सम्हारी ॥ ६ ॥	अयमेव सन्देश: सर्वजीवानां कृते। येन केनापि प्रकारेण शरणं याहि ॥ ६ ॥
राधास्वामी प्यारे सतगुरु मेरे । सब जीवन का काज सुधारी ॥ ७ ॥	मम सद्गुरुराधास्वामीप्रियाः । सर्वेषां जीवानां कार्यं पूर्णं कुर्वन्ति॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥ हेरी तुम कैसी हो री	
हिंदी	संस्कृत
हेरी तुम कैसी हो री । जग बिच भरमनहारी ॥ टेक ॥	अयि आलि कीदृशी त्वम् । जगदि भ्रमिता त्वम् ॥ टेक ॥
जीव कल्यान की सुद्ध न लीनी । दिन दिन मोह जाल बिस्तारी ॥ १ ॥	न स्मृतं जीवकल्याणम् । प्रतिदिनं विस्तारयसि मोहजालम् ॥ १ ॥
काम क्रोध के धक्के खाती । लोभ मोह सँग सहो दुख भारी ॥ २ ॥	सहसे कामक्रोधयो: धक्काः । लोभमोहाभ्यां सह गंभीरं दुःखं सहसे॥ २ ॥
जहँ जहँ आसा सुख की धारी । वहीं वहीं झटके छिन छिन खा री ॥ ३ ॥	यत्र यत्र धृता सुखस्याशा । तत्र तत्रैव प्रतिक्षणं झटकां सहसे॥ ३ ॥
निस दिन सब जग जाता देखो । अपनी मौत की सुद्ध बिसारी ॥ ४ ॥	पश्य प्रतिदिनं सर्वजगतः नश्वरताम् । स्व मरणं विस्मृतम् ॥ ४ ॥
जल्दी चेत करो सतसंगत । गुरु की दया ले काज सँवारी ॥ ५ ॥	शीघ्रं चैतन्यं भूत्वा कुरु सत्सङ्गतम् । गुरो: दयया कार्यं पूर्णं कुरु ॥ ५ ॥
भक्ति भाव अब मन में धारो । जीते जी कुछ काज बना री ॥ ६ ॥	अधुना मनसि धर भक्तिभावम् । अयि जीवनावधौ किंचित् कार्यं सम्पन्नं कुरु॥ ६ ॥
ले उपदेश करो अभ्यासा । मन के सबहि बिकार निकारी ॥ ७ ॥	उपदेशं गृहीत्वा अभ्यासं कुरु। अपसारिताः मनसः सर्वे विकाराः ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन धार लो मन में । मेहर से भौजल पार उतारी ॥ ८ ॥	राधास्वामीचरणौ मनसि धर। कृपया भवसागरात् तारितवन्त:॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥ हेरी तुम कैसी हो री	
हिंदी	संस्कृत
हेरी तुम कैसी हो री । जग बिच भूलनहारी ॥ टेक ॥	अयि त्वं कीदृशी असि। जगति मोहेगता ॥ टेक ॥
जनम जनम का भूला मनुआँ । भोगन में यहँ आन बँधा री ॥ १ ॥	मनः विस्मृतः जन्मजन्मन: । अयि अत्रागत्य भोगेषु बद्धोऽस्ति॥ १ ॥
जैसा संग मिला देही में । वैसी ही जग आसा धारी ॥ २ ॥	यथा संगः प्राप्त: शरीरे । तथैवाशा जगति धृता ॥ २ ॥
जतन करे और दुख सुख पावे । जनम मरन का सहे दुख भारी ॥ ३ ॥	यत्नं करोति दुःखंसुखं च प्राप्नोति । महादुःखं सहते जन्ममृत्यो : ॥ ३ ॥
बिन सतगुरु कोइ बचे न भाई । याते सतगुरु सरन सम्हारी ॥ ४ ॥	न कोऽपि विमुच्यते सदगुरुं विना । अत: सद्गुरुशरणमायाहि ॥ ४ ॥
वे दयाल तोहि जुगत लखावें । मेहर से तेरा करें छुटकारी ॥ ५ ॥	ते दयालव: त्वां युक्तिं दर्शयन्ति । कृपया तव मुक्तिं कुर्वन्ति॥ ५ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीनदयाला। सब जीवों की आस पुरा री ॥ ६ ॥	राधास्वामीसद्गुरु: दीनदयालु: । सर्वेषां जीवानां आशां पूरयन्ति ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४ ॥ हेरी तुम कौन हो री	
हिंदी	संस्कृत
हेरी तुम कौन हो री। मोहि भरमावनहारी ॥ टेक ॥	अयि आलि का त्वम् । मां भ्रमितुम् ॥ टेक ॥
बहु दिन कीना संग तुम्हारा । दिन दिन जग बिच रही फँसा री ॥ १ ॥	बहुदिवसपर्यन्तं तव सङ्गं कृतम् । अयि प्रतिदिनं जगति बद्धीभूता ॥ १ ॥
अब मोहि मिले गुरू दातारा । उन सँग अपना काज सुधारी ॥ २ ॥	अधुना मया प्राप्ताः गुरुदातारः । तेषां सह स्वकार्यं सुधारितम् ॥ २ ॥
समझ तुम्हारी मैं नहिं धारूँ । तुम अजान बहती मन लारी ॥ ३ ॥	तव बोधम् अहं न धरामि। अबोधा त्वं मनसा सह प्रवहसि ॥ ३ ॥
मैं गुरु सीख धरूँ हिरदे में । सुरत शब्द की कार कमा री ॥ ४ ॥	अहं गुरुशिक्षां हृदये धरामि । सुरतशब्दस्य अर्जनं करोमि ॥ ४ ॥
गुरु की दया ले नभ पर धाऊँ । निरखूँ जाकर गगन अटारी ॥ ५ ॥	गुरुदयया सह गगने धावामि। चन्द्रशालायां गत्वा अवलोकयामि॥ ५ ॥
सतपुर सतगुरु दर्शन करके । राधास्वामी चरन मिलत सुखियारी ॥ ६ ॥	सत्तपुरे सद्गुरोः दर्शनं कृत्वा । राधास्वामीचरणयोः मिलित्वा सुखिता॥ ६ ॥

॥ शब्द १ ॥ चेतो रे जग काम न आवे	
हिंदी	संस्कृत
चेतो रे जग काम न आवे ॥ टेक ॥	अयि भव चैतन्यं जगदिदम् अप्रयोजक: ॥ टेक ॥
यह जग चार दिनों का सुपना । कोई थिर न रहावे ॥ १ ॥	जगत् इदं स्वप्नः चतुर्दिनात्मकम् । न कोऽपि स्थिरः भूयात्॥ १ ॥
पता भेद तुम्हरे निज घर का । गुरु बिन कौन बतावे ॥ २ ॥	तव निजगृहस्य संकेतं भेदञ्च । कः दर्शयितुं क्षमः गुरुं विना ॥ २ ॥
वह निज घर है राधास्वामी धामा । शब्द पकड़ सुत जावे ॥ ३ ॥	तदस्ति निजगृहं राधास्वामीधाम:(धाम) । आत्मा(सुरत:) शब्दं गृहीत्वा गच्छति॥ ३ ॥
शब्द भेद लेकर सतगुरु से । धुन सुन अधर चढ़ावे ॥ ४ ॥	सद्गुरो: शब्दभेदं गृहीत्वा। ध्वनिं श्रुत्वा अधरमारोहयेत्॥ ४ ॥
चढ़ चढ़ पहुँचे दसवें द्वारा । बेनी में पैठ अन्हावे ॥ ५ ॥	आरुह्यारुह्य दशं द्वारं गच्छेत्। त्रिवेणीपदमुपविश्य ॥ ५ ॥
सतपुर जाय मिले सतगुरु से । अलख अगम को धावे ॥ ६ ॥	सतपुरं गत्वा सद्गुरुणा मिलेत्। अलखागमपदं धावेत्॥ ६ ॥
सतगुरु दया काज हुआ पूरा । राधास्वामी चरन समावे ॥ ७ ॥	सद्गुरुदयया कार्यं सिद्धम् । राधास्वामीचरणयोः समाविशेत्॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥ भागो रे जग से अब भागो	
हिंदी	संस्कृत
भागो रे जग से अब भागो ॥ टेक ॥	अयि कुरु पलायनं जगतः अधुना । ॥ टेक ॥
भूल भरम ग़फ़लत अब छोड़ो। जागो रे गुरु से मिल जागो ॥ १ ॥	त्रुटिं भ्रमं अनवधानञ्च त्यजाधुना । अयि जागृहि गुरुणा मिलित्वा जागृहि ॥ २ ॥
सतसँग कर ले भेद गुरू से । लागो रे चरनन में लागो ॥ २ ॥	लभस्व भेदं गुरुणा सत्संगं कृत्वा । अयि लग चरणयो: लग ॥ ३ ॥
मन इंद्री को रोक अँदर में । त्यागो रे बिषयन को त्यागो ॥ ३ ॥	युङ्ग्धि मनेन्द्रियान् अभ्यन्तरे । अयि त्यज विषयान् त्यज॥ ४ ॥
नैन कँवल में बाट लखाई । ताको रे गुरु नैना ताको ॥ ४ ॥	मार्गमदर्शयत् नयनकमलमध्ये । अयि पश्य गुरुनेत्रे पश्य ॥ ५ ॥
राधास्वामी दया संग ले अपने । सूरत शब्द अधर में राखो ॥ ५ ॥	राधास्वामीदयया सार्धम् । स्थापय सुरतशब्दमधरे ॥ ६ ॥

शब्द ३ ॥ चेतो रे घर घाट सम्हारो	
हिंदी	संस्कृत
चेतो रे घर घाट सम्हारो ॥ टेक ॥	चैतन्यं भव गृहस्य दिशां गृहाण॥ टेक ॥
या देही सँग क्यों दुख सहना । निज सुख घर की ओर सिधारो ॥ १ ॥	कथं सहेथा: दुःखं अनेन शरीरेण सह । स्व सुखगृहं प्रति गच्छ॥ १ ॥
बिन सतगुरु को भेद बतावे । उनका संग करो धर प्यारो ॥ २ ॥	सद्गुरुं विना भेदं वर्णितुं कः क्षमः। प्रेम्णा तेषां सङ्गं कुरु॥ २ ॥
करम धरम सब भरम हटा कर । गुरु का बचन हिये बिच धारो ॥ ३ ॥	कर्मधर्मो सर्वे भ्रमान् अपसारयित्वा । गुरो: वचनं हृदये धर॥ ३ ॥
शब्द भेद और जुगत चलन की । ले गुरु से घट अधर पधारो ॥ ४ ॥	शब्दभेदं चलनस्य युक्तिञ्च। गुरो: गृहीत्वा घटे अधरं गच्छ ॥ ४ ॥
घंटा संख सुनी धुन दोई। गगन माहिं गुरु रूप निहारो ॥ ५ ॥	घंटाशंखौ ध्वनी द्वौ श्रुतौ। गगनमध्ये गुरुस्वरूपं ईक्षस्व ॥ ५ ॥
निर्मल हुई सुन सारँग बानी । मुरली सुन धुन बीन सम्हारो ॥ ६ ॥	सारंगध्वनिं श्रुत्वा निर्मल: जात:। वेणुं शृणु अहितुण्डवाद्यस्य ध्वनिं संरक्ष॥ ६ ॥
सुन सुन बतियाँ अलख अगम की । राधास्वामी चरन करो दीदारो ॥ ७ ॥	श्रावं श्रावं अलखागमयोः वार्ता: । राधास्वामीचरणौ पश्य॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥ जागो रे यहँ कब लग सोना	
हिंदी	संस्कृत
जागो रे यहँ कब लग सोना ॥ टेक ॥	अयि जागृहि कियत्कालपर्यन्तं स्वपस्यसि अत्र ॥ टेक ॥
चेत करो निज घर को खोजो । बिरथा वक्त यहाँ नहिं खोना ॥ १ ॥	भव चैतन्यं स्वगृहस्य अन्वेषणं कुरु। मा जहि व्यर्थसमयम् अत्र ॥ १ ॥
मन मलीन जग में भरमावे। सतसँग कर कलमल सब धोना	मलिनमन: जगति भ्रमति। सत्सङ्गं कृत्वा कालस्य मलं प्रक्षालय॥ २ ॥
गुरु के बचन हिये में धरना । सुरत शब्द में निस दिन पोना ॥ ३ ॥	गुरो: वचनं हृदये धर। प्रतिदिनं सुरतशब्दे प्रविश॥ ३ ॥
जगत मोह अब छिन छिन तजना। भक्ती बीज हिये में बोना ॥ ४ ॥	प्रतिक्षणं जगद्मोहम् त्यज। भक्ते: बीजं हृदये वप् ॥ ४ ॥
पिंड अंड ब्रह्मंड के पारा । राधास्वामी धाम करो अब गौना ॥ ५ ॥	पिण्डाण्डब्रह्मण्डेभ्य: परे । राधास्वामीधामं(धाम) प्रति अधुना गच्छ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥ धाओ रे गुरु सरन सम्हारी	
हिंदी	संस्कृत
धाओ रे गुरु सरन सम्हारी ॥ टेक ॥	अयि धावतु गृहणातु गुरुशरणम् ॥ टेक ॥
घट में निरख बहार नवीना । सुरत शब्द मत धारी ॥ १ ॥	घटे नवीनविलासं पश्यतु। सुरतशब्दमतं धरतु॥ १ ॥
सुन सुन धुन सुत अधर चढ़ाओ । लखो जोत उजियारी ॥ २ ॥	श्रावं श्रावं ध्वनिं आरोहयतु अधरम् । ज्योते: प्रकाशं पश्यतु॥ २ ॥
बंकनाल धस त्रिकुटी पारा । सुन में जाय अक्षर धुन धारी ॥ ३ ॥	त्रिकुटीपदमतिक्रम्य बंकनालं प्रविशतु। सुन्नपदं गत्वा धृता अक्षरध्वनिः ॥ ३ ॥
भँवरगुफा मुरली धुन सुन कर । सुरत हुई सतगुरु दरबारी ॥ ४ ॥	भँवरगुहायां मुरलीध्वनिं श्रुत्वा। जाता आत्मा सद्गुरुसदनस्य सदस्यः ॥ ४ ॥
अलख अगम का मुजरा करके । राधास्वामी चरन सीस डारी ॥ ५ ॥	अलखागमपदयोः प्रस्तुतं भूत्वा । शिरसा समर्पितः राधास्वामीचरणौ ॥ ५ ॥
अचरज रूप निरख मगनानी । वाह वाह प्रीतम बलिहारी ॥ ६ ॥	तल्लीनः भूतः निरीक्ष्याद्भुत रूपम् । धन्य धन्य! प्रियौ समर्पयति ॥ ६ ॥

॥ शब्द १ ॥ मेरे प्यारे बहन और भाई	
हिंदी	संस्कृत
मेरे प्यारे बहन और भाई । तुम्हें लाज न आई । क्यों नहिं मोहि सम्हारो ॥ टेक ॥	मम प्रियभगिनीभ्राता च । नागता लज्जा युष्मान् । कथं न संरक्षेद् माम् ॥ टेक ॥
मैं भरमत रहूँ जग में निस दिन । तुम नित सतसँग करो बनाई और सतगुरु की सेवा धारो ॥ १ ॥	प्रतिदिनं भ्रमाम्यहं जगदि । नित्यं सत्संगं कुरु त्वम् । सद्गुरुसेवां च धर॥ १ ॥
क्यों नहिं मुझको बचन सुनाओ। और अपने सँग लेव लगाई । मोहि मेहर दया कर प्यारो ॥ २ ॥	कथं न श्रावयसि मां वचनम् । आत्मना सह न लागयसि च। प्रियः मां आशीर्दयां कुरु ॥ २ ॥
जो तुम एती दया बिचारो। गुरु सँग मेरा मेल मिलाई । मेरा उतरे करम का भारो ॥ ३ ॥	यो एतावत् दयां विचारये त्वम् । मम मेलं मेलये गुरुणा सह । मम कर्मणां भार अवतरिष्यति॥ ३ ॥
गुरु हैं दीनदयाल गुसाईं । जीव दया नित चित्त बसाई। मोहि अधम को देहिं सहारो ॥ ४ ॥	सद्गुरुः दीनदयालुः गोस्वामी च सन्ति । नित्यं चित्ते जीवदयां धारयन्ति। निकृष्टं मां आश्रयं ददति॥ ४ ॥
मैं अब तक रहा मनमुख भारी । भोगन में रहा अधिक फँसाई । नहिं खोजा निज घर न्यारो ॥ ५ ॥	इदानीं तावत् अहं अतिमनमुखः आसम्। भोगेषु अतिलिप्तः आसम् । निज पृथग् गृहस्यान्वेषणं न कृतम् ॥ ५ ॥
मोहि सूझ पड़ा यह अबही भाई । गुरु बिन नहिं कोई और सहाई । जग झूठा खेल पसारो ॥ ६ ॥	भ्राता इदानी अहं अवबोधितम् । गुरुं विना न कोऽपि सहायकः । जगति मिथ्या खेला प्रसरति ॥ ६ ॥
अब मैं भक्ति करूँ तन मन से । सतगुरु चरन सरन गह भाई । जाउँ भौसागर पारो ॥ ७ ॥	साम्प्रतं अहं तनुमनोभ्यां भक्तिं करोमि। भ्राता सद्गुरुचरणशरणं गृहीत्वा । भवसागरात् पारं गच्छामि॥ ७ ॥
तुम सब करो मदद मेरी मिल कर । तब प्यारे राधास्वामी चरन निहारी। तन मन से होकर न्यारो ॥ ८ ॥	सर्वे मिलित्वा मम साहाय्यं भव । तदा राधास्वामीप्रियाणां चरणौ ईक्षे। तनुमनोभ्यां पृथग्भूत्वा ॥ ८ ॥

॥ शब्द २ ॥ मेरे प्यारे बहन और भाई	
हिंदी	संस्कृत
मेरे प्यारे बहन और भाई । क्यों ग़फ़लत में रहो सोते । गुरु लेव सम्हारी ॥ टेक ॥	मम प्रियभगिनीभ्राता च । कथं प्रमादे शेरते । गुरुसंरक्षणं गृह्णातु॥ टेक ॥
या जग में नित रहना नाहीं । इक दिन तन तज जाना । टुक वहँ की वात बिचारी ॥ १ ॥	नित्यं न वसेत् जगत्यस्मिन् । तनुं त्याज्य गच्छेतेकदिने । तद् स्थलं स्तोकं ध्यायेद्॥ १ ॥
सतगुरु वहँ के भेदी कहियन । मिल उनसे लेव समझौती निज घर वे देहिं लखा री ॥ २ ॥	सद्गुरु: भेदी तद् स्थलस्य कथयेयुः। तैः सह मिलित्वा बोधं गृह्णातु। ते निजगृहं दर्शयन्ति॥ २ ॥
सतसँग उनका करो चित लाई । बचन अमोल हिये विच धारो । तोहि कर दें जग से न्यारी ॥ ३ ॥	तेषां सत्संगं चित्तेन कुरु। अमूल्यवचनानि हृदि धरतु। त्वां जगतः पृथग् कुर्युः॥ ३ ॥
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे भेद उनका दें घट में सारा। सुत शब्द की जुगती धारी ॥ ४ ॥	पूर्णस्वामी राधास्वामीप्रियाः । तेषां सम्पूर्णभेदं हृदये ददति। सुरतशब्दस्य युक्तिः धृता॥ ४ ॥
मन और सुरत अधर नित धावें । सुन सुन घट झनकारी । पावे रस आनँद भारी ॥ ५ ॥	नित्यं धावत: अधरमात्मामनश्च । श्रावं श्रावं घटे झंकृतिम् । महत् रसानन्दं लभते॥ ५ ॥
गुरु पद परस गई सतपुर में । मधुर बीन धुन सुनी सारी । पद अलख अगम निरखा री ॥ ६ ॥	स्पृश्य गुरुपदं सतपुरं गतः। अहितुण्डवाद्यस्य पूर्णमधुरध्वनिः श्रुत:। रे अलखागमपदौ अपश्यताम्॥ ६ ॥
वहाँ से चल पहुँची निज धामा । प्यारे राधास्वामी दरश लखा री उन चरनन पर बलिहारी ॥ ७ ॥	तत्रतः प्राप्त: निजधाम:(धाम) । राधास्वामीप्रियाणां दर्शनं कृतम् । तेषां चरणयोः समर्पयति ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥ मेरे प्यारे बहन और भाई	
हिंदी	संस्कृत
मेरे प्यारे बहन और भाई । या जग बिच घोर अँधेरा । तन में भी तम रहा छाई ॥ टेक ॥	मम प्रियभ्राताभगिनी च । गहनान्धकारः जगत्यस्मिन् । तमः व्याप्यते तनौऽपि ॥ टेक ॥
मन इंद्री का ज़ोर घनेरा । पाँच दूत अति कर बलवाना । जीवन का बल पेश न जाई ॥ १ ॥	बलमधिकं मनेन्द्रियाणाम् । अतिशक्तियुक्ताः पञ्चदूताः । न पर्याप्तः जीवानां बलः ॥ १ ॥
काल करम से बचना चाहो । तौ सतगुरु सँग चालो । मग में कोइ बिघन न आई ॥ २ ॥	रक्षां वाञ्छसि कालकर्माभ्याम् चेत् । चलतु सद्गुरुणा सह तर्हि । न कोऽपि विघ्नः भविष्यति मार्गे ॥ २ ॥
जनम मरन का दुख अति भारी । देही सँग दुख सुख नित सहना । याते जिव लेव बचाई ॥ ३ ॥	अति गंभीरं जन्ममृत्योः कष्टम् । नित्यं सहेत दुखंसुखं च शरीरेण सह । संरक्षेद् जीवमस्माद् ॥ ३ ॥
सतगुरु हैं सच्चे हितकारी । वे काटें सब काल कलेशा । सरन गहे ताके होयँ सहाई ॥ ४ ॥	सद्गुरुः सतहितकर्ता सन्ति। ते सर्वान् कालक्लेशान् कृन्तन्ति । यो शरणं गृह्णाति तस्यैव साहाय्याः भवन्ति॥ ४ ॥
चलो री सखी अब देर न कीजे । गुरु सतसँग में तन मन दीजे । धार हिये राधास्वामी सरनाई ॥ ५ ॥	अयि आलि चलतु मा कुरु विलम्बमधुना । गुरुसत्सङ्गे तनुमनश्च समर्पयतु। राधास्वामीशरणं हृदये धृत्वा॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥ मेरे प्यारे बहन और भाई	
हिंदी	संस्कृत
मेरे प्यारे बहन और भाई । गुरु चरन सरन गह चालो । मन माया का ज़ोर घनेरा ॥ टेक ॥	मम प्रियभ्राताभगिनी च । गुरुचरणशरणं गृहीत्वा चलतु। गभीर: मनमाययोः बलम् ॥ टेक ॥
यह मन मूरख चेते नाहीं भोगन में रहे सदा अधीना । दुनिया का न छोड़े बखेड़ा ॥ १ ॥	इदं मूर्ख: मनः न भवति चैतन्यः । विषयवासनानां सदाधीन:। जागतिक प्रपञ्चान् न त्यजति॥ १ ॥
बिन गुरु सतगुरु कौन चितावे । वे देहिं दया का सहारा । तब यह छूटे सबेरा ॥ २ ॥	गुरुं सद्गुरुं च विना कः चैतन्यं कर्तुं क्षमः । ते दयायाः आश्रयं ददति। तदायं शीघ्रं मुञ्चति ॥ २ ॥
अपने बल से छूटे नाहीं । खोजो सतगुरु दयाल गुसाईं । मत कर तू बहुत अबेरा ॥ ३ ॥	स्वबलाद् मुञ्चितुं न क्षमः। सद्गुरुदयालुगोस्वामिनम् अन्वेषयतु। मा कुरु अतिविलम्बं त्वम्॥ ३ ॥
भाग जगे जिन सतगुरु पाये । सुरत शब्द की जुगत कमाये । घट में निज पद को हेरा ॥ ४ ॥	स: सौभाग्यशाली येन सद्गुरु: प्राप्ताः। सुरतशब्दस्य युक्ति अर्जिता:। घटे निजपदस्य अनुसन्धानं कृतम्॥ ४ ॥
सुरत चढ़ी पहुँची दस द्वारे राधास्वामी चरन धुर धाम निहारे। हुआ सहजहि आज निबेड़ा ॥ ५ ॥	आत्मा आरोहित: दशमद्वारं गतम् । राधास्वामीचरणौ आदिधामे(धाम्नि) अवलोकितौ । अद्य शीघ्रं मुक्तिः जाता॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥ मेरे प्यारे बहन और भाई	
हिंदी	संस्कृत
मेरे प्यारे बहन और भाई । जग मोह बिसारो । सतगुरु से नेह लगा लो ॥ टेक ॥	मम प्रियभ्राताभगिनी च । जगद् मोहं त्यज। सद्गुरुणा सह स्नेहं कुर्या:॥ टेक ॥
यह जग तुम्हरा संगी नाहीं । गुरु का सतसँग धारो । भूल और भरम मिटा लो ॥ १ ॥	जगदिदं तव सहगामी नास्ति । गुरुसत्सङ्गं धरे:। त्रुटिभ्रमश्च नश्ये: ॥ १ ॥
दया लेव तुम उनकी हर दम । सुरत शब्द की जुगत सम्हालो । मन और सुरत जगा लो ॥ २ ॥	प्रतिपलं तेषां दयां गृह्णीया:। सुरतशब्दस्य युक्तिं संरक्षे:। मन: आत्मानंञ्च जागृयाताम्॥ २ ॥
भोग बासना चित से छोड़ो। मन और सुत निज घट में जोड़ो। बिघन और बिकार निकालो ॥ ३ ॥	विषयवासना: चित्तात् त्यज। मन: आत्मानञ्च निजघटे युञ्ज्याताम्। विघ्नं विकारं च निष्कासये: ॥ ३ ॥
जस जस आनँद घट में पावे । प्रीति प्रतीति चरन में बाढ़े। प्रेम रँग सुरत रँगा लो ॥ ४ ॥	यथा यथा आनन्दं घटे आप्नोषि । प्रीतिप्रतीतिश्च चरणयोः वर्धेथे। आत्मानं प्रेम्णा रङ्गेन रञ्जे:॥ ४ ॥
चरन सरन राधास्वामी हिये धर । धुन सँग सुरत चढ़ाओ अधर घर । मेहर से आजहि काज बना लो ॥५॥	राधास्वामीचरणशरणं हृदये धृत्वा। आत्मानं ध्वनिना सह अधरगृहं आरोहये:। अद्यैव दयया कार्यं पूर्णं कुर्या:॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥ मेरे प्यारे बहन और भाई	
हिंदी	संस्कृत
मेरे प्यारे बहन और भाई । गुरु सतसँग का रस लीजे । अस औसर फिर न मिलेगा ॥ टेक ॥	मम प्रियभ्राता भगिनी च । गुरुसत्संगस्यानन्दं गृह्णीयात। ईदृग् अवसर: न प्राप्स्यति॥ टेक ॥
बिन सतसंग समझ नहिं आवे । जगत भोग सब झूठे । कोई सँग न न चलेगा ॥ १ ॥	सत्संगं विना न बोधं भवति । सर्वे जगद् विषया: मिथ्या:। न कोऽपि सहगामी भविष्यति॥ १ ॥
गुरु सँग प्रीति करे सोई बाचे । सुरत शब्द का मारग ताके । वही सतसँग में रलेगा ॥ २ ॥	यो गुरुणा सह प्रीतिं करोति सैव सुरक्षितः। सुरतशब्दस्य मार्गं पश्यति। सैव सत्सङ्गे मिलिष्यति॥ २ ॥
ध्यान लाय गुरु प्रीति बढ़ावे । सुन सुन धुन सुत अधर चढ़ावे । वाही का कर्म जलेगा ॥ ३ ॥	ध्यानेन गुरुप्रीतिं वर्धयेत् । श्रावं श्रावं ध्वनिं आत्मानं अधरम् आरोहयेत्। तस्यैव कर्म ज्वलिष्यति॥ ३ ॥
अनुभव जागे तो सब कुछ सूझे गुरु का बल ले काल से जुझे । वहि सज्जन माया को दलेगा ॥ ४ ॥	अन्त: ज्ञानं भवेत् चेतर्हि सर्वं बोधयिष्यति । गुरुणा बलेन कालेन युद्धयिष्यति। सैव सज्जन: मायां पराजिष्यति॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सरन जिन धारी । वहि जन पहुँचे निज दरबारी । अचरज दरशन पाय खिलेगा ॥ ५ ॥	येन राधास्वामीचरणशरणं गृहीतम्। सैव निजसदनं गमिष्यति। अद्भुतदर्शनं प्राप्य प्रसन्नं भविष्यति॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥ मेरे प्यारे बहन और भाई	
हिंदी	संस्कृत
मेरे प्यारे बहन और भाई । ज़रा सोचो समझो मन में । गुरु लो पहिचानी ॥ टेक ॥	मम प्रियभ्राताभगिनी च । किञ्चित् चिन्तत बोधत मनसि । जानीत गुरुम् ॥ टेक ॥
सतसँग कर उन बचन बिचारो । मन में उनका असर निहारो । अस परखो साध निशानी ॥ १ ॥	सत्सङ्गं कृत्वा तेषां वचनं विचारयत । तेषां प्रभावं मनसि ईक्षध्वम्। एवं साधपुरुषस्य संकेतं जानीत ॥ १ ॥
कोइ दिन सँग कर देखो रहनी । सत मत सँग परखो उन गहनी । तब सहज सहज मन मानी ॥ २ ॥	कश्चित् कालस्य सानिध्येन आचारव्यवहारं पश्यत। तेषां भावविचारांश्च सम्यक् मत्या ईक्षध्वम्। तदा मन: सहज सहजं स्वीकरिष्यति॥ २ ॥
प्रीति सहित करो शब्द अभ्यासा ।| घट में देखो बिमल बिलासा । तब सतगुरु की दया नज़र आनी ॥ ३ ॥	प्रेम्णा शब्दाभ्यासम् कुरुत । घटे विमलविलासं पश्यत। तदा सद्गुरो: दया ध्याने आगमिष्यति॥ ३ ॥
गुरु हैं समरथ दीन दयाला । सरन पड़े को लेहिं सम्हाला । तेरी छिन छिन रक्षा ठानी ॥ ४ ॥	सद्गुरु: दीनदयालु: सन्ति। शरणागतं संरक्षन्ति। प्रतिपलं तव रक्षां कुर्वन्ति॥ ४ ॥
अस परचे जो नित प्रति देखे । अंतर बाहर दया नित पेखे । सो मन में परतीत समानी ॥ ५ ॥	यो पश्यति ईदृश आन्तरिकानुभवा: नित्यम् । अन्तर्बहिश्च नित्यदयाम् ईक्षते। तस्यैव मनसि प्रतीतिः समाविशति॥ ५ ॥
जो धारे अस दृढ परतीती । दिन दिन जागे हिये में प्रीती । वह सतगुरु की महिमा जानी ॥ ६ ॥	यो एवं दृढ़ं प्रतीतिं धरति। प्रतिदिनं हृदये प्रीति: जागर्ति। सैव सद्गुरो: महिमां जानाति॥ ६ ॥
दया करें गुरु सुरत चढ़ावें । घट का भेद सबहि दरसावें । इक दिन राधास्वामी चरन समानी ॥ ७ ॥	सद्गुरु: दयां कुर्वन्ति आत्मानम् आरोहयन्ति। घटस्य सर्वं भेदं दर्शयन्ति। एकस्मिन् दिने राधास्वामीचरणौ समाविशति॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥ मेरी प्यारी सहेली हो । क्यों जनम गँवाओ हो	
हिंदी	संस्कृत
मेरी प्यारी सहेली हो । क्यों जनम गँवाओ हो ॥ टेक ॥	अयि मम प्रियसखि । जन्म कथं व्यर्थं करोषि ॥ टेक ॥
दर्शन कर मेरे गुरु प्यारे का । निज भाग जगाओ हो ॥ १ ॥	मम प्रियगुरो:दर्शनंकुरु । निजभाग्यम् जागृहि॥ १ ॥
आज काज करो जीव अपने का । नहिं जमपुर जाय पछताओ हो ॥ २ ॥	अद्य स्वजीवस्य कार्यं कुरु। अन्यथा यमपुरं गत्वा पश्चात्तापं करिष्यसि॥ २ ॥
छोड़ो अब ही लाज जगत की । गुरु सतसँग में आओ हो ॥ ३ ॥	सम्प्रति जगद् लज्जाम् त्यज। अयि गुरुसत्संगे आयाहि॥ ३ ॥
दर्शन कर उमँगे हिये प्यारा । बचन सुनत जग भाव भुलाओ हो ॥ ४ ॥	दर्शनं कृत्वा हृद्यहृदयः उल्लसति। अयि वचनं श्रुत्वा जगद् भावान् विस्मर॥ ४ ॥
निर्मल दृष्टि से देखो लीला । दम दम उमँग बढ़ाओ हो ॥ ५ ॥	निर्मलदृष्ट्या लीलां पश्य। प्रतिक्षणम् उत्साहं वर्धय॥ ५ ॥
भेद पाय मन सुरत समेटो । घट अधर चढ़ाओ हो ॥ ६ ॥	भेदं प्राप्य मन आत्मानं चैकाग्रं कुरु। अयि घटमधरम् आरोहय॥ ६ ॥
बिमल बिलास लखो हिये अंतर । तब निज भाग सराहो हो ॥ ७ ॥	हृदन्तसि विमलविलासं पश्य। अयि तदा निजभाग्यं प्रशंस॥ ७ ॥
राधास्वामी दया परख फिर घट में। नया नया प्रेम जगाओ हो ॥ ८ ॥	पुनः घटे राधास्वामीदयां अवलोक्य । अयि नवनवप्रेम जागृहि ॥ ८ ॥
बिन गुरु सरन होय जीव अकाजा । कुटॅंब को भी सँग लाओ हो ॥ ९ ॥	गुरुशरणं विना जीवस्यहानिः भवति। अयिकुटुम्बेन सार्धम् आयाहि॥ ९ ॥
राधास्वामी दयाल की दया अपारा। सब को पार लगाओ हो ॥१०॥	अपारदया राधास्वामीदयालोः । अयि सर्वान् पारं कुर्युः ॥१०॥
ऐसी महिमा राधास्वामी निरखत । हरष हरष गुन गाओ हो ॥११॥	राधास्वामीदयालो ईदृशी महिमां निरीक्ष्य। अयि हर्षितं भूत्वा गुणान् गाय ॥११॥

॥ शब्द ९॥ मेरी प्यारी सहेली हो। दया कर कसर जता दो री	
हिंदी	संस्कृत
मेरी प्यारी सहेली हो । दया कर कसर जता दो री ॥ टेक ॥	अयि मम प्रियसखि । अयि दयां कृत्वा दोषस्य बोधं कारय ॥ टेक ॥
तुम प्यारी प्यारे साँचे गुरु की। मोहि सँग में मिला लो री ॥ १ ॥	प्रियः ऋतञ्च गुरो: प्रिया त्वम् । अयि माम् आत्मना सह मेलय॥ १ ॥
घट का भेद और राह चलन की । गुरु महिमा सुना दो री ॥ २ ॥	भेदं घटस्य गतिगमनस्य च । अयि गुरो: महिमां श्रावय॥ २ ॥
प्रेम रंग गुरु नित बरसावें । मेरी सुरत रँगा दो री ॥ ३ ॥	गुरु: नित्यं प्रेमरङ्गं वर्षयन्ति। अयि ममात्मानं रञ्जय॥ ३ ॥
मन इंद्री के बिकार हटा कर । गुरु चरन लगा दो री ॥ ४ ॥	मनेन्द्रियाणाञ्च विकारान् अपसृत्य। अयि गुरुचरणाभ्यां युङ्ग्धि॥ ४ ॥
दीन होय गुरु चरनन आई । मोपै मेहर करा दो री ॥ ५ ॥	गुरुचरणौ दीनं भूत्वा आगता। आशीर्वृष्टिं मां कारय॥ ५ ॥
अपना जान सम्हालो मुझको । घट प्रेम जगा दो री ॥ ६ ॥	मां स्वकीयं ज्ञात्वा संरक्षतु। अयि घटे प्रेम जागरय॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन सरन गह बैठूँ। ऐसी दया करा दो री ॥ ७ ॥	राधास्वामीचरणशरणं गृहीत्वा उपविशामि। अयि ईदृशीदयां कारय॥ ७ ॥
औगुन पर मेरे दृष्टि न कीजे । मेरा आजहि काज बना दो री ॥ ८ ॥	ममावगुणेषु ध्यानं मा कुर्युः। अयि अद्यैव मम कार्यं पूर्णं कुर्युः ॥ ८ ॥
दया छिमा तुम हिरदे बसती । मेहर से खोट हटा दो री ॥ ९ ॥	दयाक्षमा च तव हृदये वसति। अयि दयया दोषम् अपसारयन्तु॥ ९ ॥
दीन अधीन पड़ी गुरु द्वारे काल से खूँट छुड़ा दो री ॥ १० ॥	दीनाधीना च गुरुद्वारे पतिता। अयि कालस्य बन्धनात् मोचयन्तु॥ १० ॥
सुरत चढ़ाय अधर में धाऊँ । राधास्वामी दरस दिखा दो री ॥११॥	आरुह्यात्मानं अधरं धावामि । अयि राधास्वामीदयालु: स्वरूपं दर्शयन्तु॥११॥

॥ भाग ७ ॥ ॥ शब्द १ ॥ तुम जीते सुरत चढ़ाओ । मुए पर क्या करिहौ ॥	
हिंदी	संस्कृत
तुम जीते सुरत चढ़ाओ । मुए पर क्या करिहौ ॥ १ ॥	त्वम् जीवनावधौ आत्मानम् आरोहये:। किं करिष्यसि मरणानन्तरम् ॥ १ ॥
सुन सुन शब्द चढ़ो घट अंतर । गुनना छोड़ रहो ॥ २ ॥	श्रावं श्रावं शब्दं घटान्तसि आरोह। अपकृष्टोत्कृष्टविचारान् त्यजे:॥ २ ॥
चढ़ चढ़ जाओ त्रिकुटी पारा। सतपुर जाय बसो ॥ ३ ॥	आरुह्य आरुह्य त्रिकुटी पदात् पारं याहि। वस सतपुरं गत्वा ॥ ३ ॥
राधास्वामी का दर्शन पाकर । चरनन लिपट रहो ॥ ४ ॥	राधास्वामीदयालो: दर्शनं प्राप्य। चरणयो: लिप्लिम्प॥ ४ ॥

॥ भाग ७ ॥ शब्द २ ॥ तुम अब ही गुरु सँग धाओ	
हिंदी	संस्कृत
तुम अब ही गुरु सँग धाओ । बहुर पछताना पड़े ॥ १ ॥	अधुनैव त्वं गुरुणा सह धाव। पुन: करिष्यसि पश्चात्तापमन्यथा ॥ १ ॥
सतसँग कर गुरु सेवा धारो । मन में उमँग भरे ॥ २ ॥	सत्सङ्गं कृत्वा गुरुसेवां धार। मन: उल्लासेन पूर्णं भवेत्॥ २ ॥
शब्द भेद ले करो अभ्यासा । सूरत अधर चढ़े ॥ ३ ॥	शब्दभेदम् प्राप्य अभ्यासंकुरु। आत्माधरम् आरोहयेत् ॥ ३ ॥
राधास्वामी दयाल दया करें अपनी। तौ सब काज सरे ॥ ४ ॥	राधास्वामीदयालव: निजदयां कुर्वन्ति । सिद्धं भवेयुः सर्वे कार्याणि तदा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥ तुम अब ही मन को माँजो	
हिंदी	संस्कृत
तुम अब ही मन को माँजो । बहुर क्या काज सरे ॥ १ ॥	अधुनैव त्वं मार्जय मनः । किं कार्यं पूर्णं भविष्यति अनन्तरम् ॥ १ ॥
सतसँग करो वचन उर धारो । नित नित मनन करे ॥ २ ॥	कुरु सत्सङ्गं वचनं हृदये धार। नित्यं प्रति मननं कुर्यात्॥ २ ॥
सार धार फिर करे कमाई । सूरत गगन भरे ॥ ३ ॥	सारं गृहीत्वा कुर्यादर्जनं तदा। आत्मा गगने पूरयेत्॥ ३ ॥
तब मन निश्चल चित होय निर्मल । राधास्वामी ध्यान धरे ॥ ४ ॥	तदा मनः निश्चलः चित्तश्च निर्मलः भवेताम् । राधास्वामीदयालुः ध्यानं कुर्यात्॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥ तुम अब ही सतसँग धारो	
हिंदी	संस्कृत
तुम अब ही सतसँग धारो । बहुर नहिं औसर मिले ॥ १ ॥	त्वं अधुनैव सत्सङ्गं धर। पुनः न आप्नुयाः अवसरम् ॥ १ ॥
सतगुरु से करो प्रीति घनेरी । सूरत अधर चले॥ २ ॥	सद्गुरुणा सह दृढ़प्रीतिं कुरु। आत्मा अधरम् चले:॥ २ ॥
चढ़ चढ़ पहुँचे सहसकँवल में। जगमग जोत बले ॥ ३ ॥	आरुह्यारुह्य सहस्रदलपदम् लभेयाः। प्रकाशमय: ज्योति:॥ ३ ॥
वहँ से पहुँचे सतगुरु देशा । राधास्वामी चरन रले ॥ ४ ॥	तत्रतः गच्छे सद्गुरुदेशम् । राधास्वामीचरणौ लयलीनं भवेः॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥ तुम अब ही गुरु से मिलो	
हिंदी	संस्कृत
तुम अब ही गुरु से मिलो। जगत की लज्या तजो ॥ १ ॥	त्वं सम्प्रत्येव गुरुणा मिलेः। जगद् लज्जां त्यजे:॥ १ ॥
सतसँग उनका करो प्रेम से। जग से आज भजो ॥ २ ॥	तेषां सत्संगं प्रेम्णा कुर्या:। जगतः अद्य धावेः॥ २ ॥
दया लेव उनकी तुम हर दम । सूरत चरन सजो ॥ ३ ॥	तेषां दयां प्रतिपलं गृह्याः। ध्यानेन आत्मानं चरणयोः एकाग्रं कुर्याः॥ ३ ॥
बिरह अंग ले अधर चढ़ाओ । शब्द शब्द सँग आज गजो ॥४॥	विरहाङ्गेन अधरमारोहयेत्। अद्य प्रसन्नं भवेः प्रतिशब्दं सह ॥ ४ ॥
मेहर दया सतगुरु की लेकर । राधास्वामी चरनन जाय रजो ॥ ५॥	सद्गुरोः आशीर्दयां प्राप्य। राधास्वामीचरणयोः तृप्तं भवेः॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥ तुम अब ही बिरह जगाय 9-8-22	
हिंदी	संस्कृत
तुम अब ही बिरह जगाय । शब्द में सुरत धरो ॥ १ ॥	त्वम् अधुनैव विरहं जागरयित्वा । शब्दम् आत्मानं धरे॥ १ ॥
सतगुरु का सतसँग कर हित से । दीन होय उन चरन पड़ो ॥ २ ॥	सद्गुरोः सत्सङ्गं प्रेम्णा कुरु। दीनं भूत्वा तेषां चरणयोः पत॥ २ ॥
मेहर से जब वे भेद सुनावें । घट में नित अभ्यास करो ॥ ३ ॥	यदा ते कृपया भेदं श्रावयेयुः। कुरु घटे नित्याभ्यासम् ॥ ३ ॥
भजन करो और धारो ध्याना । काल करम से नाहिं डरो ॥ ४ ॥	कुरु भजनं धर ध्यानञ्च । मा बिभीहि कालकर्माभ्याम् च ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सरन हिये दृढ़ कर । भौसागर से आज तरो ॥ ५ ॥	राधास्वामीचरणशरणं हृदये दृढं कृत्वा। भवसागरात् अद्य पारं गच्छ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥ तुम अब ही गुरु सँग रलो यह	
हिंदी	संस्कृत
तुम अब ही गुरु सँग रलो । हिये में प्रेम भरो ॥ १ ॥	त्वम् अधुनैव गुरुणा सह मिले:। हृदये प्रेम भरे:॥ १ ॥
अब नहिं मिलो बहुर कब मिलिहो । चौरासी में जाय पड़ो ॥ २ ॥	न मिले: अधुना कदा मिलेः पुनः। चतुरशीत्यां पतेः॥ २ ॥
याते चेतो समझो अब ही । सतसँग कर गुरु सरन गहो ॥ ३ ॥	भव चैतन्यं गृहाण बोधमधुनैव । सत्संगं कृत्वा गुरुशरणं गृहाण॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर निज नामा । गुरु मूरत का ध्यान धरो ॥ ४ ॥	स्मर निजनाम राधास्वामीनाम । गुरुस्वरूपस्य ध्यानं धर ॥ ४ ॥
शब्द धार घट हरदम जारी । चित से उसको चेत सुनो ॥ ५ ॥	निरन्तरं शब्दस्यधारा घटे प्रवहति। चैतन्यं भूत्वा तां चित्तेन श्रृणु॥ ५ ॥
राधास्वामी मेहर से पार लगावें । अस भौसागर सहज तरो ॥ ६ ॥	राधास्वामीदयया पारं कुर्वन्ति। इत्थं सहजेन भवसागरात् तर॥ ६ ॥

॥ शब्द १ ॥ हे मन रसिया काया के बसिया । 11-8-22	
हिंदी	संस्कृत
हे मन रसिया काया के बसिया । छोड़ो हमारी डगरिया हो ॥ टेक ॥	अयि रसिक: कायावासि मनः । अस्माकम् मार्गं त्यज॥ टेक ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । बसूँ न तोरी नगरिया हो ॥ १ ॥	अहं प्रिया राधास्वामीप्रियाणाम् । अयि तव नगर्याम् त्यज॥ १ ॥
सतगुरु मोहि निज भेद बताया । जाओ घर झाँक झँझरिया हो ॥ २ ॥	सद्गुरुणा मां निजभेदं अवदन्। निगूढ़ं पश्य झँझरीस्थलं गच्छ गृहम् ॥ २ ॥
शब्द डोर निज घर से लागी । चलो चढ़ पकड़ रसरिया हो ॥ ३ ॥	शब्दस्य तन्तुः निजगृहेण संलग्नः। अयि चल आरोह गृहीत्वा रज्जुम् ॥ ३ ॥
मारग में अटकूँ नहिं कबहीं । माया की हाट बजरिया हो ॥ ४ ॥	मार्गे कदापि न भवेत् गत्यवरोधः। अयि मायायाः हट्टं पण्यवीथि: ॥ ४ ॥
गुरु बल काल करम सिर फोड़ूँ । माया की फाड़ूँ चदरिया हो ॥ ५ ॥	गुरुबलेन् कालकर्मणो: उत्तमाङ्गं स्फोटयामि। मायाया: प्रावारं भिनद्मि॥ ५ ॥
जोत रूप लख त्रिकुटी धाऊँ । चंदा की निरख उजरिया हो ॥ ६ ॥	त्रिकुटीपदं धावामि ज्योतिरूपं दृष्ट्वा। अयि इन्दुज्योत्स्नाम् अवलोक्य॥ ६ ॥
हंसन संग मानसर न्हाऊँ । भर लूँ अमी गगरिया हो ॥ ७ ॥	हंसैः साकं मानसरसि स्नामि। अयि अमृतकलशं भरामि॥ ७ ॥
भँवरगुफा भेटूँ सोहं से । जहँ बाजे मधुर बँसुरिया हो ॥ ८ ॥	भँवरगुहायां सोहं ध्वनिना सह मिलेयम्। अयि यत्र मधुरमुरली नदति॥ ८ ॥
ठुमक ठुमक पग धरूँ अधर में सुन धुन बीन अमरिया हो ॥९॥	विलासगत्या अधरे पदं धरामि। अयि श्रावं श्रावं अमरपदस्य अहितुण्डवाद्यम् ॥९॥
राधास्वामी चरन जाय फिर परसूँ। मिला पद अमर अजरिया हो ॥१०॥	अयि पुन: गत्वा राधास्वामीचरणौ स्पर्शामि । अयि अमराजरपदम् अमिलत्॥१०॥

॥ शब्द २ ॥ हे मन भोगी सदा के रोगी	
हिंदी	संस्कृत
हे मन भोगी सदा के रोगी। चलो घर हमरे साथा हो ॥ टेक ॥	अयि विषयासक्तं सदातः रुग्णं मनः । अयि अस्माभिः सह गृहं चल॥ १ ॥
जनम जनम तुम दुख सुख भोगो । काया संग बँधाता हो ॥ १ ॥	प्रतिजन्म दुःखं च सुखं च भुनक्षि। अयि कायया सह बधते ॥ २ ॥
अब के चेत करो सतसंगा । गुरु संग जोड़ो नाता हो ॥ २ ॥	इदानीं कुरु सत्संगं चैतन्यीभूय । अयि सम्बन्धं गुरुणा सह युङ्ग्धि॥ ३ ॥
वे हैं समरथ बंदीछोड़ा । मेहर से घर पहुँचाता हो ॥ ३ ॥	ते समर्थाः बन्धनमोचका:च सन्ति। अयि कृपया प्रापयन्ति गृहम् ॥ ४ ॥
जगत भोग की आसा छोड़ो। गुरु चरनन मन राता हो ॥ ४ ॥	त्यज जगद् विषयानाम् आशाम् । अयि मनः गुरुचरणयोः लीनं भवति॥ ५ ॥
शब्द कमाई करो उमँग से । सूरत अधर चढ़ाता हो ॥ ५ ॥	उल्लासेन शब्दस्यार्जनं कुरु। अयि आत्मानं अधरे आरोहति॥ ६ ॥
गगन जाय सूरत अलगानी । मन वहँ राज कमाता हो ॥ ६ ॥	पृथग्जातः आत्मा प्राप्य गगनम् । अयि मन: तत्र राज्यं अर्जति॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर से आगे चाली । लखा निज धाम सुहाता हो ॥ ७ ॥	राधास्वामीकृपया अग्रे गता। अयि शोभामयः निजधामः(धाम) अपश्यत्॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥ हे मन मानी सद अज्ञानी	
हिंदी	संस्कृत
हे मन मानी सद अज्ञानी । क्यों दुख सुख यहँ सहना हो ॥ टेक ॥	हे अहंकारी सदातः अज्ञानी मनः । अयि दुःखसुखञ्चात्र कथं मर्षसि॥ टेक ॥
सुरत पड़ी बस तेरे तन में। निज घर बार भुलाना हो ॥ १ ॥	अयि तनौ आत्मा तव वशे। अयि स्व कुटुम्बं विस्मरसि॥ १ ॥
इंद्री संग बहिरमुख बरते। भोगन माहिं लुभाना हो ॥ २ ॥	जागतिकपदार्थेषु इन्द्रियैः सह व्यवहरसि। अयि विषयेषु रोचसे॥ २ ॥
धन सम्पति सँग रहे मदमाता । कुल परिबार बँधाना हो ॥ ३ ॥	धनसम्पत्या सह उन्मत्तः भवति। अयि कुलपरिवारं बंधयसि॥ ३ ॥
परमारथ की सार न जाने । जगत सत्त कर जाना हो ॥ ४ ॥	परमार्थस्य सारं न जानासि। अयि जगत् सत्यं जानासि ॥ ४ ॥
अब तो चेत ज़रा तू हे मन । खोजो सतगुरु स्याना हो ॥ ५ ॥	हे मन इदानीं भव चैतन्यं किञ्चित् मात्रम् । अयि अन्वेषय निपुणसद्गुरुम् ॥ ५ ॥
सेवा कर सतसँग कर उनका । शब्द में सुरत लगाना हो ॥ ६ ॥	कुरु सेवां कुरु सत्सङ्गञ्च तेषाम् । अयि आत्मानम् शब्दे युङ्ग्धि॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से देवें तुझको । चरनन माहिं ठिकाना हो ॥ ७ ॥	राधास्वामीदाता दास्यन्ति त्वां कृपया । अयि चरणयोः स्थानम् ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥ मन के घाट बैठ सुत	
हिंदी	संस्कृत
मन के घाट बैठ सुत घर की सुद्ध बिसारी । इंद्रियन सँग भरमाय फँसी अब भोगन लारी ॥ पाँच दूत मिल खैंचते याहि अपनी अपनी ओर । बिन सतगुरु अस कौन है। जो देहि ठिकाना ठौर ॥ खोज सतगुरु का करो प्यारी ॥ १ ॥	मनस: स्थानं उपविश्यात्मा गृहस्य स्मरणं विस्मृतः। इन्द्रियै: सह भ्रमति इदानीं बद्धीभूतः विषयावासनाभिः सह ॥ पञ्चदूता: मिलित्वा आकर्षन्ति स्वकीय पक्षे इमाम् । क: सद्गुरुं विना अस्माकम् यः आश्रयं दास्यते॥ प्रिया कुरु सद्गुरोः अन्वेषणम्॥ १ ॥
पंडित भेष शेख और मुल्ला देखे सब संसारी । इनका संग करे जो कोई जाय न भौजल पारी ॥ यह सब अटके मान में और लोभ संग भरमाय । काल करम के जाल में यह फिर फिर भौ अटकाय ॥ साध सँग ले गुरु ज्ञान बिचारी ॥ २ ॥	पण्डितवेशशेखमौलाविः च सर्वे सांसारिकाः दृष्टाः। यः कोऽपि एषां सङ्गं करोति भवसागरात् पारं गन्तुं न क्षमः॥ इमे सर्वे अहंकारे संसक्ता: लोभेन सह भ्रमिताः च। कालकर्मणोः पाशे भूयः भूयोऽयं भवे विरामयति ॥ साधपुरुषेण सार्धं गुरु: ज्ञानं विचारितम् ॥ २ ॥
सतसँग जल अशनान कर ले तन मन आज पखारी । गुरु चरनन परतीत लाय नित आरत सेवा धारी ॥ करम धरम सब त्याग कर दे भोगन को विसराय। शब्द जोग अभ्यास कर ले सूरत अधर चढ़ाय ॥ प्रेम रँग भीज रहे सारी ॥ ३ ॥	सत्सङ्गस्य जलेन स्नानं कुरु प्रक्षालयाद्य तनुमनश्च । गुरुचरणौ नित्यं प्रतीतिं धार्य आरतिसेवा च धृते॥ सर्वे कर्मधर्माश्च परित्यज्य विषयवासनाः विस्मर। शब्दयोगस्य अभ्यासं कुरु आत्मानमधरम् आरोहय ॥ प्रेम्णः रङ्गे पूर्णत: क्लिन्ना: भवन्ति॥ ३ ॥
सुन सुन अचरज शब्द हुई सूरत मतवारी ।	श्रावं श्रावमद्भुतं शब्दम् उन्मत्तः जात: आत्मा ।

सतगुरु दीनदयाल लिया मोहि आप सम्हारी ॥ अनहद बाजे बज रहे और चहुँ दिस धुन झनकार | सुरत मगन होय थिर खड़ी और मनुआँ अति सरशार || दया से मिला औसर भारी ॥ ४ ॥	सद्गुरुदीनदयालु: स्वयं माम् संरक्षितं ॥ अनाहतवाद्यानि नदन्ति ध्वनेः झंकृतिश्च चतुर्दिक्षु । आत्मा मग्नीभूय अचलः स्थित: अत्युन्मत्तं मनश्च ॥ दयया महदवसरः प्राप्तः॥ ४ ॥
राधास्वामी हुए परसन्न सुरत मेरी दीन सिंगारी । मन इंद्री के घाट से किया (मोहि) छिन में न्यारी ॥ हरष हरष निरखत रहूँ प्यारे राधास्वामी चरन बिलास। राधास्वामी दरशन नित चहूँ मेरे और न दूजी आस ॥ दया पर तन मन धन वारी ॥ ५ ॥	राधास्वामीदयालु: प्रसन्नाः जाता: ममात्मानं सज्जितवन्तः। मनेन्द्रियेभ्यः स्थानात् पृथग् कृतं क्षणे माम् ॥ अति हर्षितं भूत्वा अवलोकयामि प्रियराधास्वामीदयालूनां चरणविलासम् । राधास्वामीदर्शनं नित्यं वाञ्छामि नान्या: काऽपि आशा मम ॥ समर्पयामि तनुमनधनश्च दयायाम् ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥ गुरु चरनन लौलीन	
हिंदी	संस्कृत
गुरु चरनन लौलीन सुरत जग किरत हटाई । मन इंद्रियन सँग प्यार और ब्यौहार घटाई ॥ सतसँग प्यारा लागता और सुरत शब्द अभ्यास । सतगुरु सेवा धार कर हिये होवत नित्त हुलास ॥ रीति गुरु भक्ति लगी प्यारी ॥ १ ॥	गुरुचरणौ लयलीनः आत्मना अपसारित: जगद् कार्यवाही । मनेन्द्रियै: सह प्रीति: व्यवहारस्य च अपक्षयं कृतम्॥ प्रिय: प्रतीयये सत्सङ्गः सुरतशब्दअभ्यासश्च । सद्गुरुसेवां धार्य नित्यं भवति उल्लासं हृदये ॥ प्रतीता प्रिया गुरुभक्तिरीतिः ॥१॥
गुरु आरत बिधि धार लिया सब साज बनाई। गुरु सोभा अद्भुत बनी कुछ कहा न जाई ॥ प्रेम मगन सब हो रहे और चहुँ दिस आनँद छाय | गुरु प्यारे का दरस कर सब लीन्हा भाग जगाय ॥ गाऊँ कस महिमा गुरु भारी ॥ २ ॥	गुरो आरतेः विधिं धार्य सर्वसज्जोपकरणानि निर्मितानि। अद्भुता गुरुशोभा रचिता किमपि वक्तुं न शक्यते ॥ सर्वे प्रेममग्नाः भवन्ति आनन्दः चतुर्दिक्षु व्याप्यते च । प्रिय गुरोः दर्शनं कृत्वा सर्वे स्वभाग्यानि अजागरुः॥ महती गुरुमहिमाम् कथं गायेयं॥२॥
सतसँग में गुरु बैठ के निज बचन सुनाई । सुन सुन बाढ़ा प्रेम सुरत मन अति सरसाई ॥ घट में झाँक मगन होय सुन अनहद झनकार । दूत सकल निरबल हुए गुरु कीन्ही मेहर अपार ॥ भोग सब लागे अब खारी ॥ ३ ॥	सत्सङ्गे सद्गुरु विराजितं भूत्वा निजप्रवचनानि अश्रावयन्। श्रावं श्रावं वर्धितं प्रेम आत्मामनश्च अतिप्रफुल्लितौ॥ निरीक्ष्य घटे मग्नीभूय श्रुत्वा अनहदझंकृतिम्। सर्वे दूता: दुर्बलाः जाता: गुरु: अपारादयां कृतवन्तः॥ अद्य सर्वे विषयाः तीक्ष्णाः प्रतीयन्ते॥३॥
गुरु की सरन सम्हार बिरह हिये नई उमँगाई ।	गुरुशरणं संरक्ष्य नवविरह: हृदये उल्लसितः।

काल करम बल तोड़	कालकर्मणश्च बलं त्रोटयित्वा
सुरत को अधर चढ़ाई ॥	आत्मानमधरम् आरोहयत्॥
गगन पार सुन में गई	गगनं पारं कृत्वा सुन्नपदं गत:
और देखा हंस बिलास ।	हंसविलासम् चापश्यत्।
भँवर गुफा सुन बाँसरी	भँवरगुहायां वेणुं श्रुत्वा
किया सतगुरु चरन निवास ॥	सद्गुरुचरणयो: वासं कृतम्॥
सुरत हुइ राधास्वामी की प्यारी ॥४॥	आत्मा राधास्वामीदयालूनां प्रियः जाता॥४॥

॥ शब्द ६ ॥ मन चंचल चहुँ दिस धाय	
हिंदी	संस्कृत
मन चंचल चहुँ दिस धाय । सखी मैं नहिं जाने दूँगी ॥ गुरु बल हियरे धार । बिघन कोइ नहिं आने दूँगी ॥ टेक ॥	चञ्चलमनः चतुर्दिक्षु धावति। आलि रोत्स्याम्यहम् ॥ गुरुबलं हृदये धार्य। विघ्नावकाशं न दास्यामि॥ १ ॥
माया भोग दिखाय । भुलावत जीवन को जग मैं ॥ मैं गुरु नाम अधार । दाव वाहि नहिं पाने दूँगी ॥ १ ॥	माया विषयभोगान् प्रदर्शयन्। जगति जीवान् भ्रामयति ॥ गुरोः नामाधारेऽहम् । न दास्याम्यवसरं ताम् ॥ २ ॥
मन है बड़ा गँवार । करे नहिं चरनन बिश्वासा ॥ मैं गुरु टेक सम्हार । भरम कोइ नहिं लाने दूँगी ॥ २ ॥	अति जडः मनः। न करोति विश्वासं चरणयोः॥ गुरोः आश्रयं धार्याहम् । न दास्यामि भ्रमावकाशः॥ ३ ॥
गुरु का ध्यान सम्हार । चरन में मन को साध रहूँ ॥ बिन राधास्वामी नाम । और कुछ नहिं गाने दूँगी ॥ ३ ॥	गुरोः ध्यानं संरक्ष्य। मनः चरणयोः रुणद्धिम॥ विना राधास्वामीनाम । न दास्याम्यवकाशं किमपि अन्यं गातुम् ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥ मनुआँ कहन न माने सखी	
हिंदी	संस्कृत
मनुआँ कहन न माने सखी । मैं कौन उपाय करूँ ॥ टेक ॥	आलि न मन्यते कथनं मनः । किमोपायं करोमि अहम् ॥ टेक ॥
बहु बिधि रहा समझाय । भरमता फिर फिर भोगन में ॥ गुरु की कान न माने मूरख । क्योंकर बाँध रखूँ ॥ १ ॥	बहुविधिना बोधययामि। भूयोभूयः विषयेषु भ्रमति॥ मूर्खः गुरुणा सङ्कोचं न करोति। किमर्थं बध्नामि ॥ १ ॥
निरभय होय तरंग उठावत । रोक टोक माने नाहीं ॥ मैं तो कीन्हें जतन अनेका । कैसे इसको मार मरूँ ॥ २ ॥	निर्भीकं भूत्वा तरङ्गाः उत्थापयति। न मन्यते अवरोधान् ॥ अनेकोपायाः कृता: मया । कथं म्रिये हत्वा अमुम् ॥ २ ॥
सतसँग करता नित्त । शब्द का करता अभ्यासा ॥ अपनी हठ नहिं छोड़े । कहो फिर कैसे पार पड़ूँ॥ ३ ॥	नित्यं सत्सङ्गं करोमि। शब्दस्य अभ्यासं करोमि॥ स्वाग्रहं न त्यजति । कथयतु कथं पारयिष्यामि ॥ ३ ॥
गुरु की दया ले संग । सुरत रहे चरनन में राती ॥ राधास्वामी सरन सम्हार । जगत से या बिधि आज तरूँ ॥ ४ ॥	गुरुदयया सार्धम् । लीनः भवति आत्मा चरणौ ॥ संरक्ष्य राधास्वामीशरणम् । अनया विधिना तरामि जगतः अधुना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥ मन तू करले हिये धर प्यार	
हिंदी	संस्कृत
मन तू करले हिये धर प्यार । राधास्वामी नाम का आधार ॥ टेक ॥	अयि मन हृदि प्रीतिं धृत्वा । राधास्वामीनाम्नः आधारं कुरु॥ १ ॥
राधास्वामी नाम है अगम अपारा। जो सुमिरे तिस लेहि उबारा ॥ सुन घट में अनहद झनकार ॥ १ ॥	राधास्वामीनाम अगमः अपारश्चास्ति। यः स्मरति तं उद्धरति ॥ अनाहत झंकृतिं घटे श्रृणु॥ २ ॥
राधास्वामी धाम है ऊँच से ऊँचा । संत बिना कोइ जहाँ न पहुँचा । दरस किया जाय कुल करतार ॥ २ ॥	उच्चादुच्चः राधास्वामीधामः (धाम)। यत्र सन्तपुरुषं विना न कोऽपि समायातः॥ कुलकर्तृणां दर्शनं कृतम्॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम की महिमा भारी । शेष महेश कहत सब हारी ॥ लीला अपर अपार ॥ ३ ॥	अतिमहिमा राधास्वामीनाम्नः । शेषमहेश्च सर्वे च कथयन् पराजिताः ॥ अपरापारा च लीला ॥ ४ ॥
राधास्वामी परम पुरुष जग आये। हंस जीव सब लिये मुक्ताये॥ और जीवन पर बीजा डार ॥ ४ ॥	राधास्वामीपरमपुरुषाः जगति समागतवन्तः । सर्वे हंसजीवा उद्धरयिताः ॥ आरब्धः अन्य जीवानां उद्धारकार्यम्॥ ५ ॥
नाम की महिमा बहु बिधि गाई । मुक्ती की यहि जुगत बताई ॥ सुमिरो राधास्वामी बारम्बार ॥ ५ ॥	अनेकश: वर्णिताः नाम्नः महिमाम् । मुक्तेरियं युक्तिः वर्णिता॥ स्मर राधास्वामीनाम भूयोभूयः ॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम का भेद सुनाया। सुरत शब्द मारग दरसाया ॥ धुन सँग सुरत चढ़ाओ पार ॥ ६ ॥	राधास्वामीनाम्नः भेदः श्रावितः। सुरतशब्दमार्गः दर्शित:॥ ध्वनिना सह आरोहयतु आत्मानं पारम्॥ ७ ॥
धुन आत्मक जो राधास्वामी नामा । तिस महिमा कस कहूँ बखाना ॥ जो सुने सोइ जाय निज घरबार ॥ ७ ॥	यः राधास्वामीनामास्ति ध्वन्यात्मकः । कथं वर्णयामि तस्य महिमाम् ॥ श्रृणोति यः गच्छति सैव निजगृहम्॥ ८ ॥

॥ शब्द ९ ॥ मन तू सुन ले चित दे आज	
हिंदी	संस्कृत
मन तू सुन ले चित दे आज । राधास्वामी नाम की आवाज़ ॥ टेक ॥	अयि मन श्रृणु चित्तेनाद्य । राधास्वामी नाम्नः ध्वनिम्॥ टेक ॥
अनहद बाजे घट घट बाजें । अनुरागी सुन सुन आराधें । प्रेम भक्ति का लेकर साज ॥ १ ॥	अनाहतवाद्यानि प्रतिघटं नदन्ति। श्रावं श्रावं अनुरागिणः आराध्यन्ते। गृहीत्वा प्रेमभक्तेः सामग्रीम्॥ १ ॥
तीन लोक में अनहद राजे । सत्तलोक सत शब्द बिराजे। तिस परे राधास्वामी नाम की गाज ॥ २॥	शब्दः त्रिलोकेषु राजति। सतशब्दः सत्तलोके विराजति। तस्मात् परे राधास्वामीनाम्नः गर्जनम्॥२ ॥
शब्द की महिमा संतन गाई । जिन मानी धुन तिन्हें सुनाई। कर दिया उनका पूरा काज ॥ ३ ॥	संतपुरुषाः शब्दस्य महिमाम् अगायन् । येः अमन्वन् तान् ध्वनिम् अश्रावयन्। सिद्धं कृतं तेषां पूर्णप्रयोजनम् ॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम हिये में धारा। सोई जन हुआ सबसे न्यारा । त्याग दई कुल जग की लाज ॥ ४ ॥	येन राधास्वामीनाम हृदि धृतम् । पृथग् जातः सैव सर्वेभ्यः । त्यक्ता लज्जा कुलस्य जगतश्च॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम प्रीति जिन धारी। राधास्वामी तिसको लिया सुधारी । दान दिया वाहि भक्ती दाज ॥ ५ ॥	येन राधास्वामीनाम्नः प्रीतिः धृता। तं राधास्वामीदयालवः सुधारयन्ति। तं भक्तिदानं प्रदत्तम्॥५॥
राधास्वामी नाम है अपर अपारा | राधास्वामी नाम है सार का सारा । जो सुने सोइ करे घट में राज ॥ ६ ॥	राधास्वामीनाम अपरापारोऽस्ति। राधास्वामीनाम सारस्य सारोऽस्ति। श्रृणोति यः करोति सैव राज्यं घटे॥ ६ ॥

॥ शब्द १० ॥ जगत भोग मोहि नेक न भावें	
हिंदी	संस्कृत
जगत भोग मोहि नेक न भावें । मैं तो सतगुरु ढूँढूँगी ॥ टेक ॥	स्तोकमपि न रोचन्ते जगद् विषयाः मम । अहन्तु सद्गुरुं अन्विष्यामि ॥ टेक ॥
सतगुरु की महिमा अति भारी । बिन उनके कोइ जाय न पारी । मैं तो उनहीं को सेऊँगी ॥ १	गुरुतमा महिमा सद्गुरोः । न कोऽपि पारं गन्तुं क्षमः तेषां विना । तानेव सेविष्येऽहम्॥ १ ॥
सतसँग कर गुरु चरन धियाऊँ । सुन सुन बचन हिये उमगाऊँ । मैं तो उनही की जुगत कमाऊँगी ॥	कृत्वा सत्सङ्गं ध्यायामि गुरुचरणौ । श्रावं श्रावं वचनं हृदये औत्सुक्यामि । अहन्तु तेषामेवयुक्तिम् अर्जयिष्यामि॥ २ ॥
भाग जगे सतगुरु मिले आई दीन देख मोहि लिया अपनाई। चरनन प्रीति बढाऊँगी ॥ ३ ॥	जागृतं दैवं सद्गुरु: मिलितवन्तः । दीनं दृष्ट्वा मां स्वीकृतवन्त: । वर्धिष्ये प्रीतिं चरणौ ॥ ३ ॥
ले उपदेश सुनूँ घट धुन को । घेर और फेर लगाऊँ मन को । गगन ओर नित धाऊँगी ॥ ४ ॥	उपदेशं गृहीत्वा घटे ध्वनिं श्रृणोमि। मनः एकाग्रं कृत्य प्रत्यावर्त्य च जगतः युनज्मि। नित्यं गगनं प्रति धावयिष्यामि॥ ४ ॥
गुरु पद परस सरोवर न्हाऊँ । भँवरगुफा सोहं धुन गाऊँ । । सतपुर बीन बजाऊँगी ॥ ५ ॥	गुरुपदं संस्पृश्य सरोवरे स्नामि। सोहं ध्वनिं भँवरगुहायां गायामि। अहितुण्डवाद्यं सतपुरे नदिष्यामि॥ ५ ॥
अलख पुरुष की आरत धारूँ । अगम पुरुष का रूप निहारूँ । राधास्वामी चरन समाऊँगी ॥ ६ ॥	अलखपुरुषस्य आरतिं धरामि। अगमपुरुषस्य रूपं अवलोकयामि। राधास्वामीचरणयो: संवेक्षयामि॥ ६ ॥
सतगुरु दया परम पद पाया । राधास्वामी धाम अजब दरसाया । छिन छिन उन गुन गाऊँगी ॥ ७ ॥	सद्गुरुदयया परमपदं लब्धं। अदभुतं राधास्वामीधामम्(धाम) अदर्शयन् । प्रतिक्षणं तेषां गुणान् गायामि॥ ७ ॥

॥ शब्द १ ॥ प्रेम दात गुरु दीजिये	
हिंदी	संस्कृत
प्रेम दात गुरु दीजिये । मेरे समरथ दाता हो ॥ १ ॥	गुरु: प्रेमोपायनं दद्युः। हे मम समर्थदाता॥१॥
दरस पाय नित मगन रहूँ । मेरे यही अभिलाषा हो ॥ २ ॥	दर्शनं प्राप्य नित्यं लीनं भवेयम्। अयि इयमेव ममाभिलाषा ॥२॥
प्रेम रंग भीजत रहूँ । नित तुमहिं धियाता हो ॥ ३ ॥	प्रेमरङ्गेन क्लिद्यामि। अयि नित्यं त्वमेव स्मरामि ॥३॥
मेरे सर्ब अंग में बसि रहो । नित तुम गुन गाता हो ॥ ४ ॥	मम सर्वाङ्गेषु वसेयुः। अयि नित्यं त्वं गुणान् गायामि॥४॥
माया के सब बिघन हटाओ । काल रहे मुरझाता हो ॥ ५ ॥	मायाया: सर्वविघ्नान् अपसारयेयुः। अयि म्लायति काल: ॥५॥
मन इंद्री का ज़ोर न चाले । नित्त रहूँ रँग राता हो ॥ ६ ॥	मनेन्द्रियाणाञ्च बलं न चलेत्। नित्यं भवेयं प्रेम्णि लीन: ॥६॥
भोग बिलास जगत के सारे । मोको कुछ न सुहाता हो ॥ ७ ॥	जगतः सर्वे भोगविलासाः । अयि न किमपि रोचते मह्यम् ॥७॥
यह बख़्शिश करो राधास्वामी प्यारे । अब क्यों देर लगाता हो ॥ ८ ॥	राधास्वामीप्रिय: कुर्यु: अयमनुदानम् । अयि कथं कुर्युः विलम्बम् इदानीम् ॥८॥
देर देर में होत अकाजा । योंहिं दिन बीते जाता हो ॥ ९ ॥	अतिविलम्बे अकार्यं भवति। अयि दिनानि व्यतीतन्ति व्यर्थमेव॥९॥
यह बिनती मानो मेरे प्यारे । राधास्वामी पित और माता हो । १० ॥	ममप्रिय: इमां विनतिं स्वीकुर्यु:। अयि मम पितरौ राधास्वामीदातारः॥१०॥
प्रेम दात बिन सुनो मेरे प्यारे । यह मन नाच नचाता हो ॥११॥	मम प्रिय: विना प्रेमोपायनं श्रृणुयुः । अयि इदं मन: नर्तयति॥११॥
मेरा बस यासे नहिं चाले । भोगन में मदमाता हो ॥ १२ ॥	मम सामर्थ्यं अस्य समक्षं न्यूनम् । अयि उन्मत्तोऽस्मि भोगेषु॥१२॥
दया करो मेरी सुरत चढ़ाओ । घट में शब्द बजाता हो ॥१३॥	दयां कुर्युः ममात्मानम् आरोहयेयुः। अयि घटे शब्दं नादयामि॥१३॥
जो तुम दया करो मेरे प्यारे । फूला अँग न समाता हो ॥ १४॥	मम प्रिया: भवेत् या दया युष्माकम् । अयि फुल्लितः न संवेक्ष्यामि अङ्गेषु ॥१४॥

नाम तुम्हार सुनाऊँ सबको । जग में धूम मचाता हो ॥१५॥	सर्वान् युष्माकं नाम श्रावयामि। अयि कोलाहलं करोमि जगति ॥१५॥
बल बल जाउँ चरन पर तुम्हरे । छिन छिन तुम्हें रिझाता हो ॥१६॥	पुन: पुन: समर्पयामि तव चरणौ । अयि प्रतिक्षणं लोभयामि युष्माकम् ॥१६॥
खुल खुल खेलूँ सुन में प्यारे । काटूँ करम बिधाता हो ॥ १७॥	प्रिय: सुन्नपदे अतिमुदितं भूत्वा क्रीडाम्यहम्। अयि आदिकर्माणि कृन्तामि॥१७॥
खेलूँ बिगसूँ संग तुम्हारे । दया पाय इतराता हो ॥१८॥	युस्माभि: सह क्रीडामि हर्षामि च। प्राप्य दयां करोमि सगर्वचेष्टनम् ॥१८॥
मगन रहूँ नित घट में अपने । चरनन सँग इठलाता हो ॥१९॥	लीनं भवेयं स्वघटे नित्यम् । करोमि सगर्वचेष्टनं चरणाभ्यां सह॥१९॥
सुन सुन शब्द होय मतवाला । छिन छिन अमी चुआता हो ॥२०॥	श्रावं श्रावं शब्दं भवामि उन्मत्त: । स्रवामि अमृतं प्रतिक्षणम् ॥२०॥
ऐसी मौज करो अब प्यारे । दम दम बिनय सुनाता हो ॥२१॥	प्रिय: ईदृशं मोदं भवेत्। अयि भूयोभूयः विनयं श्रावयामि ॥२१॥
होय निचिंत मेरे प्यारे राधास्वामी । तुम चरनन माहिं समाता हो ॥२२॥	मम राधास्वामीप्रिया: अहं निश्चिंतं भूत्वा। अयि संवेक्ष्यामि तव चरणयोः॥२२॥

॥ शब्द २ ॥ घट में दर्शन दीजिये	
हिंदी	संस्कृत
घट में दर्शन दीजिये। मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥ १ ॥	घटे दर्शनं दद्युः। हे मम प्रिय: राधास्वामीदाता ॥ १ ॥
बिन दर्शन मोहि चैन न आवे । मेरी आँखों के तारे हो ॥ २ ॥	न लभे शान्तिमहं दर्शनं विना । हे मम नेत्रयोः नक्षत्रम् ॥ २ ॥
बिन दर्शन मैं तड़प रहूँ । मेरे प्रान अधारे हो ॥ ३ ॥	दर्शनं विनाहं व्याकुलोऽस्मि। हे मम प्राणाधार: ॥ ३ ॥
बिन दरशन मोहि कछु न सुहावे । मेरे जग उजियारे हो ॥ ४ ॥	न किमपि रोचते मह्यं तव दर्शनं विना । हे मम जगत् प्रकाशक: ॥ ४ ॥
बिन दर्शन तुम्हरे मेरे प्यारे । सहत रहूँ दुख भारे हो ॥ ५ ॥	मम प्रियः तव दर्शनं विना । भो सहे प्रचण्डदु:खानि ॥ ५ ॥
बिन दरशन मोहि नेक न भावे । यह जग संसारे हो ॥ ६ ॥	नाल्पमपि रोचते मह्यं दर्शनं विना । भो समस्तोऽयं संसार : ॥ ६ ॥
दर्शन देव और बचन सुनाओ। गुरु मेरे अगम अपारे हो ॥ ७ ॥	देहि दर्शनं श्रावय प्रवचनानि च । हे अगमापाराः मम गुरु: ॥ ७ ॥
सुनो पुकार मेरी अब जल्दी। सतगुरु दीनदयारे हो ॥ ८ ॥	इदानीं क्षिप्रं श्रृणु ममाह्वानम् । हे दीनदयालु: सद्गुरु: ॥ ८ ॥
मेहर करो मानो मेरी बिनती। कीजे मम उपकारे हो ॥ ९ ॥	कुर्युः आशीर्वृष्टिं स्वीकुर्युः मम प्रार्थनाम् । भो ममोपकारं कुर्युः॥ ९ ॥
रहूँ अचिंत मगन निज मन में । नित तुम दरस निहारे हो ॥१०॥	निज मनसि निश्चिन्तं तल्लीनं च भवेयं। भो नित्यं तव दर्शनं ईक्षे॥ १० ॥
अब ही दया करो मेरे दाता । मैं चरनन बलिहारे हो ॥११॥	मम दाता: अधुनैव दयां कुर्यु:। भो चरणयो: समर्पयाम्यहम् ॥ ११ ॥
शुकर करूँ और नित गुन गाऊँ घट में देख बहारे हो ॥ १२ ॥	करोमि कृतज्ञता ज्ञापनं गायामि गुणान् नित्यं च । भो घटे शोभां दृष्टवा ॥ १२ ॥
दरस अधार जियत रहूँ प्यारे । राधास्वामी सत करतारे हो ॥ १३॥	भो प्रिय दरशाधारे जीवामि। हे सतकर्ता: राधास्वामीदाता ॥ १३ ॥

॥ शब्द ३ ॥ बिन दरशन कल नाहिं पड़े	
हिंदी	संस्कृत
बिन दरशन कल नाहिं पड़े । मेरे गुरु प्यारे हो ॥ टेक ॥	न प्राप्यते शान्तिः दर्शनं विना । हे मम प्रिय: सद्गुरु: ॥ १ ॥
जब से मैं बिछड़ी चरन कँवल से । चैन न पाया नहिं धीर धरे ॥ १ ॥	यदातः पृथग्जाता चरणकमलाभ्यामहम्। न प्राप्ता शान्तिः न धैर्यं धरामि ॥ २ ॥
निस दिन सोच रहे यहि मन में भौसागर अब कैसे तरे ॥ २ ॥	प्रतिदिनं मनसि इयमेव चिन्ता। कथं तरिष्यामि भवसागरात् ॥ ३ ॥
काल अनेकन बिघन लगाये। चिन्ता में दिन रात जरे ॥ ३ ॥	काल: अनेके विघ्ना: अलागयत्। चिन्तायाम् अहर्निशं ज्वलामि॥ ४ ॥
भजन भक्ति कुछ बन नहिं आवे । मन माया से नित्त डरे ॥ ४ ॥	न साध्यात् किञ्चित् भजनं भक्तिं वा । बिभेमि मनमाययो: नित्यम् ॥ ५ ॥
हे सतगुरु सब बिघन हटाओ । तुम बिन को अस दया करे ॥ ५ ॥	हे सद्गुरु! अपसारय विघ्नान् सर्वान्। कोऽन्य: दयां कर्तुं क्षमः युष्मान् विना ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से दर्शन दीजे । तब मेरा सब काज सरे ॥ ६ ॥	राधास्वामीदातारः दयया दर्शनं दद्युः। मम सर्वकार्याणि सिद्धयेयु: तदा ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥ सुरत प्यारी बँध गई हो	
हिंदी	संस्कृत
सुरत प्यारी बँध गई हो | जगत में भोगन संग ॥ १ ॥	अयि बद्धः प्रियात्मा । विषयभोगै: साकं जगति ॥ १ ॥
भूल गई निज घर अपना हो । धार रही अद्भुत माया रंग ॥ २ ॥	अयि निजगृहं विस्मृतम्। अद्भुतं मायारङ्गं धरति॥ २ ॥
मिलें जब सतगुरु दाता हो । निकालें मन की सभी तरंग ॥ ३ ॥	अयि यदा सद्गुरुदाता प्राप्नुयुः। मनसः सर्वेतरङ्गाः निष्कासयन्ति॥ ३ ॥
दया कर बचन सुनावें हो । सिखावें गुरु भक्ती का ढंग ॥ ४ ॥	अयि दयां कृत्वा प्रवचनानि श्रावयन्ति। गुरुभक्ते: विधिं शिक्षयन्ति॥ ४ ॥
शब्द अभ्यास करावें हो। चढ़े तब घट में उमँग उमंग ॥ ५ ॥	अयि शब्दाभ्यासं कारयन्ति। तदा घटे अत्युत्साहेन आरोहति॥ ५ ॥
सरन दे काज बनावें हो । बसावें राधास्वामी प्रीति अँग अंग ॥६॥	अयि शरणाश्रयेण कार्यं पूर्णं कुर्वन्ति । राधास्वामीदाता प्रत्यङ्गं प्रीतिं वासयन्ति॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥ सुरत निज घर बिसरानी हो	
हिंदी	संस्कृत
सुरत निज घर बिसरानी हो । जगत में पाय कुसंग ॥ १ ॥	आत्मा निजगृहं विस्मृतम्। जगति कुसङ्गं प्राप्य॥ १ ॥
रहे मन इंद्री सँग भरमाय । उठावत नित नित नई तरंग ॥ २ ॥	मनेन्द्रियैः सह भ्रमति। नित्यप्रतिं नवतरङ्गं उत्थापयति॥ २ ॥
गुरू बिन कौन सम्हारे याहि । करावें वोही मन से जंग ॥ ३ ॥	गुरुं विना एनं कः रक्षितुं समर्थः । सैव मनसा सह युद्धं कारयन्ति॥ ३ ॥
मेहर से मन का मुख मोड़ें । चढ़ावें सूरत अधर उमंग ॥ ४ ॥	कृपया मनसः मुखं प्रत्यावर्तयन्ति। उत्साहेन आत्मानमधरम् आरोहयन्ति॥ ४ ॥
छुटे तब यह औघट घाटा । मिटे तब मन की सबहि उचंग ॥ ५ ॥	तदायं दुर्गमघाटः मुञ्चेत्। तदा मनसः सर्वचाञ्चल्यं नश्येत्।। ५।।
मेहर प्यारे राधास्वामी की पावे । प्रेम का धारे अचरज रंग ॥ ६ ॥	प्रियराधास्वामीदयालोः कृपां प्राप्नोति। प्रेम्णः अद्भुदरङ्गं धरति॥ ६ ॥

॥ शब्द ६ ॥ आओ री सखी चलो गुरु के पासा	
हिंदी	संस्कृत
आओ री सखी चलो गुरु के पासा । भक्ति दान आज लीजिये ॥ १ ॥	एहि आलि गुरुसमीपं चले: । अद्य भक्तिदानं गृह्णीयाः॥ १ ॥
जीव उबारन सतगुरु आये । सतसँग उनका कीजिये ॥ २ ॥	जीवोद्धाराय सद्गुरु: आगतवन्त:। तेषां सत्सङ्गं कुर्या:॥ २ ॥
प्रीति प्रतीति धार चरनन में । तन मन भेंट धरीजिये ॥ ३ ॥	चरणयोः प्रीतिप्रतीतिश्च धरेः। तनो: मनश्च समर्पणं कुर्याताम्॥ ३ ॥
दृष्टि जोड़ उन दरशन करना । चित दे बचन सुनीजिये ॥ ४ ॥	युज्य दृष्टिं तेषां दर्शनं कुर्या:। चित्तेन तेषां वचनानि शृणुयाः॥ ४ ॥
बचन कहो चाहे अमृत धारा । उमँग उमँग घट पीजिये ॥ ५ ॥	वचनं कथयेत् वा अमृतधारा । अत्युत्साहेन घटे पिबेः॥ ५ ॥
सुन सुन बचन खिलत घट मनुआँ । हियरे उमँग भरीजिये ॥ ६ ॥	श्रावं श्रावं वचनं विकसति मनः घटे । हृदयमुत्साहेन पूरये:॥ ६ ॥
कूड़ देख जग का परमारथ । करम धरम तज दीजिये ॥ ७ ॥	जगतः परमार्थम् अवस्करं मत्वा । कर्मधर्मश्च त्यजे:॥ ७ ॥
सुरत शब्द का ले उपदेशा । घट में बिलास करीजिये ॥ ८ ॥	गृहीत्वा सुरतशब्दस्योपदेशम् । घटे विलासं कुर्या:॥ ८ ॥
अधर चढ़त सुत हुई मगनानी । मनुआँ धुन सँग रीझिये ॥ ९ ॥	आरोहनधरे मग्नः आत्मा । ध्वनिना सह मन: अनुरक्तं कुर्या:॥ ९ ॥
भक्ति महातम महिमा जानी । प्रेम रंग घट भीजिये ॥ १० ॥	ज्ञाता महिमा भक्तिमहत्ताया: । प्रेमरङ्गेन घटे क्लिद्ये॥ १० ॥
समरथ सतगुरु राधास्वामी पाये । सीस चरन में दीजिये ॥ ११ ॥	राधास्वामीसमर्थ सद्गुरु: प्राप्ताः। चरणयो: शीशं अर्पये:॥ ११ ॥

॥ शब्द ७ ॥ आओ री सखी चलो गुरु सतसँग में	
हिंदी	संस्कृत
आओ री सखी चलो गुरु सतसँग में । जीव का काज बनाई ॥ टेक ॥	एहि आलि चल गुरुसत्सङ्गे । जीवस्य कार्य साध्नुवन्ति ॥ टेक ॥
गिरही पंडित शेख और भेषा । सब मुए धर धर पिछली टेका ॥ पूजें देवी देव अनेका । जनम जनम भरमाई ॥ १ ॥	गृहस्थपण्डितमौलाविवेशा: । सर्वे पुरापरम्परा: ग्राह्य मृता:॥ अनेकदेवीदेवान् च अर्चयन्ति। प्रतिजन्म भ्रमिता: ॥ १ ॥
राधास्वामी चरनन धर परतीती । सतगुरु से कर गहरी प्रीती ॥ या बिधि मन माया को जीती। काल को मार गिराई ॥ २ ॥	राधास्वामीचरणयो: प्रतीतिं धर। सद्गुरुणा सह गहनाप्रीतिं कुरु॥ अनयाविधिना मनमाया च जितौ। कालं हत्वा अपातयत्॥ २ ॥
सतसँग कर ले गुरु उपदेशा । सुरत शब्द में करो प्रवेशा ॥ जनम मरन का मिटे अँदेशा । घट में करो चढ़ाई ॥ ३ ॥	सत्सङ्गं कृत्वा गुरूपदेशं गृहाण । सुरत(आत्मा) शब्दे प्रवेशं कुरु॥ जन्ममृत्यो: भयं नश्येत्। आरोहयेत् घटे॥ ३ ॥
गुरु स्वरूप का कर दीदारा । सुन में सुनो शब्द झनकारा ॥ मुरली बीन बजे जहँ सारा । सतगुरु दरशन पाई ॥ ४ ॥	दर्शनं गुरुस्वरूपस्य कुरु। सुन्ने शब्दस्य झंकृतिं श्रृणु॥ यत्र उत्तमवेणु अहितुण्डवाद्यञ्च नदतः। सद्गुरो: दर्शनं प्राप्तम् ॥ ४ ॥
वहाँ से भी अधर चढ़ावत । अलख अगम का दरशन पावत ॥ राधास्वामी चरन निहारत । निज घर जाय बसाई ॥ ५ ॥	तत्रतोऽपि अधरम् आरोहयति। अलखागमस्य च दर्शनं प्राप्नोति॥ राधास्वामीचरणौ अवलोकयति। निजगृहं गत्वा उषितम्॥ ५ ॥

॥ शब्द ८॥ कोई कछू कहे मैं नेक न मानूँ	
हिंदी	संस्कृत
कोई कछू कहे मैं नेक न मानूँ । मेरा गुरु चरनन मन लागा री ॥ १ ॥	किमपि कथयेत् कोऽपि स्तोकमपि न स्वीकरोमि। अयि गुरुचरणौ मम मनः युनक्ति ॥ १ ॥
दरशन करूँ नित्त हित चित से । (मेरा) रूप रस्स मन राता री ॥ २ ॥	नित्यं प्रेम्णा चित्तेन दर्शनं करोमि। (मम) मन: रूपरसे लीनं भवति ॥ २ ॥
साकित जन का सँग नहि चाहूँ । चाहूँ न भोग और रागा री ॥ ३ ॥	सांसारिकजनेन सह प्रीतिं न वांछामि । विषयभोगान् कामनाश्च न वांछामि॥ ३ ॥
दीन ग़रीबी धारूँ चित में । सेवा में रहूँ जागा री ॥ ४ ॥	दैन्यं निर्धनताञ्च चित्ते धारयामि। सेवायां जागर्मि॥ ४ ॥
गुरु सतसँग मोहि मिला सहज में । क्या कहूँ मैं बड़ भागा री ॥ ५ ॥	गुरुसत्सङ्ग: सारल्येन मां प्राप्त:। अयि किं वच्मि स्व सुभागम् ॥ ५ ॥
मेहर करी गुरु मोहि सम्हाला । जगत भाव भय त्यागा री ॥ ६ ॥	कृपा कृता सदगुरुः मां संरक्षितः। अयि जगत: भावः भयश्च त्यक्तौ॥ ६ ॥
शब्द डोर गहि सुरत चढ़ाऊँ । छिन छिन धुन रस पागा री ॥ ७ ॥	आरोहयामि आत्मानं गृहीत्वा शब्दस्य तन्तुम् । अयि लीनं भवेयं प्रतिक्षणं ध्वनिरसे ॥ ७ ॥
गुरु बल सबहि बिकार निकारूँ । हंस होय मन कागा री ॥ ८ ॥	गुरुबलाद् सर्वे विकारान् निष्कासयामि। अयि काकमनः परिवर्तते हंसवृत्याम् ॥ ८ ॥
सत्त शब्द में सुरत पिरोऊँ । जैसे सुई में धागा री ॥ ६ ॥	आत्मानं(सुरतं) प्रवेशयामि सत्तशब्दे । यथा तन्तुः सूचिकायाम् ॥ ९ ॥
राधास्वामी धाम चलूँ फिर सज के। वहिं उन दरशन ताका री ॥१०॥	ततः अलंकृत्य राधास्वामीधामं(धाम) गच्छामि। तत्रैव तेषां दर्शनं कृतम्॥ १० ॥
मेहर करी मोहि अंग लगाया । दीन्हा अचल सुहागा री ॥११॥	कृपा कृता माम् अङ्गेन अयुञ्जन् । अचलसौभाग्यं दत्तवन्तः॥ ११ ॥

पेज 88 ॥ शब्द ९ ॥ मेरे राधास्वामी प्यारे हो	
हिंदी	संस्कृत
मेरे राधास्वामी प्यारे हो । दरश दे बिपति हरो ॥१॥	हे मम प्रियः रा धा/धः स्व आ मीदयालुः । दर्शनं दत्वा विपतिं हरेयुः ॥१॥
मेरे राधास्वामी प्यारे हो । चरन मेरे सीस धरो ॥२॥	हे मम रा धा/धः स्व आ मीदयालुः । स्व चरणौ मम शिरसि धारयेताम् ॥२॥
मेरे राधास्वामी प्यारे हो । हिये में मेरे आन बसो ॥३॥	हे मम रा धा/धः स्व आ मीदयालुः । मम हृदि आगत्य वसेयुः ॥३॥
मैं तो जाउँ बलिहारी हो । मेहर की दृष्टि करो ॥४॥	अहन्तु समर्पयामि त्वरित । आशीर्वृष्टिं कुर्युः ॥४॥
राधास्वामी लेव बचाई हो । अब मैं सरन पड़ो ॥५॥	हे रा धा/धः स्व आ मीदयालुः रक्षां कुर्युः । सम्प्रत्यहं शरणागतमस्मि ॥५॥

॥ शब्द १० ॥ मेरे राधास्वामी जग आये	
हिंदी	संस्कृत
मेरे राधास्वामी जग आये । करन को जीव उबार ॥ १ ॥	मम राधास्वामीदातार: जगति आगतवन्त :। जीवोद्धारं कर्तु॥ १ ॥
धर संत रूप औतार । सुनाया घट का भेद अपार ॥ २ ॥	संतरूपावतारं धार्य। घटस्यापारं भेदम् अश्रावयन्॥ २ ॥
शब्द धुन घट में सुन्ना हो । ध्यान गुरु रूप सम्हार ॥ ३ ॥	अयि घटे शब्दध्वनिं श्रावयित्वा। गुरुरूपस्य ध्यानं संरक्ष॥ ३ ॥
भोग जग जान असारा हो । त्याग चल शब्द का कर आधार ॥ ४॥	अयि जगद्भोगान् निःसारं विद्धि। त्यक्त्वा चल शब्दस्याधारं कुरु॥ ४ ॥
सरन राधास्वामी धारो हो । मेहर से देवें पार उतार ॥ ५ ॥	अयि राधास्वामीशरणं धर । कृपया पारम् अवतारयन्ति॥ ५ ॥

॥ शब्द १ ॥ रुनझुन रुनझुन हुइ धुन घट में	
हिंदी	संस्कृत
रुनझुन रुनझुन हुइ धुन घट में । सुन सुन लगी मोहि प्यारी रे ॥टेक॥	रुनझुन रुनझुन इति ध्वनिः घटे अभवत् । अयि श्रावं श्रावं रोचते मह्यम ॥टेक॥
यह धुन आवत दसम द्वार से । काल शब्द से न्यारी रे ॥१॥	अयं ध्वनिः निर्गच्छति दशंद्वारात् । अयि पृथगस्ति कालशब्दात् ॥१॥
सुन सुन धुन अब सोया मनुआँ । इंद्री भी थक हारी रे ॥२॥	श्रावं श्रावं ध्वनिं मनः निद्रां गतम् । अयि इन्द्रिया अपि श्रान्तं भूत्वा पराजिता: ॥२॥
अधर चढ़त सुत मगन होय कर । गुरु चरनन पर वारी रे ॥३॥	आत्मा(सुरत:) मग्नं भूत्वा अधरमारोहति । अयि गुरुचरणौ समर्पयति ॥३॥
उमंग उमँग सुत गइ सतपुर में । दया दृष्टि गुरु डारी रे ॥४॥	आत्मा अत्युल्लासेन सत्तपुरं गतवान् । अयि गुरु: दयादृष्टिम् अपातयन् ॥४॥
आगे चल पहुँची निज धामा । राधास्वामी के बलिहारी रे ॥५॥	अग्रे गत्वा निजधामे(धाम्नि) गतवान् । राधास्वामीदयालुं प्रति समर्पयति॥५॥

॥ शब्द २ ॥ कोइ दिन का है जग में रहना सखी	
हिंदी	संस्कृत
कोइ दिन का है जग में रहना सखी। ले सुध बुध घर की ओर चलो ॥टेक॥	अयि आलि केषांचित् दिवसानां वासः जगति । गृहीत्वा संकेतं चलतु गृहं प्रति ॥ १ ॥
यहाँ दूत दिखावें ज़ोर घना । और इंद्री नाच नचावें मना ॥ इन सबको दीजे बेग हटा। कुल काल करम का आज दलो ॥१॥	अत्र कामक्रोधादिदूताः अतिबलं दर्शयन्ति। इन्द्रियाणि च नर्तयन्ति मनः ॥ क्षिप्रं इमान् सर्वान् अपसरेयु:। कालकर्मणो: कुलमद्य नश्येत्॥ २ ॥
सतगुरु का खोज करो भाई । उन चरनन प्रीति धरो आई ॥ प्रेमी जन मे मेल मिलाई । सतसंगत में उमँग रलो ॥ २ ॥	हे भ्राता सद्गुरुम् अन्वेषयतु। तेषां चरणयो: प्रीतिं धारयतु॥ प्रेमीजनेन सह मेलनं कारितम्। उत्साहेन सत्सङ्गे लीनं भवतु॥ ३ ॥
गुरु देवें घर का भेद बता । सुत शब्द का दें उपदेश सचा ॥ तब घट में अपने धूम मचा । गुरु शब्द से चढ कर जाय मिलो ॥ ३ ॥	गुरु: गृहस्य भेदं निर्दिशन्ति। सुरतशब्दस्य सत्योपदेशं ददति॥ तदा स्वघटे कोलाहलं कृत्वा। आरुह्य मिलतु गुरुशब्देन ॥ ४ ॥
फिर वहाँ से अधर चढ़ो प्यारी । धुन मुरली बीन सुनो सारी ॥ मन माया काल रहे वारी । सतगुरु की गोद में जाय पलो ॥ ४ ॥	प्रिया! ततः अधरम् आरोहतु तत्रतः । वेणोअहितुण्डवाद्ययोः पूर्णं ध्वनिं श्रृणोतु॥ मनमायाकालश्च वसन्ति अत्रैव । सद्गुरु अङ्के गत्वा भरणीभवतु॥ ५ ॥
सतपुर से भी अधर चलो। घर अलख गम के पार बसो ॥ लख अचरज लीला मगन रहो। राधास्वामी चरन में जाय घुलो ॥ ५ ॥	सत्तपुरादपि अधरं चलतु। अलखागमस्य च गृहाभ्यां पारं वसतु॥ पश्य अचरजलीलां मग्नं भवतु। गत्वा राधास्वामीचरणौ विलयतु॥ ६ ॥

॥ शब्द ३ ॥ भजन में कैसे करूँ हेली री	
हिंदी	संस्कृत
भजन में कैसे करूँ हेली री। भजन मैं कैसे करूँ ॥ बिन मन निश्चल होय । भजन मैं कैसे करूँ ॥ टेक ॥	अयि आलि! अहं कथं करोमि भजनम्। अहं कथं करोमि भजनम् ॥ मनसः निश्चलतां विना । अहं कथं करोमि भजनम् ॥ टेक ॥
संसारी ख़्यालों में भरमे । नित वहि कार कमाय ॥ मैं चाहूँ रोकूँ याहि घट में । नेक नहीं ठहराय ॥ १ ॥	जागतिक कल्पनासु भ्रमति। नित्यं सैव कार्यं करोति॥ वाञ्छाम्यहं चेत् अस्यावरोधनं करोमि घटे तर्हि। नावरुध्यतेऽल्पमपि ॥ १ ॥
बहु बिधि याहि समझौती दीन्हीं । नेक कहन नहिं मान ॥ दया करो मेरे सतगुरु प्यारे । समरथ पुरुष सुजान ॥ २ ॥	अनेकशः एनं बोधनं दत्तम्। नाल्पमपि मन्यते कथनम् ॥ कुर्युः दयां मम प्रियः सद्गुरुः । समर्थः सुज्ञानपुरुषश्च॥ २ ॥
भोग बासना दूर निकारो । धुन सँग सुरत लगाय ॥ मनुआँ रहे चरन लौलीना । बहुर न कितहूँ जाय ॥ ३ ॥	दूरं कुर्युः भोगवासनाः । युज्य ध्वनिना सह आत्मानम् ॥ मनः चरणयोः लयलीनं भवेत्। ततः न कुत्रापि भ्रमेत् ३ ॥
बिना दया यह मन नहिं माने। करिये केती घाल ॥ राधास्वामी चाहें तो छिन में मोड़ें। पल में करें निहाल ॥४॥	दयां विना मनोऽयं न मन्यते। कुर्यात् कियदपि प्रयासम् ॥ राधास्वामीदयालुः वाञ्छेयुः चेत्तर्हि क्षणे प्रत्यावर्तेरन्।। पले प्रसन्नं कुर्वन्ति ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥ मैं तो पड़ी री दूर निज घर से	
हिंदी	संस्कृत
मैं तो पड़ी री दूर निज घर से । मेरा दरशन को जिया तरसे ॥ १ ॥	वसाम्यहं दूरं निजगृहात् । तृष्यति मम हृदयं दर्शनाय ॥ १ ॥
छिन छिन पिया की याद सतावे । जल नैनन से बरसे ॥ २ ॥	संतप्तं करोति प्रियस्य स्मरणं प्रतिक्षणम् । वर्षति जलं नेत्राभ्याम् ॥ २ ॥
दया करें गुरु पूरे अपनी । जब पिया पद जाय परसे ॥ ३ ॥	पूर्णगुरु: कुर्वन्ति स्वदयाम् । गत्वा यदा प्रियस्य पादौ अस्पृशताम्॥ ३ ॥
मैं गुरु प्यारे की सरन पड़ूँगी । सतसँग करूँ नित डर से ॥ ४ ॥	गच्छामि शरणमहं प्रियगुरुम् । करोमि नित्यं सत्सङ्गं भयात् ॥ ४ ॥
सुरत शब्द की जुगत कमाऊँ । तब घट में कुछ दरसे ॥ ५ ॥	अर्जयामि सुरतशब्दस्य युक्तिं यदा । किञ्चित् द्रक्ष्यति घटे तदा ॥ ५ ॥
चढ़ूँ अधर लखूँ रूप पिया का । तब मन सूरत सरसे ॥ ६ ॥	आरोहाम्यधरे ईक्षे प्रियस्य रूपम् । फुल्लिष्यतः मनः आत्मा च तदा ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया काज हुआ पूरा । जाय मिली निज बर से ॥ ७ ॥	राधास्वामीदयया पूर्णं कार्यं सिद्धम्। गत्वा मिलितः स्व प्रभुणा ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥ भक्त का पंथ निराला है	
हिंदी	संस्कृत
भक्त का पंथ निराला है ॥ टेक ॥	अद्भुतमस्ति भक्तस्य पन्थाः ॥ १ ॥
भक्तन के भगवंत की महिमा । और सकल जंजाला है ॥ १ ॥	महिमास्ति भगवतः भक्तानाम् । प्रपञ्चमस्ति एतदरिक्तं सर्वम् ॥ २ ॥
जो भक्ती संतन ने भाषी । वही तो सब से बाला है ॥ २ ॥	या भक्ति: कथिता सन्तै: । उत्कृष्टा सर्वेषु सैव ॥ ३ ॥
उनका प्रीतम कुल का करता । राधास्वामी दीन दयाला है ॥ ३ ॥	कुलकर्तारः तेषां प्रियतमा: । सन्ति राधास्वामीदीनदयालवः ॥ ४ ॥
और उपाश सकल जग माहीं । अंस कला पुर्ष काला है ॥ ४ ॥	अन्ये उपास्याः सम्पूर्ण जगति । कालपुरुषस्य कलायाः अंशाः सन्ति ॥ ५ ॥
इनके संग उबार न होई । कटे न माया जाला है ॥ ५ ॥	न भवितुं शक्यते उद्धारं एभिः सह । न कृन्तति मायाजालम् ॥ ६ ॥
मिल सतगुरु जो शब्द कमावे । वही खोले घट ताला है ॥ ६ ॥	अर्जयति यो शब्दं मिलित्वा सद्गुरुणा । उद्घाटयति सैव घटस्य तालकम् ॥ ७ ॥
प्रेम भक्ति की महिमा भारी । जो धारे सोइ आाला है ॥ ७ ॥	अतिमहिमा प्रेम्ण: भक्तेश्च । उत्कृष्टः सैव धरति यो ॥ ८ ॥
अस प्रेमी प्रीतम से अपने । जाय मिले दरहाला है ॥ ८ ॥	ईदृग् प्रेमी स्व परमप्रियेण । मिलति शीघ्रं गत्वा ॥ ९ ॥
राधास्वामी दयाल भक्त को अपने । मेहर से आप सम्हाला है ॥ ९	राधास्वामीदयालवः स्वभक्तम् । स्वकृपया संरक्षितवन्तः ॥ १० ॥

॥ शब्द ६ ॥ मनुआँ मेरा सोवे जगत में	
हिंदी	संस्कृत
मनुआँ मेरा सोवे जगत में । जगा देव जी ॥ टेक ॥	शेते मम मनः जगति । अयि जागृयात् ॥ टेक ॥
गुरु सतसँग में ले चल सजनी । बचन सुना देव जी ॥ १ ॥	प्रिया गुरोः सत्संगे नय । अयि श्रावय प्रवचनम् ॥ १ ॥
गहरी प्रीति बसाय हिये में । चरन लगा लेव जी ॥ २ ॥	धार्य दृढ़प्रतीतिं हृदये । अयि युनक्तु चरणयोः ॥ २ ॥
दया करो देव शब्द उपदेशा । मरम जना देव जी ॥ ३ ॥	कुर्युः दयां दद्युः शब्दोपदेशम् । अयि जानीयया: भेदम् ॥ ३ ॥
तब जागे यह सोता मनुआँ । अधर चढ़ा देव जी ॥ ४ ॥	जागरिष्यति तदा सुप्तोऽयं मनः । अयि आरोहयतु अधरे ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन निहारूँ । काज बना देव जी ॥ ५ ॥	अवलोकयामि राधास्वामीचरणौ । अयि सिद्धं कुर्युः कार्यम् ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥ हे मेरे मित्रा मनुआँ	
हिंदी	संस्कृत
हे मेरे मित्रा मनुआँ। क्यों न चले निज देश ॥ टेक ॥	हे मित्रं ! मनः मम । कथं न चलसि निजदेशम् ॥ टेक ॥
या तन में नित दुख सुख सहना । छोड़ो यह परदेश ॥ १ ॥	सहसे दुःखं सुखञ्च अस्मिन् देहे । त्यज परदेशं एनम् ॥ १ ॥
बिन सतसँग घर भेद न पावे । ले गुरु से उपदेश ॥ २ ॥	सत्सङ्गं विना न प्राप्यते गृहस्य भेदम् । गृहणीष्व उपदेशं गुरुभ्यः ॥ २ ॥
शब्द जुगत ले नित्त कमायो । काटो करम कलेश ॥ ३ ॥	अर्जय नित्यं गृहीत्वा शब्दस्य युक्तिम् । कृन्त कर्मक्लेशाः ॥ ३ ॥
सुरत चढ़ाय गगन में धात्रो । छूटे माया लेश ॥ ४ ॥	धाव गगनं आरुहयात्मानम् । मुञ्चेत् मायया सम्बन्धः ॥ ४ ॥
मानसरोवर कर अशनाना । धारो हंसा भेष ॥ ५ ॥	कुरु स्नानं मानसरसि । धर हंसस्य वेशः॥ ५ ॥
भँवरगुफा की बंसी बाजी । दयाल देश का मिला संदेश ॥६॥	अनदत् वेणुः भँवरगुहायाः । प्राप्तः सन्देशः दयालदेशस्य ॥ ६ ॥
सत्तलोक सतपुरुष रूप लख । राधास्वामी चरन करो परवेश ॥७॥	सत्तपुरुषस्य रूपमवलोक्य सत्तलोके । कुरु प्रवेशं राधास्वामीचरणयोः ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८॥ कौन बिधि मनुआँ रोका जाय	
हिंदी	संस्कृत
कौन बिधि मनुआँ रोका जाय । जतन कोइ देव बताय ॥ १ ॥	केन विधिना मनः रुन्ध्यात्। काऽऽपि युक्तिं वदेत्॥ १ ॥
मौत का डर जब मन में आय । नर्क का भय जब चित्त समाय ॥ २ ॥	यदा मनसि मृत्योः भयं भवेत्। यदा नरकस्य भयं चेतसि समाविशेत्॥ २ ॥
दुखन से जियरा जब घबराय । खोज सतसँग में करे बनाय ॥ ३ ॥	यदा हृदयं दुःखैः व्याकुलं भवेत्। सत्सङ्गे अन्वेषणं कुर्यात्॥ ३ ॥
गुरू और साध से ले उपदेश । सुरत मन घट धुन संग लगाय ॥ ४ ॥	गुरुणा साधपुरुषेण च उपदेशं गृहीत्वा। आत्मामनसी ध्वनिना सह घटे युञ्ज्याताम् ॥ ४ ॥
मेहर से घट में परचा पाय । प्रीति गुरु दिन दिन बढ़ती जाय ॥ ५ ॥	कृपया घटे अनुभवं प्राप्य। प्रतिदिनं गुरुणा सह प्रीतिः वर्धते॥ ५ ॥
सहज में करम धरम छुटकाय । भोग इंद्रियन के नहीं सुहाय ॥ ६ ॥	मोच्यन्ते सारल्येन कर्मधर्माश्च न रोचन्ते इन्द्रियाणां भोगाः ॥ ६ ॥
दया गुरु तब मन होय निश्चल । शब्द सँग सूरत अधर चढ़ाय ॥ ७ ॥	यदा गुरोः दया: भवेत् मनः निश्चलः भवति। आत्मानं शब्देह सह आरोहयेत्॥ ७ ॥
सरन दे राधास्वामी गुरु दातार । मेहर से दें निज घर पहुँचाय ॥ ८ ॥	राधास्वामीगुरुदाता शरणं दत्वा। कृपया निजगृहं प्रापयन्ति॥ ८ ॥

॥ शब्द ९ ॥ मनुआँ अनाड़ी से कह दीजो	
हिंदी	संस्कृत
मनुआँ अनाड़ी से कह दीजो । जाव बसो चौरासी देश ॥ टेक ॥	अकुशलमनः वदेत्। वसेत् चतुरशीत्यां देशे गत्वा ॥ टेक ॥
मैं तो अब तेरा संग तियागा । जाऊँगी पिया के देश ॥ १ ॥	मया तु त्यक्तः तव सान्निध्यमिदानीम् । प्रियस्य देशे गमिष्यामि॥ १ ॥
चलना होय तो अब हीं चलो घर । छोड़ो जग के ऐश ॥ २ ॥	चलितुं वाञ्छसि चेत्तर्हि गच्छेदानीं गृहम् । विषयभोगान् त्यज ॥ २ ॥
नहिं फिर जनम जनम पछताओ। बाँधेंगे जम गह केश ॥ ३ ॥	अन्यथा प्रतिजन्म पश्चात्तापं करिष्यसि। यमः केशान् गृहीत्वा बाधिष्यन्ति॥ ३ ॥
चित से चेत गहो गुरु सरना । छूटे काल कलेश ॥ ४ ॥	चित्तेन चैतन्यं भूत्वा गुरुशरणं गृहाण। मुञ्चन्ति कालक्लेशा: ॥ ४ ॥
शब्द डोर गहि चढ़ो गगन पर । धारो हंसा भेष ॥ ५ ॥	शब्दतन्तुं ग्राहय गगने आरोह। धर हंसवेशम् ॥ ५ ॥
नित गुन गाओ नाम पुकारो। राधास्वामी पूरन धनी धनेश॥ ६ ॥	नित्यगुणान् गाय आहवानं कुरु । राधास्वामीपूर्णधनी धनिनां धनी च ॥ ६ ॥

॥ शब्द १० ॥ मनुआँ अनाड़ी को समझाओ	
हिंदी	संस्कृत
मनुआँ अनाड़ी को समझाओ । क्यों करे हमारी (आपनी) हान ॥१॥	अकुशलमन अवबोधयतु । कथं करोत्यस्माकं (स्व) हानिम् ॥ १ ॥
जनम जनम किया भोग बिलासा । छोड़ी न अपनी बान ॥ २ ॥	भोगविलासेषु लिप्तं जन्मजन्मनि। स्व प्रकृतिं न त्यक्तम्॥ २ ॥
दुख सुख बहु बिधि भोगत रहिया । गुरु की सीख न मान ॥ ३ ॥	अनेकशः दुःखसुखानि भुनक्ति। गुरुशिक्षां न मन्यते॥ ३ ॥
दुर्लभ नरदेही फिर पाई । अब तो चेत अजान ॥ ४ ॥	पुन: दुर्लभं मानवदेहं प्राप्तम्। अयि मूढ़ इदानीं चैतन्यं भव॥ ४ ॥
शब्द शोर नित घट में होता । सुनो ज़रा दे कान ॥ ५ ॥	घटे नित्यं शब्दकोलाहलः भवति। अवधानेन श्रृणु॥ ५ ॥
गुरु दयाल अब भेंटे आई। कर उनकी पहिचान ॥ ६॥	इदानीं गुरुदयालु: मिलितवन्त: । तेषामभिज्ञानं कुरु॥ ६ ॥
मेहर से घर का भेद सुनावें । चित्त लगा सुन तान ॥ ७ ॥	कृपया गृहस्य भेदं श्रावयन्ति। चित्तेन शब्दस्यध्वनिं श्रृणु॥ ७ ॥
त्रिकुटी जाय बसो तुम प्यारे । तीन लोक का राज कमान ॥ ८ ॥	भो प्रिय! त्वं त्रिकुटीमपदं गत्वा वस। त्रयाणां लोकानां राज्यं पालय ॥ ८ ॥
हम पहुँचें जहँ राधास्वामी धामा । धर उन चरनन ध्यान ॥ ९ ॥	वयं प्राप्नुमः यत्र राधास्वामीधामः(धाम) वर्तते । तेषां चरणयो: ध्यानं धर ॥ ९ ॥

॥ शब्द ११ ॥ हे मेरे समरथ साँई	
हिंदी	संस्कृत
हे मेरे समरथ साँईं । निज रूप दिखाओ ॥ १ ॥	हे मम समर्थस्वामिन: । निजस्वरूपं दर्शयेयु:॥ १ ॥
हे मेरे प्यारे दाता । निज मेहर कराओ ॥ २ ॥	हे मम प्रियदातार: । स्वकृपां कारयेयु:॥ २ ॥
मैं तड़प रहूँ दिन राती । मेरी धीर बँधाओ ॥ ३ ॥	व्याकुलोऽहं अहर्निशम् । बन्धयेयु: मम धैर्यम् ॥ ३ ॥
तुम बिन मोहि सुख नहिं चैना । क्यों देर लगाओ ॥ ४ ॥	न सुखं न शान्तिः मां त्वां विना । कथं विलम्बसि॥ ४ ॥
आस २ में बहु दिन बीते । अब मेरी आस पुराओ॥ ५ ॥	आशायां व्यतीतानि बहुदिनानि । ममाशां पूरयेयु: इदानीम् ॥५॥
योंही उमर जाय मेरी बीती । कब तक तरसाओ ॥ ६ ॥	वृथैव व्यतीतति मम वयम् । कर्हि कालपर्यन्तं तर्षयेयु:॥ ६ ॥
दरस दिखाय हरो मन पीड़ा। राधास्वामी काज बनाओ ॥ ७ ॥	दर्शनं दत्वा मनसः पीडाम् अपसारयेयु:। राधास्वामीदातार: कार्यं सिद्धयेयु:॥ ७ ॥

॥ शब्द १२ ॥ सखी री मैं जाऊँगी घर	
हिंदी	संस्कृत
सखी री मैं जाऊँगी घर । नहिं ठहरूँगी माया देश ॥ टेक ॥	अयि सखि अहं गृहं गमिष्यामि। मायादेशे न स्थास्यामि ॥ १ ॥
घर तो मेरा ऊँच से ऊँचा जहँ नहिं काल कलेश ॥ १ ॥	उच्चादुच्चं मम् गृहम्। नास्ति यत्र कालक्लेशश्च ॥ २ ॥
नहिं वहँ ब्रह्म और परब्रह्मा । नहिं वहँ ब्रह्मा बिश्नु महेश ॥ २ ॥	नैव तत्र ब्रह्मपरब्रह्मणी च। नैव तत्र ब्रह्माविष्णुमहेशश्च ॥ ३ ॥
आतम परमातम नहिं दोई। देबी देब न गौर गनेश ॥ ३	नैव आत्मापरमात्मानौ द्वौ। न देवीदेवगौरीगणेशश्च ॥ ४ ॥
राधास्वामी जहँ सदा बिराजें । धारें अगम अलख सत भेष ॥ ४ ॥	यत्र राधास्वामीदातार: सर्वदा विराजन्ति। अलखागमसतरूपाणि धारयन्ति॥ ५ ॥
हंसन की जहँ सोभा भारी । करते वहँ सद आनँद ऐश ॥ ५ ॥	महतीशोभा हंसानां यत्र। तत्र सर्वदा आनंदविलासं कुर्वन्ति॥ ६ ॥
बिन गुरु दया कोई नहिं पहुँचे । गुरु चरनन में करूँ अदेश ॥ ६ ॥	गुरुदयां विना न कोऽपि गन्तुं क्षमः । गुरुचरणाभ्यां नमामि॥ ७ ॥
राधास्वामी प्यारे सतगुरु मेरे । सुफल करी मेरी अब के बैस ॥ ७ ॥	मम प्रिया: राधास्वामीसद्गुरव:। अधुना मम वयं सफलं कृतवन्तः॥ ८ ॥

॥ शब्द १३ ॥ जो मेरे प्रीतम से प्रीति करे	
हिंदी	संस्कृत
जो मेरे प्रीतम से प्रीति करे । मोहि प्यारा लागे री ॥ १ ॥	यः मम प्रियेण सह प्रेम करोति। अयि रोचते मह्यम् ॥ १ ॥
जो मेरे प्रीतम की सेवा धारे। वहि दिन दिन जागे री ॥ २ ॥	यो मम प्रियं सेवते। अयि जागर्ति सैव प्रतिदिनम् ॥ २ ॥
जो मेरे प्रीतम की महिमा गावे । मोहि अधिक सुहावे री ॥ ३ ॥	यः मम प्रियस्य महिमां गायति । अयि रोचते मह्यमधिकम् ॥ ३ ॥
जो मेरे प्रीतम के चरनन लागे । वहि जग से भागे री ॥ ४ ॥	युनक्ति यः मम प्रियस्य चरणौ । अयि करोति पलायनं जगतः सैव ॥ ४ ॥
जो मेरे प्रीतम का रूप निहारे । वहि छबि ताके री ॥ ५ ॥	यः मम प्रियस्य स्वरूपम् अवलोकयति। अयि पश्यति सैव शोभनं स्वरूपम् ॥ ५ ॥
जो मेरे प्रीतम का शब्द सम्हारे । गुरु दर झाँके री ॥ ६ ॥	यः मम प्रियस्य शब्दम् संरक्षति। अयि प्रच्छन्नमीक्षते गुरुद्वारम् ॥ ६ ॥
जो मेरे प्रीतम की सरन सम्हारे । वहि घर जावे री ॥ ७ ॥	यः मम प्रियस्य शरणम् संरक्षति। अयि गच्छति सैव गृहम्॥ ७ ॥
जो मेरे प्रीतम का नाम पुकारे । सोइ निज धाम सिधारे री ॥ ८ ॥	यः मम प्रियस्य नाम आह्वयति। अयि निजधामं(धाम) सैव गच्छति॥ ८ ॥
भौजल से जो तरना चाहे । राधास्वामी राधास्वामी गावे री ॥ ९ ॥	यः भवसागरात् पारं गन्तुं वाञ्छति। अयि राधास्वामीराधास्वामीनाम गायति॥ ९ ॥

॥ शब्द १४ ॥ भोग बासना छोड़ पियारे	
हिंदी	संस्कृत
भोग बासना छोड़ पियारे । इसमें क्या फल पावेगा ॥ १ ॥	प्रिय त्यज भोगवासनाः । किं फलं प्राप्स्यसि आसाम् ॥ १ ॥
मेहनत करे रात दिन जग में । अंत को ख़ाली जावेगा ॥ २ ॥	जगति अहर्निशं श्रमं करोषि। अन्ते रिक्तैव यास्यसि॥ २ ॥
भाई बंधु और कुटुंब कबीला । कोई काम न आवेगा ॥ ३ ॥	भ्राताबन्धुकुटुम्बवंशश्च । वृथैव सिद्धाः भविष्यन्ति ॥ ३ ॥
यह सब हैं स्वारथ के संगी । अंत को फिर पछतावेगा ॥ ४ ॥	इमे सर्वे स्वार्थस्य सङ्गिन: सन्ति। अन्ते पश्चात्तापं करिष्यसि ॥ ४ ॥
गुरु सतसँग में लगन लगा ले । भेद वहाँ तू पावेगा ॥ ५ ॥	गुरुसत्सङ्गे आसक्तिं धर। तत्रैव रहस्यं प्राप्स्यसि॥ ५ ॥
कर अभ्यास प्रेम से निस दिन । घट में आनँद पावेगा ॥ ६ ॥	प्रतिदिनं प्रेम्णा अभ्यासं कुरु। घटे आनन्दं प्राप्स्यसि॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन धार दृढ़ मन में । भौजल पार सिधारेगा ॥ ७ ॥	राधास्वामीशरणं मनसि दार्ढ्यन धर। भवसागरात् पारं तरिष्यति॥ ७ ॥

॥ शब्द १५ ॥ जगत जीव सब होली पूजें	
हिंदी	संस्कृत
जगत जीव सब होली पूजें । साधू होला गावें री ॥ १ ॥	सर्वेजगज्जीवाः होलीं पूजयन्ति। अयि साधवः होलां गायन्ति॥ १ ॥
अबीर गुलाल उड़ावत चालें । प्रेम रंग घट लावें री ॥ २ ॥	अबीररक्तचूर्णञ्च उत्क्षिपन् चलन्ति। अयि प्रेमरङ्गं घटे आनयन्ति॥ २ ॥
विरह अनुराग की धारा भारी । हिय में नित उमँगावें री ॥ ३ ॥	गुर्वी धारा विरहानुरागयोः । अयि हृदि नित्यं तरङ्गायन्ते॥ ३ ॥
जो जिव चरन सरन में आवें । उनका भाग जगावें री ॥ ४ ॥	ये जीवाः चरणशरणम् आगच्छन्ति। अयि तेषां भाग्यानि जागरयन्ति॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन धार परतीती । सतगुरु शब्द मनावें री ॥ ५ ॥	राधास्वामीचरणयोः प्रतीतिं धार्य। अयि सद्गुरुशब्दञ्च अनुनयन्ति॥ ५ ॥
शब्द अभ्यास करत नित घट में । जग देह भाव भुलावें री ॥ ६ ॥	नित्यं घटे शब्दाभ्यासं कुर्वन्ति। अयि जगतः देहस्य प्रेम विस्मारयन्ति॥ ६ ॥
जग जीवन को दया धार कर । राधास्वामी नाम सुनावें री ॥ ७ ॥	जगज्जीवेभ्यः दयां धार्य। अयि राधास्वामीनाम श्रावयन्ति॥ ७ ॥

॥ शब्द १६ ॥ सतगुरु प्यारी चरन अधारी	
हिंदी	संस्कृत
सतगुरु प्यारी चरन अधारी । खुन २ करती आई हो ॥ १ ॥	सद्गुरुप्रिया चरणाधारी । अयि खुनखुनेति कुर्वन् आगता॥ १ ॥
उमँग उमँग कर सेवा करती । धाउँ २ धाउँ २ धाई हो ॥ २ ॥	अत्युल्लासेन सेवां करोति। अयि धाउँ २ धाउँ २ इति कृत्वा अधावत्॥ २ ॥
गुरु आरत कर मगन हुई अब । घन घन घंट बजाई हो ॥ ३ ॥	गुरो आरतिं कृत्वा मग्नीभूता इदानीम्। अयि घनघनेति शब्देन घण्टाम् अवादयत्॥ ३ ॥
प्रीति सहित परशादी लेकर । खाउँ २ खाउँ २ खाई हो ॥ ४ ॥	गृहीत्वा प्रसादं प्रेम्णा । अयि खाउँ २ खाउँ २ इति कृत्वा अखादत्॥ ४ ॥
राधास्वामी दया करी अब । रुनझुन शब्द सुनाई हो ॥ ५ ॥	राधास्वामीदयालु: दयां कृतवन्त इदानीम्। अयि रुनझुनेति शब्दम् अश्रावयन्॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥ माया रूप नवीन धार कर	
हिंदी	संस्कृत
माया रूप नवीन धार कर । सतसँग में आई ॥ मान भरे रही बोल बचन । अहंकार रहा चित में छाई ॥ मैं आऊँ मैं आऊँ मैं आऊँ शोर मचाई ॥१॥	माया नवरूपं धार्य। सत्सङ्गे आगता॥ गर्वोक्तयः वदति । चेतसि अहंकार आच्छादितः ॥ आगच्छाम्यहं आगच्छाम्यहं आगच्छाम्यहं इति कृतं कोलाहलम् ॥ १ ॥
काल भी दूजा रूप धार कर । अपना मत गाई ॥ क्रोध बिरोध ईरषा झगड़ा । चहुँ दिस फैलाई ॥ बोलत फूँ फूँ फूँ फूँ झक लाई ॥ २ ॥	कालोऽपि धार्य अन्य रूपम् । आगायत् स्वमतम् ॥ क्रोधविरोधेर्ष्याकलहश्चः । चतुर्दिक्षु प्रसारितम्॥ वदति फूँ फूँ फूँ फूँ इति लगनेन ॥ २ ॥
सतसँग में नहिं मिला दाव तब । आपस में झगड़ा ठाना ॥ झूठी रार बढ़ाय जीव को । चाहत भरमाना ॥ घुर २ करत ऐंठते दोऊ फरफूँ दिखलाई ॥ ३॥	सत्सङ्गे अवसरं न प्राप्तं तदा । परस्परं कलहं निश्चितम्॥ असत्यकलहं वर्धित्वा जीवम् । भ्रमितुं इच्छति॥ आकुञ्चतः द्वौ घुर घुर इति कृत्वा दर्शयतः चेष्टां फतिंगाकीटेव ॥ ३ ॥
प्रेमी जन अस देख हाल । सुमिरन में लौ लाई ॥ राधास्वामी नाम सम्हार । जाल को दीन्हा तुड़वाई ॥ काल रहा अब झूर रही माया भी मुरझाई ॥४॥	प्रेमिजन ईदृशामवस्थां पश्य। स्मरणे अयुनक्॥ राधास्वामीनाम संरक्ष्य। पाशम् अत्रोटयत् ॥ कालः खिन्नः इदानीं माया अपि क्लान्ता ॥ ४ ॥

॥ शब्द १ ॥ सुरतिया खेलत बाल समान	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया खेलत बाल समान । चरन में गुरु के उमँग उमंग ॥ १ ॥	आत्मा बालेव क्रीडति। अत्युत्साहेन गुरुचरणयोः ॥ १ ॥
दूर ही दूर रहा जग माहीं । मेहर हुई पाया गुरु का संग ॥ २ ॥	दूरैवावसं जगति । जाता कृपा प्राप्तं गुरुसङ्गम् ॥ २ ॥
निरख गुरु चरन नवीन बिलास । चढ़त नित नया प्रेम का रंग ॥ ३ ॥	गुरुचरणयो: नवविलासं निरीक्ष्य। नित्यं नवप्रेमरङ्गं व्याप्तं भवति॥ ३ ॥
बचन सुन मनुआँ हरष रहा । भरम और संशय होते भंग ॥ ४ ॥	वचनं श्रुत्वा मन: हर्षति । भ्रमसंशयाश्च नश्यन्ति॥ ४ ॥
सरन राधास्वामी दृढ़ करता । भाव और भक्ति हिये धरता ॥ ५ ॥	राधास्वामीशरणं दृढं करोमि। भावभक्तिञ्च हृदये धरामि॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥ सुरतिया धूम मचाय रही	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया धूम मचाय रही। करें गुरु क्यों नहिं दया बिचार ॥ १ ॥	आत्मा कोलाहलं करोति । गुरु: कथं न कुर्युः दयां विचार्य ॥ १ ॥
बिनय करत मोहि बहु दिन बीते । सहत रहे दुख मन बीमार ॥ २ ॥	अनेकानि दिनानि व्यतीतानि विनयं कुर्वन् मया । रुग्ण: मन: सहते दुःखम् ॥ २ ॥
बिन गुरु दरस दवा नहिं कोई। माँग रहा दरशन हर बार ॥ ३ ॥	न कोऽपि औषधं विना गुरुदर्शनम् । प्रतिपलं दर्शनं याचते॥ ३ ॥
जस होय मौज तुम्हारी प्यारे । अंतर बाहर देव दीदार ॥ ४ ॥	प्रियः यथा भवेत् तवेच्छा । अन्तर्बहिश्च दर्शनं दद्यु:॥ ४ ॥
जो अभी मेल न हो सतसँग में । घट में दरशन रहूँ निहार ॥ ५ ॥	न भवेत् मेलं सत्संगे इदानीं चेद् । निरीक्षे दर्शनं घटे तर्हि ॥ ५ ॥
चाहे अपना रूप दिखाओ । चाहे सुनाओ शब्द अपार ॥ ६ ॥	दर्शयेयु: निजरूपं वा । श्रावयेयु: शब्दमपारम् ॥ ६ ॥
जस तस मन कुछ शान्ती पावे । सोई जुगत करो दातार ॥ ७ ॥	येन केन प्रकारेण आप्नुयात् शान्तिं मन: । तथैव उपायं कुर्युः दाता:॥ ७ ॥
तुम्हरे घर कुछ कमी न होई । खोलो दया मेहर भंडार ॥ ८ ॥	न कोऽपि अभाव: भवेत् तव गृहे । उद्घाटयेयु: भाण्डागारं कृपानुग्रहयो: ॥ ८ ॥
किनका प्रेम का बख्शिश दीजे । निस दिन तड़प रहूँ लाचार ॥ ९ ॥	प्रेम्णः कणं अनुदाने दद्युः। विवश: व्याकुलं भवामि प्रतिदिनम् ॥ ९ ॥
पिरथम दया करी मोपै भारी । अब क्यों हुए कठोर दयार ॥१०॥	प्रथमं कृता महती कृपा मयि । हे दयालो: कथं परुषं जात: इदानीम् ॥ १० ॥
मेहर करो मौपै जल्दी प्यारे । जस तस मन को लेव सम्हार ॥११॥	प्रिय: क्षिप्रं माम् आशीर्वृष्टिं कुर्युः। येनकेनप्रकारेण मनः संरक्षेयुः॥ ११ ॥
दीनदयाल जीव हितकारी । प्यारे राधास्वामी मेरे प्राण अधार ॥१२॥	दीनदयालु: जीवहितकर्ता: । राधास्वामीप्रिय: ममप्राणाधार: ॥ १२ ॥

॥ शब्द ३ ॥ सुरतिया भाव सहित	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया भाव सहित। आई सुन गुरु महिमा सार ॥ १ ॥	आत्मा श्रद्धया साकम् । गुरुमहिमाया: सारं श्रुत्वा आगत:॥ १ ॥
दरशन कर मन में हरषानी । सुन सुन बचन बढ़ा हिये प्यार ॥ २ ॥	दर्शनं कृत्वा मनसि हर्षति। श्रावं श्रावं वचनं प्रेम वर्धित:॥ २ ॥
नित्त बिलास देख मगनानी । दरशन नित्त नवीन निहार ॥ ३ ॥	नित्यं विलासं दृष्ट्वा भवत्युन्मत्त: । नित्यं नवीनं दर्शनं निरीक्षते॥ ३ ॥
सतसँग करत भरम सब भागे । जग परमारथ कूड़ बिचार ॥ ४ ॥	सत्सङ्गं कुर्वन् सर्वे भ्रमा अपसृताः। जगत: परमार्थम् अवस्करं विचारितम्॥ ४ ॥
शब्द भेद पाया सतगुरु से । सुरत चढ़ावत धुन की लार ॥ ५ ॥	सद्गुरुत: शब्दभेदं प्राप्तवान्। आरोहयत्यात्मा ध्वनिना सह ॥ ५ ॥
जुगत कमावत होत सफ़ाई । मन से आसा भोग निकार ॥ ६ ॥	अर्जयति युक्तिं भवति शुद्धि: । मनसः आशा: विषयभोगाञ्च बहिर्कृत्य॥ ६ ॥
रहूँ निचिंत सरन गुरु धारूँ । राधास्वामी उतारें भौजल पार ॥ ७ ॥	निश्चितं भवामि गुरुशरणं धरामि। राधास्वामीदाता भवसागरात् तारयिष्यन्ति॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥ सुरतिया उमँग उमँग ।	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया उमँग उमँग । गुरु आरत करत सम्हार ॥ १ ॥	आत्मा अत्युत्साहेन । अवधार्य गुरो: आरतिं करोति ॥ १ ॥
दीन अधीन चरन में आई। बिसरत कृत संसार ॥ २ ॥	दीनाधीनश्चागतः चरणयो: । सांसारिकक्रियाः विस्मरति॥ २ ॥
प्रीति सहित गुरु सेवा करती। नित्त बढ़ावत प्यार ॥ ३ ॥	प्रेम्णा गुरुसेवां करोति। नित्यं प्रेम वर्धयति॥ ३ ॥
सुन सुन महिमा गुरु सतसँग की। भाव हिये में धार ॥ ४ ॥	श्रावं श्रावं गुरो:सत्संगस्य महिमाम्। हृदये श्रद्धां धरति॥ ४ ॥
दिन दिन बढ़त चरन बिस्वासा । गावत राधास्वामी नाम अपार ॥ ५ ॥	प्रतिदिनं चरणयोः विश्वासं वर्धते। अपारराधास्वामीनाम गायति॥ ५ ॥
प्रेमी जन से हेल मेल कर । गुरु गुन गावत सार ॥ ६ ॥	प्रेमीजनै: सह मिलित्वा। गुरुगुणानां सारं गायति॥ ६ ॥
राधास्वामी महिमा हिये बसावत । संसय भरम सब दूर निकार ॥ ७ ॥	राधास्वामीमहिमां हृदये धरति। संशयभ्रमाञ्च दूरं अपसृत्य॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥ सुरतिया घट में आनँद पाय	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया घट में आनँद पाय । निरख गुरु भक्ती रीत नई ॥ १ ॥	आत्मा घटे आनन्दं प्राप्नोति। निरीक्ष्य नवीनां गुरुभक्तिरीतिम् ॥ १ ॥
प्रेमी जन की हालत देखत । मन में अचरज करत रही ॥ २ ॥	प्रेमीजनानां दशां पश्यति। मनसि आश्चर्यं करोति॥ २ ॥
माँगे गुरु से दया बिशेषा सुरत शब्द की लार लई ॥ ३ ॥	याचति गुरुं विशिष्टां दयाम् सुरत शब्देन सह ॥ ३ ॥
देखे घट में अचरज नूरा। सुन सुन धुन फिर अधर गई ॥ ४ ॥	घटे अद्भुतं प्रकाशं पश्यति श्रावं श्रावं ध्वनिं गतमधरं पुन: ॥ ४ ॥
ऐसी मेहर करो गुरु दाता । घट में नित आनंद लई ॥ ५ ॥	गुरुदाता ईदृशीं कृपां कुर्यु: नित्यं घटे आनन्दं भवेत्॥ ५ ॥
दीन अधीन पड़ी तुम सरना । तुम बिन को मोहि दान दई ॥ ६ ॥	दीनाधीनश्च व: शरणं आगतः कः दातुं क्षम: मां विना युष्मान् ॥ ६ ॥
प्रेम की दात देव मोहि प्यारे । सुरत चरन में लिपट रही ॥ ७ ॥	प्रिय: मां प्रेमोपायनं यच्छेयुः आत्मा चरणयो: लिप्लिम्पति॥ ७ ॥
और अँदेस न लावे मन में । मौज धार नित मगन रही ॥ ८ ॥	मनसि अपरं भयं न आनयति प्रभो: इच्छां धार्य नित्यं मग्न: जात:॥ ८ ॥
प्रेम रंग रहे सुरत रँगीली । राधास्वामी सरन पई ॥ ९ ॥	प्रेम्णः रङ्गे सिक्त: रसिकात्मा। राधास्वामीशरणं आगत: ॥ ९ ॥

॥ शब्द ६ ॥ सुरतिया सिमट गई	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया सिमट गई । गुरु दर्शन दृष्टी जोड़ ॥ १ ॥	आत्मा संकुचित: जात:। युक्त्वा दृष्टिं गुरुदर्शने ॥ १ ॥
प्रेम अंग ले करती दर्शन । चित चंचलता छोड़ ॥ २ ॥	प्रेमाङ्गेन दर्शनं करोति। त्यक्त्वा चित्तस्य चांचल्यम् ॥ २ ॥
मन और सुरत जमावत तिल पर । सुनती अनहद घोर ॥ ३ ॥	मन: आत्मानञ्च षड्चक्रे स्थिरं करोति। श्रृणोति अनाहततीव्रध्वनिम् ॥ ३ ॥
निरख प्रकाश मगन हुई मन में । अंतर दृष्टी लाई मोड़ ॥ ४ ॥	परिवीक्ष्य प्रकाशं मनसि मग्न: भूत:। अन्तर्दृष्टिं प्रत्यावर्तयति॥ ४ ॥
गुरु चरनन में प्यार बढ़ावत । छोड़त जग का मोर और तोर ॥ ५ ॥	गुरुचरणयो: प्रेम वर्धते। जगत: मम तव च त्यजति॥ ५ ॥
जागत प्रेम सुनत गुरु बानी । थकित रहे सब दूत और चोर ॥ ६ ॥	प्रेम जागर्ति गुरुवाणीं च श्रृणोति। दूतचौराश्च सर्वे श्रान्ताः॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल दया की भारी । आप घटाया काल का ज़ोर ॥ ७ ॥	राधास्वामीदयालु: अतिदयां कृतवन्त:। भवान् शिथिलं कृतवन्त: कालस्य बलम् ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७ ॥ सुरतिया सुनत रही	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया सुनत रही । नित राधास्वामी बानी सार ॥ १ ॥	आत्मा श्रृणोति। नित्यं राधास्वामीवाणीसारम् ॥ १ ॥
दीन चित्त सतसँग में आई । धर गुरु चरनन प्यार ॥ २ ॥	दीनचित्तेन सतसङ्गे आगतः। गुरुचरणयोरनुरागं धृत्वा॥ २ ॥
मेहर करी गुरु दिया उपदेशा । सुरत शब्द की जुगती सार ॥ ३ ॥	कृपा कृता गुरुणा उपदेशः प्रदत्तः। सुरतशब्दस्य युक्तिसारम्॥ ३ ॥
सुरत सम्हार करत अभ्यासा । सुनत मगन होय धुन झनकार ॥ ४ ॥	आत्मा अवधानेन अभ्यासं करोति । झंकृतिघोषं श्रुत्वा तन्मय: भवति ॥ ४ ॥
राधास्वामी सतगुरु हुए दयाला । दीन जान लिया गोद बिठार ॥ ५ ॥	राधास्वामीसद्गुरु: दयालु: संजाता:। दीनं ज्ञात्वा अङ्के असादयन् ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥ सुरतिया अचरज करत रही	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया अचरज करत रही । पिरेमी जन का देख बिलास ॥ १ ॥	आत्मा आश्चर्यं करोति। प्रेमीजनस्य विलासं दृष्ट्वा॥ १ ॥
तज जग का भय भाव और लज्या । गुरु चरनन में करती बास ॥ २ ॥	त्यक्त्वा जगत: भयभावंलज्जां च । गुरुचरणयोः वासं करोति॥ २ ॥
भक्ति भाव में निस दिन बरते । उमँग सहित करती अभ्यास ॥ ३ ॥	प्रतिदिनं भक्तिभावे वर्तते। उत्साहेन अभ्यासं करोति॥ ३ ॥
प्रीति परस्पर छिन छिन पालत । गुरु दरशन कर बढ़त हुलास ॥ ४ ॥	प्रतिक्षणं परस्परं प्रीतिं पालयति। गुरुदर्शनं कृत्वा हर्ष: वर्धते॥ ४ ॥
हरष २ सुनती गुरु बचना । ध्यान धरत घट होत उजास ॥ ५ ॥	पुन: पुन: हर्षितं भूत्वा गुरुवचनानि श्रृणोति। ध्यानं धारयन् घटे प्रकाशः जायते॥ ५ ॥
शब्द सुनत सुत चढ़त अधर में। त्रिकुटी पहुँची फोड़ अकाश ॥ ६ ॥	शब्दं श्रृण्वन् आत्माधरे आरोहति। स्फुट्याकाशं त्रिकुटीपदं गतवान्॥ ६ ॥
सुन्न महासुन भँवरगुफा लख । सत्त अलख और अगम निवास ॥ ७ ॥	सुन्नमहासुन्नभँवगुहापदानि दृष्ट्वा । सत्तालखागमपदेषु उषितः॥ ७ ॥
राधास्वामी धाम पाय मगनानी । आज हुई मेरी पूरन आस ॥ ८ ॥	राधास्वामीधामं(धाम) प्राप्य प्रसन्नत: जात:। अद्य ममाशा पूर्णा जाता ॥ ८ ॥

॥ शब्द ९ ॥ सुरतिया करत रही	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया करत रही । गुरु दर्शन सहित उमंग ॥ १ ॥	आत्मा करोति। उत्साहेन गुरुदर्शनम् ॥ १ ॥
मोहित हुई सुनत गुरु बचना । चढ़त सवाया रंग ॥ २ ॥	गुरुवचनानि श्रुत्वा आकृष्टः। वर्धते सपादं रङ्गम् ॥ २ ॥
भक्ती रीति लगी अब प्यारी । गुरु भक्तन का धारत ढंग ॥ ३ ॥	प्रतीता प्रिया भक्तिरीतिरधुना । गुरुभक्तानां विधिं धारयति॥ ३ ॥
जग जीवन की प्रीति तियागी । प्रेमी जन का करती संग ॥ ४ ॥	जगत्जीवनस्य प्रीतिः त्यक्ता। प्रेमीजनस्य सङ्गं करोति॥ ४ ॥
छोड़ झिझक करती गुरु सेवा । प्रेम गुरू छाया अँग अंग ॥ ५ ॥	संकोचं त्यक्त्वा गुरुसेवां करोति। गुरुप्रेम प्रत्यङ्गं व्याप्तम्॥ ५ ॥
याद बढ़ावत नाम पुकारत । सहज हटावत सबहि उचंग ॥ ६ ॥	स्मरणं वर्धयति आह्वयति नाम। सर्वतरङ्गान् सहजे अपसारयति॥ ६ ॥
रूप धियावत शब्द सुनावत । सुरत चढ़ावत जैसे पतंग ॥ ७ ॥	रूपं स्मरति शब्दं श्रावयति। पत्रचिल्लवत् आत्मानं आरोहति ॥ ७ ॥
सुरत खिलावत मन बिगसावत । नई उठावत प्रेम तरंग ॥ ८ ॥	आत्मानं क्रीडयति मनः विकासयति। नवप्रेमतरङ्गान् उत्थापयति॥ ८ ॥
काल बिडारत कर्म सुलावत । मन माया से लेती जंग ॥ ९ ॥	कालम् अपसारयति कर्म स्वापयति। मनमायया च सह युद्धति॥ ९ ॥
घट में धावत आनँद पावत। हिय उमँगावत संसय भंग ॥१०॥	घटे धावति आनन्दं प्राप्नोति। हृदयं उल्लासयति सन्देहा: नश्यन्ति॥ १० ॥
झिझक हटावत कदम बढ़ावत । दूत दुष्ट सब होते तंग ॥११॥	संकोचम् अपसारयति पादं वर्धते। सर्वे दुष्टदूता: खिन्नाः भवन्ति॥ ११ ॥
घंटा संख सुनत हरषावत। पार चढ़त धस नाली बंक ॥१२॥	घण्टाशंखौ श्रुत्वा हर्षति। बंकनाले प्रविश्य पारम् आरोहति॥ १२ ॥
गरज मृदंग सुनत चली आगे । बेनी न्हावत हंसन संग ॥१३॥	नर्दनं च मृदंगं च श्रृण्वन् अग्रे गतवान्। हंसै: सह त्रिवेण्यां स्नाति॥ १३ ॥
मुरली धुन सुन अधर सिधारी । महाकाल रहा दंग ॥१४॥	वेणुध्वनिं श्रुत्वा अधरपदं गतवान्। चकितः महाकाल: ॥ १४ ॥

सत पद पार गई निज घर में । राधास्वामी धाम अरूप रंग ॥१५॥	सतपदात् पारं निजगृहं गत:। अरुपारङ्गं च राधास्वामीधाम:(धाम) ॥ १५ ॥
राधास्वामी दिया प्रसन्न होय कर । प्रेम प्रसाद और भक्ति उतंग ॥१६॥	प्रसन्नं भूत्वा राधास्वामीदातार: अददन् । प्रेमप्रसादं उत्कृष्टभक्तिं च ॥ १६ ॥

॥ शब्द १० ॥ सुरतिया खिलत रही	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया खिलत रही । देख गुरु मनमोहन छबिआज ॥ १ ॥	आत्मा हर्षति। अद्य गुरो: चित्ताकर्षकं छविं दृष्ट्वा॥ १ ॥
दरशन करत भूल रही सुध बुध । छोड़ दिया सब जग का काज ॥ २ ॥	दर्शनं कुर्वन् विवेकं विस्मृतम्। जगतः सर्वकार्याणि त्यक्तानि॥ २ ॥
उमँग २ कर आरत गावत । प्रेम का पाया अद्भुत साज ॥ ३ ॥	अत्युत्साहेन आरतिं गायति। प्रेम्ण: अद्भुतसामग्री प्राप्ता॥ ३ ॥
भक्ति अंग में खुल खुल बरते। छोड़ झिझक और कुल की लाज ॥४॥	भक्तिअङ्गे उन्मुक्तीभूय वर्तते। संकोचं कुलस्य लज्जां च त्यक्त्वा॥ ४ ॥
राधास्वामी दया से गई भौ पारा । तज दिया मन कपटी राज ॥ ५ ॥	राधास्वामीदयया भवसागरात् तीर्णः। धूर्तमनसः राज्यं त्यक्तम् ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥ सुरतिया वार रही	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया वार रही । तन मन गुरु चरन निहार ॥ १ ॥	आत्मा समर्पयति । तनुमनसा च गुरुचरणौ दृष्टवा॥ १ ॥
विमल बैराग धार कर मन में । छोड़ दिया संसार ॥ २ ॥	मनसि विमलवैराग्यं धार्य। त्यक्तः जगत् ॥ २ ॥
मोह जाल के बंधन काटे। गुरु सेवा में रहे हुशियार ॥ ३ ॥	मोहपाशस्य बन्धनानि कर्तितवन्तः। गुरुसेवायां कुशल:॥ ३ ॥
सतसँग बचन धार कर चित में। मन को छिन छिन डारत मार ॥ ४ ॥	चेतसि सत्संगवचनानि धार्य। प्रतिपलं मन: हन्ति॥ ४ ॥
भोग अंक को काटत छिन छिन । राधास्वामी नाम जपत हर बार ॥ ५ ॥	प्रतिपलं भोगसंस्कारं कृन्तति। प्रतिवारं राधास्वामीनाम जपति॥ ५ ॥
ध्यान लगाय बढ़ावत प्रीती । शब्द सुनत हियरे धर प्यार ॥ ६ ॥	ध्याने युज्य प्रीतिं वर्धते। हृदये प्रेम धार्य शब्दं श्रृणोति॥ ६ ॥
घंटा संख मचावत शोरा । छिटक रहा घट जोत उजार ॥ ७ ॥	घण्टाशंखश्च कोलाहलं कुरुतः। घटे ज्योतिप्रकाशं प्रसरति॥ ७ ॥
अनहद शब्द लगा अब गरजन । चढ़ कर पहुँची गगन मँझार ॥ ८ ॥	अधुना अनाहतशब्द: गर्जति। गगनमध्ये आरुह्य गतवान्॥ ८ ॥
`द्वारा फोड़ गई अब सुन में न्हाई मानसर मैल उतार ॥ ९ ॥	द्वारं स्फुट्य सुन्नपदं गतवान्। मालिन्यम् अपसृत्य मानसरसि स्नातः॥ ९ ॥
भँवर गुफा का देख उजारा । बीन सुनी सतगुरु दरबार ॥१०॥	भँवरगुहायाः प्रकाशं दृष्ट्वा। सद्गुरुसदने अहितुण्डवाद्यं श्रुतम्॥ १० ॥
अलख अगम के पार चढ़ाई । राधास्वामी चरन मिला आधार ॥११॥	अलखागमयो: पारं आरोहयितः। राधास्वामीचरणयो: आधार: प्राप्तः॥ ११ ॥
तन मन तोड़ किया जब सतसँग । भोग बासना दई निकार ॥१२॥	तनुमनसी त्रुट्वा कृत: यदा सत्सङ्ग: । भोगवासनाश्च निष्कासिताः॥ १२ ॥
गुरु चरनन में प्रीति घनेरी । कीन्हीं हिये से तन मन वार ॥१३॥	गुरुचरणौ दृढ़प्रीतिः । हृदनेन तनुमनसी समर्पितौ ॥ १३ ॥
दीन ग़रीबी धार चित्त में । मन के मान दिये सब झाड़ ॥१४॥	दैन्यदारिद्रयञ्च चित्ते धार्य। मनसः सर्वे माना: अपसृताः ॥ १४ ॥

तब गुरु परसन होय मेहर से । अंग लगाया किरपा धार ॥ १५ ॥	तदा गुरु: कृपया प्रसन्नं भूत्वा । अङ्गे अयुञ्जन् कृपां धार्य ॥ १५ ॥
अस सतसंग करे जो कोई । सोई जावे भौजल पार ॥ १६ ॥	ईदृशं सत्सङ्गम् करोति यो कोऽपि। सैव भवसागरात् तरति॥ १६ ॥
राधास्वामी परम गुरू दातारा । पहुँचायें फिर निज घर बार ॥ १७ ॥	राधास्वामीदयालु: परमगुरुदाता। निजगृहं प्रापयन्ति॥ १७ ॥
होय निचिन्त बसे सुख सागर । हर दम राधास्वामी दरस निहार ॥ १८ ॥	निश्चिन्तीभूय सुखसागरे वसति। प्रतिपलं राधास्वामीदर्शनं करोति॥ १८ ॥
अचरज नाम और अचरज रूपा । अचरज मेहर का वार न पार ॥ १९ ॥	अद्भुतनाम अद्भुतरूपञ्च । अद्भुतदयायाः न काऽपि चरमसीमा ॥ १९ ॥
लख लख भाग सराहत अपना । राधास्वामी चरन पकड़ रही सार ॥ २० ॥	पुन: पुन: दृष्ट्वा स्वभाग्यं प्रशंसति। राधास्वामीचरणसारं गृह्णाति ॥ २० ॥
राधास्वामी दयाल सरन हिये धारी। उन मेहर से दिया मेरा काज सँवार ॥ २१ ॥	राधास्वामीदयालो: शरणं हृदये धृतम्। आशीर्वृष्ट्या मम कार्यं सम्पन्नम् ॥ २१ ॥

॥ शब्द १२ ॥ सुरतिया हरष रही	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया हरष रही । निरखत गुरु चरन बिलास ॥ १ ॥	आत्मा हर्षति । गुरु चरणविलासं पश्यति ॥ १ ॥
बिगसत खेलत संग गुरू के । दिन दिन बढ़त हुलास ॥ २ ॥	गुरुणासार्धं हर्षति क्रीडति। प्रतिदिनं उल्लासं वर्धते॥ २ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़त चरनन में । तजत काम और भोग बिलास ॥ ३ ॥	प्रीतिप्रतीतिश्च चरणयो: वर्धते। कामं भोगविलासान् च त्यजति॥ ३ ॥
उमँग उमँग कर गावत बानी । मगन होय रह गुरु के पास ॥ ४ ॥	अत्युत्साहेन वाणीं गायति। तन्मयीभूय गुरुसमीपं वसति॥ ४ ॥
चित दे सुनत बचन सतसँग के । चेत करत घट में अभ्यास ॥ ५ ॥	चित्तेन सत्संगप्रवचनानि श्रृणोति। चैतन्यीभूय घटे अभ्यासं करोति॥ ५ ॥
मन और सुरत सिमट कर चालें । तजत देश जहँ माया बास ॥ ६ ॥	मन: आत्मा च संकुचितं भूत्वा चलत:। त्यजत: देशं मायावासं यत्र ॥ ६ ॥
तीसर तिल धस सुनती बाजा । लखती जहँ वहँ जोत उजास ॥ ७ ॥	षष्ठचक्रे प्रविश्य वाद्यं श्रृणोति। पश्यति ज्योते: प्रकाशं यत्र-तत्र ॥ ७ ॥
गगन ओर धावत सुत प्यारी । पावत काल तरास ॥ ८ ॥	प्रियात्मा गगनं प्रति धावति। बिभेति कालत्रासत: ॥ ८ ॥
अधर चढ़त सुन २ धुन अक्षर । सुन में हंसन संग बिलास ॥ ९ ॥	श्रावं श्रावं अक्षरध्वनिम् अधरम् आरोहति। सुन्नपदे हंसै: सह विलसति॥ ९ ॥
चित्त रहे चरनन लौलीना । काल करम बैठे सब हार ॥ १० ॥	चित्तं चरणयो: लयलीनं भवति। कालकर्माणि सर्वानि पराजितानि॥ १० ॥
मैं अति दीन हीन और निरबल । जियत रहूँ राधास्वामी अधार ॥ ११ ॥	अति दीनहीननिर्बलश्चाहम् । राधास्वामीआश्रये जीवामि॥ ११ ॥
केल करूँ नित उनके संगा । राधास्वामी बल ले रहूँ हुशियार ॥ १२ ॥	तैः सह नित्यं विलासं करोमि। राधास्वामीबलं धार्य दक्षः भवामि॥ १२ ॥
मैं बालक उन सरन अधारा । राधास्वामी किया मेरा निज उपकार ॥ १३ ॥	बालोऽहं तेषां शरणाधारे । राधास्वामीदयालु: मयि निजोपकारं कृतवन्तः॥ १३ ॥
आपहि खैंच लिया सतसँग में ।	स्वयमेव सत्संगे आकृष्टवन्त:।

आप दिखाया निज दीदार ॥ १४ ॥	भवन्तः निजदर्शनं दर्शितवन्तः॥ १४ ॥
राधास्वामी महिमा कहत न आवे । राधास्वामी राधास्वामी कहूँ हर बार ॥ १५॥	राधास्वामीमहिमां वर्णितुं न शक्यते। प्रतिवारम् राधास्वामीराधास्वामी इति वदामि॥ १५ ॥
चरन अमी रस पियत रहूँ नित । राधास्वामी प्रेम रहूँ सरशार ॥ १६ ॥	नित्यं चरणामृतरसं पिबामि। राधास्वामीप्रेम्णि उन्मत्तं भवेयम्॥ १६॥
भँवरगुफा धुन सुन गई आगे । निज सूरज सँग मिला अभास ॥ १७ ॥	भँवरगुहायाः ध्वनिं श्रुत्वा अग्रे गतः। निजसूर्येण सह प्राप्ताभासः॥ १७॥
अलख अगम लख हुई अचिन्ती । मिल गई प्रेमानंद की रास ॥ १८॥	अलखागमौ पश्य निश्चिंतः जातः। प्रेमानन्दयोः भाण्डागारं प्राप्तम्॥ १८ ॥
प्रेम पियारी सुरत रँगीली । प्यारे राधास्वामी की हुई ख़वास ॥ १९ ॥	प्रेम्णाप्रियः रसिकात्मा । राधास्वामीप्रियाणाम् प्रियसेवक अभूत्॥ १९ ॥
दरशन कर अति कर मगनानी । पाय गई धुर धाम निवास ॥ २०॥	दर्शनं कृत्वा अति मग्न अभूत्। सर्वोच्चपदे निवासं प्राप्तम् ॥ २० ॥
प्रेम प्रताप छाय रहा घट में । प्रेम स्वरूप किया हिरदे बास ॥ २१ ॥	प्रेम्णः प्रतापः घटे व्याप्यते। प्रेमस्वरूपेण हृदये वासं कृतवान्॥ २१॥
यह गत मत है अगम अपारा । पावे मेहर से कोइ निज दास ॥ २२॥	गतिरियं मतं च इदं अगमापारम् । कश्चिद् विरलः दासः आशीर्वृष्ट्या प्राप्नोति॥ २२ ॥
कर सतसंग गहे स्वामी सरना । सुरत चढ़ावे निज आकाश ॥ २३ ॥	सत्संगं कृत्वा स्वामीशरणं गृह्णाति। निजाकाशे आत्मानम् आरोहयति॥ २३ ॥
सुरत होय तब स्वामी प्यारी । प्रेम की दौलत पावे ख़ास ॥ २४॥	तदा आत्मा स्वामीप्रियः भूत्वा । प्रेम्णः सम्पदाविशेषम् प्राप्नोति॥ २४॥
राधास्वामी मेहर दृष्टि से हेरें । प्रेम दुलार होय ख़ासुल्ख़ास॥ २५॥	राधास्वामीदाता कृपादृष्ट्या पश्यन्ति। विशिष्टः प्रेमानुरागः भवति॥ २५ ॥
जो अस दुर्लभ भक्ति कमावे । जावे निज घर बिन परियास ॥ २६ ॥	यो ईदृशीं दुर्लभभक्तिम् अर्जयति। प्रयासं विना निजगृहं गच्छति॥ २६॥
सुरत निमानी मेरी स्वामी सँवारी । गावत उन गुन स्वाँसो स्वाँस ॥ २७ ॥	मम दीनात्मा स्वामिना संरक्षितः। प्रतिश्वासं तेषां गुणान् गायामि॥ २७ ॥
प्रेम दुलारी शब्द पियारी । होय निहाल बैठी चरनन पास ॥ २८ ॥	प्रेमप्रियः शब्दप्रियश्च। पूर्णसंतुष्टं भूत्वा चरणसमीपम् असादयत् ॥ २८ ॥
दयाल सरन ले काज बनाया ।	दयालशरणं धार्य कार्यं सिद्धम्।

तज दिया जग का मोह और आस ॥ २९॥	जगत: मोहं आशां च अत्यजताम्॥ २९॥
प्रेम अधार जियत सुत प्यारी । जग से रहती सहज उदास ॥ ३० ॥	प्रियात्मा प्रेमाधारे जीवति। जगत: सहजोदासः वसति॥ ३० ॥
धूम हुई भक्ती की भारी । करम भरम सब हो गये नाश ॥ ३१॥	भक्ते अतिकोलाहलं जातम् । सर्वे कर्मधर्माश्च नष्टा:॥ ३१ ॥
प्रेम अधारी सुरत शिरोमन । आरत दीपक करती चास ॥ ३२ ॥	प्रेमाधारे शिरोमणिः आत्मा । दीपकेन तीव्रारतिं करोति॥ ३२ ॥
सब सखियाँ मिलआरत गावें । राधास्वामी चरनन धर विश्वास ॥ ३३ ॥	सर्वा: सख्यः मिलित्वा आरतिं गायन्ति। राधास्वामीचरणयो: विश्वासं धार्य॥ ३३ ॥
दया करी राधास्वामी प्यारे । घट घट कीन्हा प्रेम प्रकाश ॥ ३४॥	राधास्वामीप्रिय: दयां कृतवन्त:। प्रतिघटं प्रेमप्रकाशं कृतवन्त:॥ ३४॥

॥ शब्द १३ ॥ सुरतिया ध्याय रही	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया ध्याय रही । गुरु रूप हिये धर प्यार ॥ १ ॥	आत्मा ध्यायति । हृदये गुरुस्वरूपस्य प्रेम धृत्वा॥ १ ॥
शब्द सुनत हरषत नित घट में । परखत मेहर अपार ॥ २ ॥	नित्यं घटे शब्दं शृण्वन् हर्षति। अपारदयां परीक्षते॥ २ ॥
मगन होय नित गुरु गुन गावत। हिये से करत पुकार ॥ ३ ॥	तन्मयीभूय नित्यं गुरुगुणान् गायति। आह्वयति हृदयेन ॥ ३ ॥
वाह वाह मेरे गुरु दयाला। वाह वाह मेरे पिता दयार ॥ ४ ॥	धन्यः धन्यः मम गुरुदयालु: । धन्यः धन्यः मम पितादयालु: ॥ ४ ॥
वाह वाह मेरे प्यारे राधास्वामी । वाह वाह मेरे सत करतार ॥ ५ ॥	धन्यः धन्यः मम राधास्वामीप्रिय:। धन्यः धन्यः मम सत्कर्तारः ॥ ५ ॥
जस जस मेहर करी मेरे ऊपर। कस कस गाऊँ तुम गुन सार ॥ ६ ॥	यथा यथा कृता कृपा मयि। कथं कथं गायेयं सारं तव गुणानाम् ॥ ६ ॥
कहत कहत मोसे कहत न आवे । नित नित रहूँ मैं शुकरगुज़ार ॥ ७ ॥	कथयत् कथयत् न शक्नोमि कथितुम्। नित्यं नित्यं करोम्यहं धन्यवादम् ॥ ७ ॥
लिपट रहूँ चरनन में हित से। कभी न छोड़ूँ अमृत धार ॥ ८ ॥	चरणयोः प्रेम्णा लिप्लिम्पामि । कदापि अमृतधारां न त्यजामि॥ ८ ॥
चित्त रहे चरनन लौलीना । काल करम बैठे सब हार ॥ ९ ॥	चित्तः चरणयोः तन्मयः भवेत्। कालकर्माणि सर्वाणि श्रान्तानि॥ ९ ॥
मैं अति दीन हीन और निरवल । जियत रहूँ राधास्वामी अधार ॥१०॥	अहं अति दीनहीननिर्बलश्च । राधास्वामीदयालो आश्रये जीवामि॥ १० ॥
केल करूँ नित उनके संगा । राधास्वामी बल ले रहूँ हुशियार ॥११॥	नित्यं तैः सह विलासं करोमि । राधास्वामीबलेन साकं चैतन्यं भवामि॥ ११ ॥
मैं बालक उन सरन अधारा । राधास्वामी किया मेरा निज उपकार ॥१२॥	बालकोऽहं तेषां शरणाधारे । राधास्वामीदयालुः ममोपकारं कृतवन्त:॥ १२ ॥
आपहि खैंच लिया सतसँग में । आप दिखाया निज दीदार ॥१३॥	भवान् आकृष्टवन्तः सत्संगे । भवान् अकारयत् स्वदर्शनम्॥ १३ ॥
राधास्वामी महिमा कहत न आवे ।	राधास्वामीमहिमां कथयितुं न शक्यते ।

राधास्वामी राधास्वामी कहूँ हर बार ॥१४॥	राधास्वामी राधास्वामी, इति कथयामि प्रतिवारम्॥ १४ ॥
चरन अमी रस पियत रहूँ नित । राधास्वामी प्रेम रहूँ सरशार ॥१५॥	नित्यं चरणामृतरसं पिबामि । राधास्वामी प्रेम्णि उन्मत्तः भवामि॥ १५ ॥

॥ शब्द ७ ॥ सुरतिया सोच करत	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया सोच करत । अब किस बिध उतरूँ पार ॥ १ ॥	आत्मा चिन्तयति। केन विधिना पारम् अवतरामि॥ १ ॥
गुरु भेदी ने पता बताया। सुरत शब्द मारग रहो धार ॥ २ ॥	भेदीगुरुणा सङ्केतं कृतम्। सुरतशब्दमार्गं धारयतु ॥ २ ॥
सतसँग करो बचन चित धारो । मन इंद्रिन को रोको झार ॥ ३ ॥	सत्संगं कुरु वचनं चित्ते धर । मनः इन्द्रियान् च सर्वान् रुन्धि॥ ३ ॥
गुरु परतीत प्रीति हिये धर कर । करनी करो सम्हार ॥ ४ ॥	गुरुप्रतीतिप्रीतिञ्च हृदये आधृत्य। अवधानेन कर्म कुरु॥ ४ ॥
सुन अस बचन उमँग हुई भारी। पहुँची गुरु दरबार ॥ ५ ॥	जातोत्साहाधिकः ईदृशं वचनं श्रुत्वा। गुरुसदनम् गतवान्॥ ५ ॥
बचन सुनत मन निश्चय बाढ़ा । संशय भरम निकार ॥ ६ ॥	वचनं श्रुत्वा मनसि निश्चयः अवर्धत। विहाय संशयभ्रमान् च॥ ६ ॥
गुरु दयाल नित कहत पुकारी । घट में ले उपदेश सम्हार ॥ ७ ॥	गुरुदयालुः नित्यं आह्वानं कृत्य कथयन्ति। घटे उपदेशं संरक्ष॥ ७ ॥
यह मन चंचल बूझ न लावे । जग में भरमे जुगत बिसार ॥ ८ ॥	इदं चञ्चलमनः न बुध्यते । युक्तिं विस्मृत्य जगति भ्रमति॥ ८ ॥
मुझ निरबल की पेश न जावे । मेहर करो हे गुरू दयार ॥ ९ ॥	मम निर्बलस्य कोऽपि बलं न चलति। हे गुरो! कुर्यादाशीर्वृष्टिम् ॥ ९ ॥
ऐसी दया करो मेरे दाता। चरनन में रहूँ नित हुशियार ॥ १० ॥	मम दाता ईदृशीं दयां कुर्याद्। नित्यप्रबुद्धं भवेयं चरणौ॥ १० ॥
ध्यान धरत मोहि मिले अनंदा । शब्द सुनत मन होय सरशार ॥११॥	ध्यानं धरत् आनन्दं प्राप्नुयात्। शब्दं श्रृण्वन् मनोन्मत्तः भूयात्॥ ११ ॥
काल बिघन सब दूर हटाओ। मेहर से मुझको लेव सम्हार ॥१२॥	सर्वे कालविघ्ना अपसारयेयु:। कृपया मां संरक्षेयु:॥ १२ ॥
चरन सरन हिये दृढ़ कर धारूँ । रहूँ दया का भरोसा धार ॥१३॥	चरणशरणं हृदये दार्ढ्यन दधामि। दयाया: दृढविश्वासं दधामि॥ १३ ॥
गुरु दयाल सब काज सँवारें । बिरथा चिन्ता देउँ बिसार ॥१४॥	गुरुदयालु: सर्वकार्याणि संरक्षन्ति। व्यर्थचिन्तां विस्मरामि॥ १४ ॥

जो कुछ होय मौज से गुरु के। ता में परखूँ दया बिचार ॥ १५ ॥	गुरो इच्छया यत् किमपि भवति। तस्मिन् परीक्षे दयां विचार्य ॥ १५ ॥
भक्ती रीत सम्हारूँ निस दिन । प्रेम की दौलत पाऊँ अपार ॥१६॥	प्रतिदिनं भक्तिरीतिं संरक्षामि। प्रेम्ण: अपार सम्पदां प्राप्नोमि॥ १६ ॥
दरशन की रहूँ उमँग जगाई । सेवा करूँ हिये धर प्यार ॥१७॥	दर्शनस्य उत्साहं जागर्मि। हृदये प्रेम धृत्वा सेवे॥ १७ ॥
परमारथ का भाग बढ़ाऊँ । गाऊँ गुरु गुन बारम्बार ॥ १८ ॥	परमार्थस्य भाग्यं वर्धे। गुरुगुणान् पुन: पुन: गायामि॥ १८ ॥
सुरत रहे चरनन में लागी । घट में निरखूँ बिमल बहार ॥१९॥	युज्येदात्मा चरणयोः । घटे विमलविलासं निरीक्षे॥ १९ ॥
अपना कर मोहि लेव सम्हारी । मन के देव बिकार निकार ॥२०॥	मां स्वीकृत्य संरक्षेयु:। मनसः विकारान् अपसरेयु:॥ २० ॥
काल करम से खूँट छुड़ाओ । निरमल कर लेव गोद बिठार ॥२१॥	कालकर्मेभ्यः क्षोड: मोचयेयु:। पवित्रं कृत्वा अङ्के आसयेयु:॥ २१ ॥
यह अरज़ी मानो अब मेरी । राधास्वामी प्यारे सत करतार ॥२२॥	अधुना इयं मम प्रार्थनां स्वीकुर्यु: । राधास्वामीप्रिय: सत्तकर्त्तार:॥ २२ ॥

॥ शब्द १५ ॥ सुरतिया उमँग भरी	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया उमँग भरी । होली खेलत आज नई ॥ १ ॥	आत्मा उत्साहेन पूर्ण: । अद्य नवीनहोलीं क्रीडति॥ १ ॥
जग का मैला रंग निकारत । निरमल धार बही ॥ २ ॥	जगतः मलिनं रङ्गं निष्कासयति। निर्मलधारा प्रवहिता॥ २ ॥
हिये में निस दिन प्रीति बसावत । जग का मोह बिसार दई ॥ ३ ॥	नित्यं हृदये प्रीतिं वासयति। जगतः मोहं विस्मृतम् ॥ ३ ॥
प्रेम रंग ले खेलत गुरु से । अचरज होली आज सही ॥ ४ ॥	प्रेमरङ्गेन गुरुणा सह क्रीडति। विचित्रा होली अद्य उचितम् ॥ ४ ॥
सुरत रँगीली चढ़त अधर में । गगना ओर गई ॥ ५ ॥	रसिकात्मा अधरेआरोहति। गगनं प्रति गतः॥ ५ ॥
गुरु स्वरूप का दरशन करके । उमँग उमँग अब चरन पई ॥ ६ ॥	गुरुस्वरूपस्य दर्शनं कृत्वा। अत्युत्साहेन चरणौ पतितः॥ ६ ॥
राधास्वामी दया निरख कर । हिये में मगन भई ॥ ७ ॥	राधास्वामीदयां निरीक्ष्य। हृदये मग्न अभूत्॥ ७ ॥

॥ शब्द १६ ॥ सुरतिया मगन हुई	
हिंदी	संस्कृत
सुरतिया मगन हुई । घट शब्द का आनंद पाय ॥ १ ॥	आत्मा मग्न: भूत:। घटे शब्दानन्दं प्राप्य॥ १ ॥
तन मन से गुरु सेवा करती । हिये में उमँग जगाय ॥ २ ॥	तनुमनसा च गुरुसेवां करोति। हृदये उल्लासं जागरित्वा॥ २ ॥
सतसँग बचन चित्त से सुनती । मनन करत मन को समझाय ॥ ३ ॥	सत्संगवचनान् सुचित्तेन श्रृणोति। चिन्तनं कृत्वा मनः बोधयति॥ ३ ॥
करनी की अभिलाषा भारी । सुरत सम्हार शब्द सँग धाय ॥ ४ ॥	महती अभिलाषा क्रियायाः । परिष्कृत्य आत्मानं शब्देन सह धावति॥ ४ ॥
मन को मोड़त तन को तोड़त । अमृत रस घट पियत अघाय ॥ ५ ॥	मनः प्रत्यावर्तति तनुं त्रोटयति। घटे तृप्तं भूत्वा अमृतरसं पिबति॥ ५ ॥
जब तब माया देत झकोले । गुरु का बल ले ताहि हटाय ॥ ६ ॥	यदा तदा क्षोभते माया । गुरुबलेन ताम् अपसरति ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया परख कर घट में । सहज सहज जिव काज बनाय ॥ ७ ॥	घटे राधास्वामीदयां परीक्ष्य। सहजं सहजं जीवस्य कार्यं सिद्धम् ॥ ७ ॥

॥ शब्द १ ॥ पिरेमी सुरत रँगीली आय	
हिंदी	संस्कृत
पिरेमी सुरत रँगीली आय । दिया सतसँग में प्रेम जगाय ॥ १ ॥	प्रिय: रसिकश्चात्मा आगतवान्। सत्सङ्गे प्रेम जागृतवान् ॥ १ ॥
दरस गुरु पाय मगन होती । बचन सुन मल हिये से धोती ॥ २ ॥	गुरुदर्शनं प्राप्य मग्नः भवति। वचनं श्रुत्वा हृदयात् मालिन्यं प्रक्षालयति॥ २ ॥
बढ़ावत सतसँगियन से प्रीत । पकावत हिये में गुरु परतीत ॥ ३ ॥	सत्संगीजनैः सह प्रीतिं वर्धयति। हृदये गुरुप्रीतिं पाचयति॥ ३ ॥
हरषती निरखत गुरु सजना । फड़कती गावत गुरु बचना ॥ ४ ॥	गुरुप्रियतमं पश्य हृष्यति। गुरुवचनानि गायन् स्पन्दते ॥ ४ ॥
गुरू की शोभा निरख निहार । मगन होय डारत तन मन वार ॥ ५ ॥	गुरुशोभां निरीक्ष्य समीक्ष्य। तन्मयीभूय तनुमनसो: अर्पणं करोति॥ ५ ॥
भाव नित नया नया दिखलाती । गुरू की छबि पर बल जाती ॥ ६ ॥	नित्यं नवनवभावं दर्शयति। गुरुछवौ समर्पणं करोति॥ ६ ॥
लगा अब रूखा जग ब्यौहार । मिला परमारथ सार का सार ॥ ७ ॥	इदानीं जगद् व्यवहारः रुक्षः प्रतीत:। सारस्यसारः परमार्थ: प्राप्त:॥ ७ ॥
प्रेम का किनका गुरु दीना । सुरत रहे चरनन लौ लीना ॥ ८ ॥	गुरुणा प्रेम्णः कणः प्रदत्त:। आत्मा चरणयो: लयलीन: भवति॥ ८ ॥
बिनय करूँ राधास्वामी चरनन में । प्रीति रहे बाढ़त दिन दिन में ॥ ९ ॥	राधास्वामीचरणयोः प्रार्थनां करोमि। प्रतिदिनं प्रीतिं वर्धेत॥ ९ ॥
मिले नित घट में रस आनंद । कटें सब काल करम के फंद ॥ १० ॥	नित्यं घटे रसानन्दं प्राप्नुयात्। कालकर्मणां सर्वे पाशाः कृन्तेयु:॥ १० ॥
सुरत रहे चरनन में लागी । रहे मन निस दिन अनुरागी ॥ ११ ॥	आत्मा चरणयोः युञ्ज्यात् । प्रतिदिनं मन: प्रेममयः भवेत्॥ ११ ॥
हुए परशन राधास्वामी दयाल । मेहर से कीना मोहि निहाल ॥ १२ ॥	राधास्वामीदयालु: प्रसन्नाः जाता:। कृपया मां कृतार्थं कृतवन्तः॥ १२ ॥
उमँग कर आरत सामाँ लाय । धरे सब गुरु के सन्मुख आय ॥ १३ ॥	उल्लासेन आरतिसामग्रीम् आनीय। गुरुसमक्षमागत्य स्थापिताः सर्वा: ॥ १३ ॥
चमक और दमक के बस्तर लाय ।	आभादीप्तिमया च वस्त्राणि आनीय। मग्नं भूत्वा गुरुम् अपरिधापयन्॥ १४ ॥

मगन होय गुरु को दिये पहिनाय ॥ १४ ॥	
निरख छबि हरख हुआ भारी । दया पर छिन छिन बलिहारी ॥ १५ ॥	छविं पश्य हर्षाधिकं जातम्। प्रतिक्षणं दयायां समर्पयामि॥ १५ ॥
आरती गाई उमँग उमंग । सुरत मन रँगे प्रेम के रंग ॥ १६ ॥	अत्युल्लासेन आरतिम् अगायत्। आत्मा मनश्च प्रेम्णि रङ्गे रंजितौ॥ १६ ॥
हंस सब जुड़ मिल नाच रहे । मधुर धुन बाजे बाज रहे ॥१७॥	सर्वे हंसाः मिलित्वा नृत्यन्ति । मधुरध्वनेः वाद्यानि नदन्ति॥ १७ ॥
हुई सतसँग में भारी धूम । नाच रहे सब मिल झूम और घूम ॥१८॥	सत्संगे अतिकोलाहल: जात: । सर्वे मिलित्वा नृत्यन्ति भ्रमन्ति च॥ १८ ॥
प्रेम की बरषा चहुँ दिस होय । सुरत रही सबकी चरन समोय ॥१९॥	सर्वत्र प्रेम्णः वर्षा भवति। सर्वेषामात्मा चरणयो: लीनः भवति ॥ १९ ॥
सुद्ध बुध देह बिसार रहे। गुरू पर तन मन वार रहे ॥२०॥	देहस्य चैतन्यं विस्मारयन्ति। गुरौ तनुमनसी समर्पयन्ति ॥ २० ॥
सुरत मन उमँग अधर चढ़ते । गगन में गुरु दर्शन करते ॥ २१॥	आत्मामनश्च उल्लसितं भूत्वा अधरम् आरोहतः। गगने गुरुदर्शनं कुरुत:॥ २१ ॥
अजब यह औसर आया हाथ । सुरत मन नाचत गुरु के साथ ॥२२॥	अद्भुतोऽयमवसर: प्राप्तः। आत्मामनश्च गुरुणा सह नृत्यतः॥ २२ ॥
सुन्न और महासुन्न के पार । सुरत गई सतपुरुष दरबार ॥२३॥	सुन्नमहासुन्नपदाभ्यां पारम् । सत्तपुरुषसदने आत्मा गत:॥ २३ ॥
अलख और अगम के पार ठिकान। चरन राधास्वामी परसे आन ॥२४॥	अलखागमपदाभ्यां पारस्थले । राधास्वामीचरणौ गर्वेण अस्पृशत्॥ २४ ॥
दया राधास्वामी की भारी। हुए सब प्रेमी सुखियारी ॥ २५॥	राधास्वामीदयालु: अतिदयां कृतवन्त:। सर्वे प्रेमीजना: आमोदितवन्तः॥ २५ ॥

॥ शब्द २ ॥ पिरेमन लाई आरती साज	
हिंदी	संस्कृत
पिरेमन लाई आरती साज । दिया गुरु भक्ति भाव का दाज ॥ १ ॥	अनुरागिणी आरते: सज्जोपकरणानि आनीतवती। गुरु: भक्तिभावस्य दानं दत्तवन्तः ॥ १ ॥
प्रीति हिये अंतर जाग रही । सुरत घट धुन सँग लाग रही ॥ २ ॥	प्रीति: घटान्तसि जागर्ति। आत्मा घटे ध्वनिना सह युनक्ति ॥ २ ॥
काल ने दीन्हा बहु झकझोर । मेहर हुई कट गया उसका ज़ोर ॥ ३ ॥	काल: अनेकझटका: अददुः। जाता दया अकृन्तत् तस्य बलम् ॥ ३ ॥
दया से करती नित सतसंग । बचन सुन बाढ़त चित्त उमंग ॥ ४ ॥	दयया नित्यं सत्सङ्गं करोमि। वचनं श्रुत्वा चित्ते उत्साहं वर्धते॥ ४ ॥
जगत का देखा झूठा खेल । करूँ अब प्रेमीजन से मेल ॥ ५ ॥	जगत: मिथ्याक्रीडा दृष्टा। इदानीं प्रेमीजनेन सह मेलनं करोमि ॥ ५ ॥
जगत जिव स्वारथ के बन्दे । फँसे सब काल करम फंदे ॥ ६ ॥	जगज्जीवाः स्वार्थस्य क्रीतदासा:। सर्वे कालकर्मणश्च पाशे बद्धीभूताः॥ ६ ॥
सुद्ध परमारथ की नहिं लाय । संत का बचन न चित ठहराय ॥ ७ ॥	परमार्थस्य स्मरणं विस्मृतम् । सन्तवचनं चित्ते स्थिरं न भवति ॥ ७ ॥
करें गुरु निंदा दिन और रात । पिरेमी जन से करें उतपात ॥ ८ ॥	अहर्निशं गुरुनिन्दां कुर्वन्ति। स्नेहीजनेन सह उत्पातं कुर्वन्ति॥ ८ ॥
संग उन चित से नहिं चाहूँ । बचन उन नेक न मन लाऊँ ॥ ९ ॥	चित्तेन तेषां सान्निध्यं न वाञ्छामि। लेशमात्रमपि तेषां वचनं मनसि न धारयामि॥ ९ ॥
करूँ गुरु भक्ती उमँग उमंग । प्रेम का धारूँ हिरदे रंग ॥ १० ॥	अत्युत्साहेन गुरुभक्तिं करोमि। हृदये प्रेम्ण: रङ्गं धारयामि॥ १० ॥
करें प्यारे राधास्वामी मेरी सहाय । काल के बिघन से लेहिं बचाय ॥ ११ ॥	राधास्वामीप्रियाः मम साहाय्यं कुर्यु:। कालविघ्नेभ्यः रक्षणं कुर्यु: ॥ ११ ॥
प्रीति चरनन की नित्त बढ़ाय । सुरत मन देवें अधर चढ़ाय ॥ १२ ॥	नित्यं चरणयो: प्रीतिं वर्धित्वा। आत्मामनसी अधरं आरोहयेयु: ॥ १२ ॥
सहसदल लखे जोत उजियार । संख और घंटा संग पियार ॥ १३ ॥	सहस्रदलपदे ज्योतेः प्रकाशः दृश्यते। शंखघंटाभ्यां सह प्रीति: जायते॥ १३ ॥
गगन चढ़ सुने गरज मिरदंग ।	आरुह्य गगनं गर्जनमृदंगध्वनिश्च श्रुतौ ।

सुन्न में बाजे धुन सारंग ॥ १४ ॥	सुन्नपदे सारंगध्वनिः नदति॥ १४ ॥
भँवर चढ़ पहुँची सतपुर धाय । पुरुष का दर्शन अद्‌भुत पाय ॥ १५ ॥	आरुह्य भँवरपदं धावित्वा सतपुरं गतवान् । पुरुषस्य अद्‌भुतदर्शनं प्राप्तवान्॥ १५ ॥
परे चढ़ निरखा राधास्वामी धाम । वही है अकह अपार अनाम ॥ १६ ॥	आरुह्याग्रे राधास्वामीधामं(धाम) निरीक्षितम्। सैवास्ति अकहापारानामश्च ॥ १६ ॥
मेहर बिन कस पावे यह ठाम । दया बिन मिले नहीं निज नाम ॥ १७ ॥	कृपां विना पदोऽयं कथं प्राप्तुं शक्यते । दयां विना निजनाम न प्राप्नोति॥ १७ ॥
दिया मेरा राधास्वामी भाग जगाय । मेहर से लीन्हा मोहि अपनाय ॥ १८ ॥	राधास्वामीदाता मम भाग्यं जागृतवन्तः । स्वीकृतवन्तः मां कृपया ॥ १८ ॥
चरन में राधास्वामी खेलूँ नित्त । धार रहूँ राधास्वामी बल निज चित्त ॥ १९ ॥	नित्यं राधास्वामीचरणयोः क्रीडामि। राधास्वामीबलं निजचित्ते दधामि॥ १९ ॥

॥ शब्द ३ ॥ बिरहनी सूरत हिये धर प्यार	
हिंदी	संस्कृत
बिरहनी सुरत हिये धर प्यार । उमँग कर आई गुरु दरबार ॥ १ ॥	विरही आत्मा हृदये प्रेम आधृत्य। उल्लसितं भूत्वा गुरुसदने आगत:॥ १ ॥
नेम से दरशन करती नित्त । चरन में धरती हित कर चित्त ॥ २ ॥	नियमेन नित्यं दर्शनं करोति। चरणयो: हितेन चित्तं धरति॥ २ ॥
रहे यह चिन्ता चित्त समान । जीव का होवे कस कल्यान ॥ ३ ॥	इयमेव चिन्ता चित्ते संविशति। जीवस्य कल्याणं कथं भवेत् ॥ ३ ॥
करत नित प्रति अभ्यास सम्हार । सुधारत मन को इच्छा मार ॥ ४ ॥	नित्यप्रतिं अवधानेन अभ्यासं करोति। इच्छां नष्ट्वा मनः सुधारयति॥ ४ ॥
भोग जग चित से देत बिसार । बचन गुरु सुन २ करत बिचार ॥ ५ ॥	जगद्भोगान् चित्तात् विस्मरति। गुरुवचनं श्रावं श्रावं चिन्तनं करोति॥ ५ ॥
तजत छिन २ मन माया देश । शब्द में करत सुरत परवेश ॥ ६ ॥	प्रतिक्षणं मनमायादेशं त्यजति। आत्मा शब्दे प्रविशति॥ ६ ॥
संख और घंटा धुन सुनती । सुरत मन खैंच अधर धरती ॥ ७ ॥	शंखघंटायाश्च ध्वनिं श्रृणोति । आत्मानं च मनश्च अधरे आकृष्य धरति॥ ७ ॥
सूर लख चंद्र का दर्शन पाय । गुफा चढ़ सोहं शब्द सुनाय ॥ ८ ॥	सूर्यं दृष्ट्वा इन्दुदर्शनं प्राप्य । गुहायां आरुह्य सोहं शब्दं श्रृणोति ॥ ८ ॥
पुरुष का दर्शन सतपुर कीन । सुनी वहँ मधुर मधुर धुन बीन ॥ ९ ॥	सतपुरपदे पुरुषस्य दर्शनं प्राप्तम्। यत्र अतिमधुरं अहितुण्डवाद्यस्य ध्वनिः श्रुत:॥ ९ ॥
परे तिस राधास्वामी दर्शन पाय । लिया मोहि अपने चरन लगाय ॥ १० ॥	तस्मादग्रे राधास्वामीदर्शनं प्राप्तम् । स्वचरणयो: मां अयुञ्जन्॥ १० ॥
आरती चरनन में धारी । मेहर मोपै राधास्वामी की भारी ॥ ११ ॥	चरणयो आरती धृता। राधास्वामीदयालु: मां महती कृपां कृतवन्तः ॥ ११ ॥
काज मेरा सब बिधि पूरा कीन । सुरत हुई राधास्वामी चरनन लीन ॥ १२ ॥	सर्वविधिना मम कार्यं पूर्णं कृतवन्तः। राधास्वामीचरणयोः आत्मा लीन: जात:॥ १२ ॥

॥ शब्द ४ ॥ गुरु की धर हिये में परतीत	
हिन्दी	संस्कृत
गुरु की धर हिये में परतीत । बढ़ावत दिन दिन चरनन प्रीत ॥ १ ॥	गुरो: प्रतीतिं हृदये आधृत्य। प्रतिदिनं चरणयोः प्रतीतिं वर्धयति॥ १ ॥
ध्यान धर मन होवत निश्चल । भजन कर चित होवत निर्मल ॥ २ ॥	ध्यानं धृत्वा मनः निश्चलं भवति। भजनं कृत्वा चित्तं निर्मलं भवति॥ २ ॥
सरन गह करम होत निष्फल । बचन सुन दूर भरम कलमल ॥ ३ ॥	शरणं गृहीत्वा कर्म निष्फलं भवति। वचनं श्रुत्वा भ्रमकालमालिन्यञ्च अपसरन्ति॥ ३ ॥
जगत का देख तमाशा आय । भोग जग आसा गई विलाय ॥ ४ ॥	दृष्ट्वा जगतः कौतुकमागत्य । अपसृता जगद् भोगाः आशा च ॥ ४ ॥
धरत मन दर्शन की आसा । चहत मन चरनन में बासा ॥ ५॥	मनः दर्शनस्य आशां धरति। मनः चरणयो: वासं वाञ्छति॥ ५ ॥
शब्द का मारग जाना सार । नेम से करत अभ्यास सम्हार ॥ ६ ॥	शब्दस्य मार्गसारं ज्ञातम्। नियमेन अवधानेन अभ्यासं करोमि॥ ६ ॥
मेहर गुरु माँग रहा निस दिन । सुरत मन घट में करें दरशन ॥ ७ ॥	प्रतिदिनं गुरुकृपां याचामि। आत्मामनश्च घटे दर्शनं कुरुतः॥ ७ ॥
सिमट कर चढ़ें गगन की ओर । सुनें धुन घंट और घनघोर ॥ ८ ॥	संकुचितं भूत्वा गगनं प्रति आरोहेताम्। घंटाध्वनिं घूर्णनं च शृणुयाताम्॥ ८ ॥
परे जाय सुन में निरख बिलास । अधर चढ़ करें भँवर गढ़ बास ॥ ९ ॥	अग्रे गत्वा सुन्नपदविलासं निरीक्ष्य । आरुह्य अधरं भँवरदुर्गे वासं कुरुतः॥ ९ ॥
परे लख सत्तपुरुष का नूर। अलख और अगम का पाय सरूर ।१०।	अग्रे सत्तपुरुषस्य प्रकाशं दृष्ट्वा। अलखस्य च अगमस्य च आनन्दं प्राप्तम्॥ १० ॥
अचल घर राधास्वामी चरन रली । मेहर हुई पिया से जाय मिली ॥११॥	अचलगृहं राधास्वामीचरणयो: लीन: भूतः। जाता कृपा प्रियेण अमिलत् ॥ ११ ॥

॥ शब्द ५ ॥ प्रेम गुरु रहा हिये में छाय	
हिंदी	संस्कृत
प्रेम गुरु रहा हिये में छाय । सुरत अब नई २ उमँग जगाय ॥ १ ॥	गुरुप्रेम हृदये व्यापनोति। इदानीं आत्मा नवनवोत्साहं जागर्ति ॥ १ ॥
चहत नित सतगुरु का सतसंग । सुरत मन भींज रहे गुरु रंग ॥ २ ॥	नित्यं सद्गुरुसान्निध्यं वाञ्छति। आत्मा मनश्च गुरुरङ्गे आर्द्रं भवतः॥ २ ॥
बचन सुन होत मगन मन सूर । करम और भरम हुए सब दूर ॥ ३ ॥	वचनं श्रुत्वा शूरमन: मग्नं भवति। सर्वकर्मभ्रमाश्च अपसरन्ति॥ ३ ॥
निरखती मन इंद्री की चाल । करन चहे दूतन को पामाल ॥ ४ ॥	मनसः इन्द्रियाणाञ्च गतिं निरीक्षते। दूतान् ध्वस्तकर्तुं वाञ्छति॥ ४ ॥
निरख कर धारत गुरु का ढंग । परख कर झाड़त माया रंग ॥ ५ ॥	निरीक्ष्य गुरुविधिं धरति। परीक्ष्य मायारङ्गम् अपमार्जयति॥ ५ ॥
जगत का परखत फीका रंग । समझ कर त्यागत सबहि कुसंग ॥ ६ ॥	जगतः नीरसं रङ्गं परीक्षते। सर्वं कुसङ्गं बुद्ध्वा त्यजति॥ ६ ॥
चरन गुरु हर दम याद बढ़ाय । रूप गुरु रखती हिये बसाय ॥ ७ ॥	गुरुचरणयोः प्रतिपलं स्मरणं वर्धयति गुरुस्वरूपं हृदये वासयति॥ ७ ॥
काल रहा डारत बिघन अनेक । काट रही धर सतगुरु की टेक ॥ ८ ॥	काल: अनेकविघ्नान् उत्पन्नं करोति। सद्गुरो आश्रयं धार्य कृन्तति॥ ८ ॥
गढ़त मेरी राधास्वामी करते आप। दया का अपने धर कर हाथ ॥ ९ ॥	राधास्वामीप्रिय: स्वयं मां घटयति । दयया स्व हस्तं धृत्वा॥ ९ ॥
पिता प्यारे राधास्वामी दीनदयाल । अनेक बिधि कर रहे मेरी सम्हाल ॥१०॥	पिताप्रिय: राधास्वामीदीनदयालु:। अनेकश: मम साहाय्यं कुर्वन्ति॥ १० ॥
गाउँ क्या महिमा उनकी सार । दई मोहि चरन सरन कर प्यार ॥११॥	कथं गायेयं तेषां महिमासारम्। मां चरणशरणम् अददन् प्रेम कृत्वा॥ ११ ॥
बिना राधास्वामी और न कोय । लेय जो मन मलीन को धोय ॥१२॥	राधास्वामीदयालुं विना नान्यः कोऽपि। यो मलिनं मन: प्रक्षालयेत् ॥ १२ ॥
अबल मैं कस उन गुन गाऊँ चरन पर नित बल बल जाऊँ ॥१३॥	निर्बलोऽहम् तेषां गुणान् कथं गायेयम् । चरणयो: नित्यं समर्पयामि॥ १३ ॥

भरोसा मेहर का हियरे धार । जिऊँ मैं राधास्वामी नाम अधार ॥ १४ ॥	हृदये कृपायाः प्रतीतिं धृत्वा। जीवाम्यहं राधास्वामीनामाधारे ॥ १४ ॥
तड़प दर्शन की उठत हर बार । बिबस मैं बैठ रहूँ मन मार ॥ १५ ॥	प्रतिवारं दर्शनस्य व्याकुलता जायते। विवशोऽहं सीदामि हत्वा मनः ॥ १५ ॥
चरन गहि अंतर में धाऊँ । दरस राधास्वामी वहँ पाऊँ ॥ १६ ॥	चरणौ गृहीत्वा अन्तसि धावामि। तत्र राधास्वामी दर्शनं प्राप्नोमि॥ १६ ॥
करो प्यारे राधास्वामी ऐसी मेहर । सुरत मन चरनन में रहें ठहर ॥१७॥	राधास्वामीप्रियः ईदृशीं कृपां क्रियासुः। आत्मामनश्च चरणयोः स्थिरं भवेताम्॥ १७ ॥
पाउँ रस घट में नित्त नवीन । केल करूँ धुन सँग जस जल मीन ॥ १८ ॥	घटे नित्यनवीनं रसं प्राप्नोमि। ध्वनिना सह अप्सु मीनेव विलासं करोमि॥ १८ ॥
गाउँ नित आरत प्रेम भरी । सुरत रहे राधास्वामी चरन अड़ी ॥ १९ ॥	नित्यं प्रेमपूर्णां आरतिं गायामि। आत्मा राधास्वामीचरणयोः दृढीभूतः॥ १९ ॥
करो प्यारे राधास्वामी मेहर बनाय । लेव सब जीवन चरन लगाय ॥२०॥	राधास्वामीदयालुः कृपां क्रियासुः। सर्वान् जीवान् चरणयोः युञ्ज्युः॥ २० ॥
करें तुम आरत धर कर प्यार । गायें नित राधास्वामी नाम दयार ॥ २१ ॥	धृत्वा प्रेम तवारतिं कुर्युः। नित्यं राधास्वामीदयालोः नाम गायेयुः ॥ २१ ॥

॥ शब्द ६ ॥ करूँ गुरु सतसँग नित्त अली	
हिंदी	संस्कृत
करूँ गुरु सतसँग नित्त अली । खटक परमारथ चित्त खली॥ १ ॥	अयि सखि नित्यं गुरुसत्सङ्गं करोमि। परमार्थस्य आशंकया भयप्रतीतिः भवति॥ १ ॥
कुटुँब सँग करूँ सतसंग सम्हार । शब्द का मन में धारूँ प्यार ॥ २ ॥	कुटुम्बेन सह अवधानेन सत्सङ्गं करोमि। मनसि शब्दस्य प्रेम धरामि॥ २ ॥
जगत का भय और भाव तियाग । करूँ भोगन से अब बैराग ॥ ३ ॥	जगतः भयभावञ्च परित्यज्य। अधुना भोगेभ्य: वैराग्यं करोमि॥ ३ ॥
चरन में राधास्वामी धर अनुराग । सुरत मन दोऊ उठे अब जाग ॥ ४ ॥	राधास्वामीचरणयो: अनुरागं धृत्वा। अधुना आत्मामनश्च द्वौ जागृतौ ॥ ४ ॥
शब्द धुन सुन सुन होत मगन । कहत राधास्वामी सतगुरु धन धन ॥ ५ ॥	श्रावं श्रावं शब्दध्वनिम् मग्नं भवतः। राधास्वामीसद्गुरुं धन्यं धन्यम् इति कथयतः॥ ५ ॥
बिरह दरशन की जाग रही । जगत से छिन छिन भाग रही ॥ ६ ॥	दर्शनस्य पीडा जागर्ति। प्रतिक्षणं जगत: पलायनं करोति॥ ६ ॥
काल ने डाले बिघन अनेक । काट दिये गह सतगुरु की टेक ॥ ७ ॥	काल: अनेकविघ्नान् अविक्षिपन्। सद्गुरोः शरणं गृहीत्वा अकृन्तन्॥ ७ ॥
उमँग सेवा की हिये बसाय । करूँ मैं जब तब औसर पाय ॥ ८ ॥	हृदये सेवायाः उत्साहम् धार्य। करोम्यहं यदा तदा प्राप्यावसरम्॥ ८ ॥
गुरू से माँगूँ प्रेम की दात । दया का चाहूँ सिर पर हाथ ॥ ६ ॥	याचे प्रेमोपायनं गुरुम् । दयायाः हस्तं शिरसि वाञ्छामि॥ ९ ॥
दीनता साँची मन में लाय । रहूँ नित गुरु की भक्ति कमाय ॥१०॥	मनसि सत्यं दैन्यं धार्य। नित्यं गुरुभक्तिम् अर्जयामि॥ १० ॥
पिरेमी जन से नाता जोड़ । रहूँ जग जीवन से मुख मोड़ ॥११॥	संयुज्य बन्धुतां प्रियजनेन सह । जगजीवनात् मुखं प्रत्यावर्त्य वसामि ॥ ११ ॥
उमँग कर आरत गाऊँ नित्त । सरन राधास्वामी धारूँ चित्त ॥१२॥	उत्साहेन नित्यं आरतिं गायामि। राधास्वामीशरणं चित्ते धरामि॥ १२ ॥

॥ शब्द ७ ॥ प्रेम की महिमा क्या गाई	
हिंदी	संस्कृत
प्रेम की महिमा क्या गाई । हिये में सीतलता छाई ॥ १ ॥	प्रेम्णः महिमां किमगायत् । हृदये शैत्यं व्याप्नोत्॥ १ ॥
प्रेम जिस घट में किया परकास । गया तम हुआ शब्द उजियास ॥ २ ॥	यस्मिन् घटे प्रेमप्रकाशं जातम् । तमः गतः शब्दस्य प्रकाश: जातः॥ २ ॥
पिरीतम हिरदे में बसिया । सुरत मन चरन लाग रसिया ॥ ३ ॥	प्रियतमः हृदये उषितः। रसिकौ आत्मामनश्च चरणौअयुङ्क्ताम् ॥ ३ ॥
प्रेम राधास्वामी चरनन लाय । हिये में निस दिन आनँद पाय ॥ ४ ॥	राधास्वामीचरणयोः प्रेम आनीतवान् । प्रतिदिनं हृदये आनन्दम् प्राप्तवान्॥ ४ ॥
प्रीति गुरु चरनन आन धरी । सुरत घट धुन सँग गगन भरी॥ ५ ॥	गुरुचरणयो: प्रीतिः धृता मर्यादया । घटे आत्मा ध्वनिना सह गगने प्रविष्टः॥ ५ ॥
लगा वाहि गुरु सतसँग प्यारा । हुआ मन जग से अब न्यारा ॥ ६ ॥	तं गुरुसत्सङ्गः प्रियः प्रतीतः। अधुना मन: जगत: पृथग् जात:॥ ६ ॥
बचन सुन जग उगलत मनुआँ। चढ़त नित घट में गह धुनुआँ॥ ७ ॥	वचनं श्रुत्वा मन: जगत् त्यजति । नित्यं घटे ध्वनिं गृहीत्वा आरोहति ॥ ७ ॥
सुनत सतसँग की महिमा सार । सुरत आई उमँगत गुरु दरबार ॥ ८ ॥	सत्संगस्य महिमासारं श्रृण्वन् । आत्मा उल्लासेन गुरुसदनम् आगत: ॥ ८ ॥
प्रीति हिये भर भर करती सेव । धरत परतीत चरन गुरु देव ॥ ९ ॥	हृदये प्रीतिं पूरयित्वा सेवां करोति । गुरुदेवानां चरणयोः प्रीतिं धरति ॥ ९ ॥
सुनत गुरु बचन धार अनुराग । भोग जग देती मन से त्याग ॥ १० ॥	अनुरागेण गुरुवचनं श्रृणोति । जगत: भोगान् मनसः त्यजति ॥ १० ॥
करत नित भजन बिरह अँग लाय । शब्द सँग सूरत नित रस पाय ॥११॥	नित्यं विरहाङ्गेन भजनं करोति । नित्यं आत्मा शब्देन सह रसं प्राप्नोति ॥ ११ ॥
दया गुरु घट में परख रही । चाल मन इंद्री निरख रही ॥१२॥	गुरु दयां घटे ईक्षते । मनसः इन्द्रियाणाञ्च गतिं निरीक्षते ॥ १२ ॥
रूप गुरु हिये में ध्याय रही। सरन गुरु मन में पकाय रही ॥१३॥	हृदये गुरुस्वरूपं ध्यायति । मनसि गुरुशरणं पाचयति ॥ १३ ॥
पाय घट आनँद चरन बिलास । चरन गुरु बढ़ता नित बिश्वास ॥१४॥	घटे चरणविलासस्य आनन्दं प्राप्य । नित्यं गुरुचरणयो: विश्वासं वर्धते ॥ १४ ॥

उमँग अँग आरत गुरु धारी। हुए अब तन मन सुखियारी ॥१५॥	उत्साहाङ्गेन गुरोः आरतिः धृता । तनुमनश्च सुखमयौ जातौ ॥ १५ ॥
मेहर की दृष्टि करी गुरु ने । सुरत मन लागे घट चढ़ने ॥१६॥	सद्गुरुः कृपादृष्टिं कृतवन्तः । आत्मामनश्च घटे आरूढौ ॥ १६ ॥
तोड़ तिल गई सुरत नभ माहिं । जोत लख मिटी काल की दायँ ॥१७॥	षष्ठचक्रं त्रोटयित्वा आत्मा नभं गतः। ज्योतिं दृष्ट्वा कालस्य परिपेषणं नष्टम् ॥ १७ ॥
गगन चढ़ शब्द गुरु दरशन । मिले और वारा तन मन धन ॥१८॥	गगनं आरुह्य शब्दगुरोः दर्शनं प्राप्तवान् । तनुमनधनञ्च समर्पितानि ॥ १८ ॥
सुन्न में चढ़ गई सुरत अकेल करत वहँ हंसन सँग अब केल ॥१९॥	सुन्नपदे आत्मा एकलः आरोहितः। अधुना हंसैः सह विलासं करोति तत्र ॥ १९ ॥
भँवर में गई महासुन पार । सुनी धुन सोहं मुरली सार ॥२०॥	महासुन्नम् अतिक्रम्य भँवरपदं गतः। वेणुसारं सोहं ध्वनिं श्रुतः ॥ २० ॥
सत्तपुर दरशन सतपुर्ष पाय । बीन धुन सुनत रही हरषाय ॥२१॥	सत्तपुरे सत्तपुरुषस्य दर्शनं प्राप्य । प्रसन्नं भूत्वा अहितुण्डवाद्यस्य ध्वनिं श्रृणोति ॥ २१ ॥
वहाँ से अलख के पार गई । अगम लख राधास्वामी चरन पई ॥ २२॥	तत्रतः अलखपदात् पारं गतः। अगमपदं दृष्ट्वा राधास्वामीचरणौ समर्पितः ॥ २२ ॥
वहीं है राधास्वामी का निज धाम । परम गुरु संतन का बिसराम ॥२३॥	तत्रैवास्ति राधास्वामीदयालोः निजधामः(धाम) । परमगुरुसन्तानां विश्रामस्थलञ्च ॥ २३ ॥
मिला वहाँ अद्भुत भक्ती साज । सुरत का हो गया पूरा काज ॥ २४ ॥	तत्राद्भुतं भक्तिसज्जं प्राप्तम् । आत्मनः पूर्णकार्यं सिद्धम् ॥ २४ ॥
दया गुरु मिला निज घर येही । शब्द में सूरत जब देई ॥ २५ ॥	गुरुदयया प्राप्तं इदमेव निजगृहम् । यदा आत्मा शब्दे अयुनक् ॥ २५ ॥
करी यहँ आरत राधास्वामी जोर । सुरत हुई प्रेम रंग सरबोर ॥ २६ ॥	अत्र सज्जीभूय राधास्वामीदयालो आरतिः कृता अत्युत्साहेन आत्मा प्रेमरंगेन पूर्णार्द्रः अभूत् ॥ २६ ॥
परम पुर्ष राधास्वामी हुए सहाय । लिया मोहि अपनी गोद बिठाय ॥२७॥	परमपुरुषराधास्वामीदाता साहाय्या अभवन्। मां स्व अङ्के आसादयन्॥ २७ ॥

॥ शब्द ८ ॥ प्रेम की दौलत अपर अपार	
हिंदी	संस्कृत
प्रेम की दौलत अपर अपार । प्रेम से मिलता सिरजनहार ॥ १ ॥	प्रेम्ण: सम्पदा अपरापारश्च। प्रेम्णा सृष्टिकर्ता लभते॥ १ ॥
प्रेम बिना सब झूँठा ध्यान । प्रेम बिना सव थोथा ज्ञान ॥ २ ॥	प्रेम विना सर्वं ध्यानं मिथ्या। प्रेम विना सर्वं ज्ञानं व्यर्थम्॥ २ ॥
प्रेम बिना सब बानी रीती । प्रेम से काल करम को जीती ॥ ३ ॥	प्रेम विना सर्वं वचनं निरर्थकम्। प्रेम्णा कालकर्म च अजयताम्॥ ३ ॥
प्रेम से मन माया बस आये । प्रेम से सूरत अधर चढ़ाये ॥ ४ ॥	प्रेम्णा मनः माया च वशे जातौ। प्रेम्णा आत्मानं अधरम् आरोहयत॥ ४ ॥
प्रेम निकारे सबहि बिकार । प्रेम से होवे जग से न्यार ॥ ५ ॥	प्रेम सर्वान् विकारान् निष्कासयति। प्रेम्णा जगत: पृथग् भवति॥ ५ ॥
प्रेम से दीखे घट में नूर । प्रेम रहा घट घट भरपूर ॥ ६ ॥	प्रेम्णा घटे प्रकाशं दृश्यते। प्रेम प्रतिघटं परिपूर्णम् अस्ति॥ ६ ॥
प्रेम की महिमा सबसे भारी । प्रेम बिना सब पच पच हारी ॥ ७ ॥	प्रेम्ण: महिमा अतिमहती। प्रेम विना क्षीणातिशया॥ ७ ॥
प्रेम बिना सब थोथी कार । प्रेम से उतरे भौजल पार ॥ प्रेम की बख्शिश दें राधास्वामी ॥ ८ ॥	प्रेम विना सर्वा: क्रिया: व्यर्था:। प्रेम्णा भवसागरात् पारम् अवतरति॥ राधास्वामीदातार: प्रेमानुदानं देयासु:॥ ८ ॥

॥ शब्द ९ ॥ राधास्वामी दाता दीनदयाला	
हिंदी	संस्कृत
राधास्वामी दाता दीनदयाला । दास दासी को लेव सम्हाला ॥ १ ॥	राधास्वामीदाता दीनदयालु:। दासदासी: च संरक्षेयुः॥ १ ॥
बहु दिन जग में भटका खाया। मेहर हुई अब चरन लगाया ॥ २ ॥	बहुदिवसपर्यन्तं जगति मार्गात् परिभ्रष्टः । जाता दया चरणयोः अयुञ्जन् इदानीम् ॥ २ ॥
दया करी तुम दोउ पर भारी । बिरह अगिन चिनगी हिये डारी ॥ ३ ॥	महती कृपा कृता द्वयो: । हृदये विरहाग्नेः स्फुलिंगा: अविक्षिपन्॥ ३ ॥
किरपा कर उसको सुलगाओ। बुझने न पावे अस मेहर कराओ ॥ ४ ॥	कृपया तं प्रज्वलेयुः। न भवेत् निर्वपणम् ईदृशीं कृपां कारयेयुः॥ ४ ॥
माया घर सब फूँक जलाओ। मन को निकालो अधर चढाओ ॥ ५ ॥	सर्वं मायागृहं फुत्कारेण ज्वलेयुः। निष्कासयेयुः मन: आरहयेयु अधरम् ॥ ५ ॥
सुरत पड़ी जो इसके बस में। ताहि पहुँचाओ द्वारे दस में ॥ ६ ॥	आत्मा यो अस्याः वशवर्ती अस्ति । तं दशं द्वारम् आप्नुयुः॥ ६ ॥
हंस हंसनी सँग करे बिलासा । देखे अचरज बिमल तमाशा ॥ ७ ॥	हंसहंसीभिश्च सह विलासं कुर्यात्। अद्भुतं विमलं कौतुकं पश्येत्॥ ७ ॥
यह मन कच्चा बूझ न लावे कभी सीधा कभी उलटा धावे ॥ ८ ॥	इदम् अपक्वः मन: न बोधति । धावति कदापि समः कदापि विपरीतगत्या॥ ८ ॥
भोगन की जब तरँग उठावे । सतसँग बचन वहीं बिसरावे ॥ ९ ॥	यदा भोगानां तरंगान् उद्भावयति। सत्संगवचनानि तत्रैव विस्मारयति॥ ९ ॥
अनेक ख्याल में रहे भरमाई। अनेक काज की चिन्ता लाई ॥१०॥	अनेकविचारेषु भ्रमति। अनेककार्यान् चिन्तयति॥ १० ॥
बिरह प्रेम तब जाय छिपाई। जग कारज का रूप धराई ॥११॥	तदा विरहप्रेम च तिरोभावयति । जगतकृत्यस्य रूपं धरति॥ ११ ॥
भजन ध्यान में रूखा फीका । घट में रस नहिं पावत नेका ॥१२॥	भजनध्यानयो: रुक्षनीरसश्च भवति। घटे अल्पमपि रसं न प्राप्नोति॥ १२ ॥
अस हालत जब मन की होई । बेकली और घबराहट दोई ॥१३॥	भवति ईदृशी अवस्था मनसः यदा । वर्धेते अशान्तिव्याकुलता च द्वे ॥ १३ ॥
बाढ़ चित में चैन न आवे । तड़प तड़प जिया बहु घबरावे ॥१४॥	नाप्नोति शान्तिं चित्ते । व्यग्रं व्यग्रं उद्विग्नं भवति हृदयः ॥ १४ ॥

अस अस भय मन माहिं समाई । दया मेहर क्या खिंच गई भाई ॥ १५ ॥	ईदृग् भयः मनसि समाविशति। किमापकृष्टौ दयाकृपा च ॥ १५ ॥
फिर जब जग कारज हुआ पूरा। झलके प्रेम बिघन हुआ दूरा ॥१६॥	पुन: यदा जगतः कार्यं पूर्णं जातम्। द्योतते प्रेम समाप्तं विघ्नम् ॥ १६ ॥
गुरु चरनन में प्रीति जगानी । राधास्वामी दया सत्त कर मानी ॥१७॥	गुरुचरणयो: प्रीतिः जागृता। राधास्वामीदयां सत्तं कृत्वा अमनुत॥ १७ ॥
ऐसे झकोले आवें जावें । कभी सूखा कभी प्रेम दिखावें ॥१८॥	ईदृशानां झटकानाम् आवागमनं भवति। कदापि शुष्कः कदापि दर्शयति प्रेम ॥ १८ ॥
इस बिधि मन शान्ती नहिं लावे । डिगमिग डिगमिग झोके खावे ॥१९॥	न प्राप्नोति शान्तिं मन: अनया विधिना । सहते झटनानि अस्थिरी भूय ॥ १९ ॥
गहरी दया करो मेरे प्यारे । प्रेम के खोल देव भंडारे ॥२०॥	कुर्यात् अगाधदयां मम प्रियः । उद्घाटयेत् प्रेम्ण: भाण्डागारम् ॥ २० ॥
निस दिन रहूँ चरन लौलीना । केल करूँ जस जल सँग मीना ॥२१॥	प्रतिदिनं चरणयोः तल्लीनं भवेयम्। अप्सु मत्स्यवत् विलासं कुर्याम्॥ २१ ॥
जग कारज मोहि अब न सतावें । चिन्ता डर मोहि नहिं भरमावें ॥ २२ ॥	मा पीडयेयुः जगतः कार्याणि ममाधुना । मा भ्रमेतां चिन्ताभयश्च माम्॥ २२ ॥
प्रेम धार रहे हरदम जारी । धुन सँग सुरत की लागे ताड़ी ॥२३॥	सततं प्रेम्णः धारा प्रवहेत्। ध्वनिना सह आत्मा मत्त: भवेत्॥ २३ ॥
जब चाहूँ तब रस लेउँ भारी । अमी धार सँग भीजूँ सारी ॥ २४ ॥	यदा वाञ्छामि रसास्वादनं करोम्यधिकं तदा । अमृतधारया सह पूर्णतः क्लिन्नं भवेयम्॥ २४ ॥
ऐसी मेहर करो स्वामी प्यारे । शब्दारस घट पाऊँ सदा रे ॥ २५ ॥	स्वामीप्रिय: ईदृशीं दयां कुर्युः। अयि घटे सदा शब्दारसं प्राप्नोमि॥ २५ ॥
चरन बिना नहिं और अधारे । हरष हरष गुन गाउँ तुम्हारे ॥ २६ ॥	नान्यः कोऽप्याश्रयः चरणं विना । हर्षित्वा हर्षित्वा तव गुणान् गायामि॥ २६ ॥
जो यह झकोले मौज से आवें । बिरह जगा नशा हज़म करावें ॥२७॥	चेद् इमानि झटनानि कृपया आगच्छेयुः। जागरित्वा विरहं मदं पाचयेयुः ॥ २७ ॥
तौ चरनन में दृढ़ विश्वासा | देव छुड़ाय काल घर बासा ॥ २८ ॥	तदा चरणौ दृढविश्वासं भवेत्। कालस्य गृहे वासं मुञ्चेयुः॥ २८ ॥
झीनी याद प्रेम सँग मन में । बनी रहे नहिं भूले छिन में ॥२९॥	मनसि प्रेम्णा सह मृदुः स्मृतिः भवेत्। भवेत् स्थिरं न विस्मरेत् क्षणे ॥ २९ ॥
राधास्वामी राधास्वामी नित नित गाऊँ।	नित्यं नित्यं राधास्वामीराधास्वामीनाम गायामि।

चरन सरन पर बल बल जाऊँ॥ ३० ॥	चरणशरणे समर्पयामि पुनः पुनः॥ ३० ॥

॥ शब्द १० ॥ राधास्वामी सत मत जिसने धारा	
हिंदी	संस्कृत
राधास्वामी सत मत जिसने धारा । सहज हुआ उन जीव उधारा ॥ १ ॥	येन राधास्वामीसत्यमतं धृतम् । तेषां जीवानाम् उद्धारं सहजमभवत्॥ १ ॥
राधास्वामी चरन सरन सत धारी । वही जीव उतरे भौ पारी ॥ २ ॥	राधास्वामीसतचरणशरणं धृतम् । सैव जीवः भवसागरात् तरति॥ २ ॥
सुरत शब्द की जो करे करनी । वही जीव भौसागर तरनी ॥ ३ ॥	यः सुरतशब्दस्याभ्यासम् करोति। सैव जीवः भवसागरात् तरति॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति चरन में लावे । राधास्वामी दया सोई जिव पावे ॥ ४ ॥	प्रीतिप्रतीतिञ्च चरणयो: धरति। सैव जीव: राधास्वामीदयां प्राप्नोति॥ ४ ॥
सतगुरु से जो प्रेम लगावे । । राधास्वामी चरनन जाय समावे ॥ ५ ॥	य: सद्गुरुणा सह प्रेम धारयति। राधास्वामीचरणयो: समाविशति॥ ५ ॥
गुरु की प्रीति तुड़ावे बंधन । सहजहि वारे तन मन और धन ॥ ६ ॥	सद्गुरुप्रीतिः बन्धं त्रोटयति। तनुमनधनञ्च सहजे समर्पयति॥ ६ ॥
जग का मोह सहज में छूटे। तन मन बंधन बहु बिधि टूटे ॥ ७ ॥	सहजे जगद्मोहः मुञ्चति। तनुमनोभ्यां बहुविधबन्धनानि त्रुटन्ति॥ ७ ॥
बिरह अंग ले करे अभ्यासा । प्रेम पंख ले उड़े अकाशा ॥ ८ ॥	विरहाङ्गेन अभ्यासं कुर्यात्। प्रेमपक्षाभ्याम् गगनं प्रति उड्डयनं कुर्यात्॥ ८ ॥
गुरु सरूप का धर कर ध्याना । ताके घट में बिमल निशाना ॥९ ॥	गुरुस्वरूपस्य ध्यानम् धृत्वा। विमलं संकेतं घटे ईक्षते॥ ९ ॥
प्रीति सहित जो करे यह करनी । सुरत निरत निज पद में धरनी ॥१०॥	यः प्रीत्या सह एनां क्रियां करोति। सुरतं निरतं च निजपदे धरति॥ १० ॥
माया बिघन न लागे कोई । शब्द रूप में सुरत समोई ॥११॥	कोऽपि मायाविघ्न: न भवेत्। शब्दरूपे आत्मा अन्तर्भवेत्॥ ११ ॥
निस दिन घट में आनँद पावे । राधास्वामी की महिमा गावे ॥ १२ ॥	प्रतिदिनं घटे आनन्दं प्राप्नोति। प्रतिदिनं राधास्वामीमहिमां गायति॥ १२ ॥
मेहर दया का धार भरोसा । चित को अपने छिन छिन पोसा ॥ १३ ॥	आशीर्वृष्टया: विश्वासं धार्य। प्रतिक्षणं स्व चित्तं पुष्टं कृतम्॥ १३ ॥
भोग बासना मन से टारे ।	भोगवासनाश्च मनसः दूरीकृता:।

मगन रहे चरनन आधारे ॥ १४ ॥	चरणाधारे लीन: भवति॥ १४ ॥
मौज गुरू की सदा निहारे । रज़ा गुरू की सदा सम्हारे ॥ १५॥	गुरो विशिष्टकृपां सदा निरीक्षेत। सदैव गुरो: प्रसन्नतां संरक्षेत॥ १५ ॥
सतगुरु रक्षक तन मन प्रान । सतगुरु देवें भक्ती दान ॥१६॥	सद्गुरु: तनुमनप्राणस्य च रक्षका: सन्ति। सद्गुरु: भक्तिदानं ददति॥ १६ ॥
बिना मौज गुरु कुछ नहिं होवे मौज आसरे निरभय सोवे ॥१७॥	गुरुइच्छां विना किमपि सिद्धं न भवति। गुरुइच्छाश्रये निर्भयं शेते॥ १७ ॥
जिसको हुई अस गुरु परतीती। सोइ जन काल करम को जीती ॥१८॥	यस्य ईदृशी गुरुप्रतीतिः अस्ति। सैव जनः कालकर्म च जयति॥ १८ ॥
जब कभी मन और चित घबरावे | घट में चरन ओर को धावे ॥१९॥	यदाकदापि मनसि चित्ते च व्याकुलता भवेत्। घटे चरणौ प्रति धावेताम्॥ १९ ॥
और प्रार्थना करे घनेरी । देव सहारा काटो बेड़ी ॥२०॥	गहनप्रार्थनां कुर्याताम्। आश्रयं देयासुः पाशं कृत्यासुः च॥ २० ॥
बहु विधि करम किये मन साथा । सो सतगुरु काटें दे हाथा ॥२१॥	अनेककर्माणि कृतानि मनसा सह । सद्गुरु: तान् हस्ताश्रयेण कृन्तेयुः॥ २१ ॥
कोइ दिन करम भोग हट जावें । मेहर करें जल्दी भुगतावें ॥ २२ ॥	केचित् दिवसेषु कर्मभोगाश्च अपसरेयुः। क्षिप्रं आशीर्वृष्ट्या निर्वतन्ते ॥ २२ ॥
जब गुरु में हुआ गहरा प्यार । शब्द भेद तव मिलिया सार ||२३||	यदा गहनप्रीतिः गुरौ अभवत्। तदा शब्दभेदसारं प्राप्तम्॥ २३ ॥
मन और सुरत चढ़ें ऊँचे को । उलट न देखें फिर नीचे को ॥२४॥	मन: आत्मा च उच्चपदे आरोहत:। प्रत्यावर्त्य पुन: निम्नस्थलम् न पश्येताम् ॥ २४ ॥
राधास्वामी चरनन बढ़े पिरीती । धारे मन में दृढ़ परतीती ॥ २५ ॥	राधास्वामीचरणयो: प्रीतिं वर्धेत। मनसि दृढप्रतीतिं धरेत् ॥ २५ ॥
सतसंगी सब प्यारे लागें । गहरी प्रीति परस्पर पालें ॥ २६ ॥	सर्वे सत्संगीजना: प्रियाः भवेयुः । परस्परं सघनप्रीतिं धरेयुः॥ २६ ॥
दया भाव जीवन में आवे । सुरत अंस घट घट नज़रावे ॥ २७॥	जीवने दयाभावं प्रादुर्भवेत्। आत्मांश: प्रतिघटं पश्येत् ॥ २७ ॥
सहज विरोध अंग छुट जावे । हसद ईर्षा नाहिं सतावे ॥२८॥	सहजविरोधस्य अंग: मुञ्च्येत्। ज्वलनं ईर्षा च न पीडयेताम् ॥ २८ ॥
मन में रहे कोई नहिं इच्छा । यही आस मालिक मिले सच्चा २६॥	मनसि काऽऽपीच्छा नावशिष्येत् । इयमेवाशा सत्स्वामी प्राप्येत्॥ २९ ॥

यही आस बढ़े दिन दिन मन में । मालिक का दर्शन मिले तन में ॥३०॥	प्रतिदिनं इयमेवाशा मनसि वर्धेत। प्रभोः दर्शनं तनौ प्राप्येत्॥ ३० ॥
काम क्रोध अस दूर बहावे । राधास्वामी चरन सरन लिपटावे ॥३१॥	एवं कामक्रोधौ दूरं प्रवहेताम्। राधास्वामीचरणशरणे लिम्पेत्॥ ३१ ॥
भरम और कपट होयँ अस दूर । घट घट दीखे सत का नूर॥ ३२ ॥	भ्रमकपटश्च दूरं भवेताम् । प्रतिघटं सतप्रकाशं पश्येत्॥ ३२ ॥
जागत रहे उमंग नवेली । प्रेम रंग रहे सुरत रँगीली ॥३३॥	नवोत्साहं जागृयात्। रसिकात्मा प्रेम्णः रङ्गे रङ्ज्येत्॥ ३३ ॥
दीन ग़रीबी मन में धारे । प्रीति अंग घट में बिस्तारे ॥३४॥	दैन्यं दरिद्रताञ्च मनसि धरेत्। घटे प्रीत्यङ्गं विस्तरेत्॥ ३४ ॥
सब जीवन सँग धरे पियारा । यह भी लागे सबको पियारा ॥३५॥	सर्वजीवै: सह प्रेम धरेत्। अयमपि सर्वान् प्रियं प्रतीतं भवेत्॥ ३५ ॥
बाल दशा होय जग में बरते । मन में अकड़ पकड़ नहिं धरते ॥३६॥	जगति बालदशायाम् वर्तेत। मनसि अभिमानं ग्रहणबलञ्च न धरन्ति॥ ३६ ॥
होय निःकर्म सबन से न्यारा । राधास्वामी बिन नहिं और सहारा ॥३७॥	सर्वेभ्य: पृथग् भूत्वा निःकर्म भवेत्। राधास्वामीदयालुं विना नान्याश्रयः॥ ३७ ॥
संसय भरम न राखे कोई । मन में कभी निरास न होई ॥३८॥	मनसि कोऽपि संशयं भ्रमं च न धरेत्। कदापि मनसि निराशं न भवेत्॥ ३८ ॥
दृढ़ विश्वास चरन में धारे । मुक्ति आपनी होत निहारे ॥ ३६ ॥	चरणयोः दृढविश्वासं धरेत्। स्व मुक्तिं निरीक्षेत॥ ३९ ॥
गुरु दयाल भौ पार उतारें । कुल कुटुम्ब को भी ले तारें ॥४०॥	गुरुदयालु: भवसागरात् तीर्णयन्ति। कुलं कुटुम्बमपि तारयन्ति॥ ४० ॥
क्या महिमा गुरु भक्ती गाऊँ । गुरु की दया अपार सुनाऊँ ॥४१॥	गुरुभक्त्याः महिमां किं गायेयम्। गुरोरपारदयाम् श्रावयामि॥४१॥
निर्मल भक्ति करे सोइ सूरा । काज करें वाका गुरु पूरा ॥४२॥	सैव शूरः य: निर्मलभक्तिं करोति । गुरु: तस्य कार्यं पूर्णं कुर्वन्ति ॥४२॥
तासे बार बार कहूँ बचना । गुरु भक्ती सम और न जतना ॥४३॥	अतः: पुनः पुन: वचनं कथयामि। गुरुभक्तिसमं न कोऽप्युपायः॥४३॥
याते सब कारज होयँ पूरे । करम काट पहुँचे घर मूरे ॥४४॥	अनया सर्वाणिकार्याणि सिध्यन्ति। कर्माणि कृत्वा विशुद्धगृहं प्राप्नोति॥४४॥
गृहस्त होय चहे हो बैरागी ।	गृहस्थः भवेत् विरक्तः वा भवेत्।

गुरु चरनन में जो लौ लागी ॥४५॥	गुरुचरणयो: या प्रगाढ़प्रीति: जाता॥४५॥
पुरुष होय चहे स्त्री होई । । गुरु के संग प्रीति करे सोई ॥४६॥	पुरुषः भवेत् स्त्री वा भवेत्। सैव गुरुणा सह प्रीतिं कुर्यात्॥४६॥
सतगुरु वाका करें उधारा । । मेहर दया से लेहिं सुधारा ॥४७॥	सद्गुरु: तस्योद्धारं कुर्वन्ति । दयया कृपया च सुधारयन्ति॥४७॥
सब जीवों को चहिये ऐसी । गुरु सँग प्रीति करें जैसी तैसी ॥४८॥	सर्वजीवेभ्यः वाञ्छितमस्ति। कुर्युः गुरुणा सह प्रीतिं यादृशी तादृशी ॥४८॥
तौ उनका भी कारज सरई । भौसागर वे इक दिन तरई ॥४९॥	तेषामपि कार्याणि सेत्स्यन्ति तर्हि । तेऽपि एकदिने भवसागरात् तरिष्यन्ति॥४९॥
जग में जम का ज़ोर घनेरा । जीव करें चौरासी फेरा ॥५०॥	जगति कालस्य गहनं बलम्। जीवा: चतुरशीत्यां गमनागमनं कुर्वन्ति॥५०॥
कोई जीव बचने नहिं पावें । सतगुरु बिन सब भटका खावें ॥५१॥	न कोऽपि जीवः सुरक्षित: अस्ति । सर्वे सद्गुरुं विना मार्गात् परिभ्रंशन्ति॥५१॥
बड़भागी जाय सतगुरु भेंटे। चरन भेद दे घट में खैंचें ॥५२॥	सौभाग्यशालीजीवः सम्मिलति सद्गुरुणा सह । चरणभेदं दत्वा घटे आकर्षन्ति॥५२॥
सुरत शब्द का भेद सुनावें । ध्यान भजन की जुगत लखावें ॥५३॥	सुरतशब्दस्य रहस्यं श्रावयन्ति। ध्यानभजनयो: युक्तिं कथयन्ति॥५३॥
सहसदल कँवल जोत दरसावें । अनहद घंटा संख सुनावें ॥ ५४ ॥	सहस्रदलकँवलपदस्य ज्योतिं दर्शयन्ति। अनाहतघंटाशंखयो: ध्वनिम् श्रावयन्ति॥५४॥
बंकनाल धस त्रिकुटी तीर । सुरत चढ़ी मिला पद गंभीर ॥५५॥	अन्तर्निविश्य बंकनालपदे त्रिकुटीसमीपम् । अरोहत् आत्मा प्राप्तं गम्भीरपदम् ॥५५॥
लाल सूर जहँ गुरु का रूपा । ओंकार पद त्रिकुटी भूपा ॥५६॥	ताम्रसूर्य: यत्र गुरुस्वरूपम् । त्रिकुटीपदस्य भूपतिः ओंकार: ॥५६॥
सुन में लखा चंद्र अस्थान | अक्षर पुरुष रकार निशान ॥५७॥	सुन्नस्थले चन्द्रस्थानं अपश्यत्। अक्षरपुरुष: रकारेति चिह्नम् ॥५७॥
किंगरी बाजे और सारंग । छोड़े नीचे गरज मृदंग ॥५८॥	किंगरीसारङ्गश्च वाद्यौ नदतः। गर्जनं मृदङ्गञ्च अधः त्यक्तौ॥५८॥
महासुन्न होय गई गुफा में। सोहं धुन सुनी सुत सफ़ा में ॥५९॥	महासुन्नपदात् गुहायां गतवान्। सोहं ध्वनिं स्पष्टतया श्रुतवान्॥५९॥
सत्तलोक का द्वारा सोई । आगे चढ़ सुरत शब्द समोई ॥६०॥	सैव द्वार: सत्तलोकपदस्य । अग्रे गत्वा आत्मा शब्दे लीन: जात:॥६०॥

सत्तलोक सत्पुरुष निवास । हंस करें जहँ सदा बिलास ॥६१॥	सत्तपुरुषस्य निवासः सत्तलोकः । यत्र हंसा: सदा विलासं कुर्वन्ति॥६१॥
आगे अलख पुरुष दरबारा। तिस परे अगम लोक इक न्यारा ॥६२॥	अग्रे अलखपुरुषस्य सदनम् । ततः: परे अगमलोकैकः विचित्र: ॥६२॥
तिस के परे लखा धुर धाम । अकह अपार अगाध अनाम ॥६३॥	ततः परे मूलधामं अपश्यत्। अकहापारागाधानाम च ॥६३॥
हैरत रूप अथाह दवाम । राधास्वामी का जहाँ बिसराम ॥६४॥	सदा आश्चर्यजनकः अथाहश्च रूपम् । यत्रास्ति राधास्वामीदयालूनां विश्राम: ॥६४॥
हरष हरष सुत अति मगनानी । राधास्वामी चरन समानी ॥६५॥	हर्षित्वा हर्षित्वा अति मग्नं भूतात्मा । राधास्वामीचरणौ असंविशत्॥६५॥

॥ शब्द ११ ॥ उठत मेरे मन में नित्त उचंग	
हिंदी	संस्कृत
उठत मेरे मन में नित्त उचंग । रहूँ नित गुरु के संग निसंक ॥ १ ॥	मम मनसि नित्योल्लास: उत्तिष्ठति। नित्यं गुरुणा सह निःशंकं भूत्वा वसेयम्॥ १ ॥
प्रेम का किनका ब़ख्शिश देव । सर्ब अँग मोहि अपना कर लेव ॥ २ ॥	प्रेम्णः कणं अनुदाने प्रदेयुः। मां सर्वाङ्गेण स्वीकुर्युः॥ २ ॥
निकारो मन के सबहि विकार । चुवाओ घट में अमृत धार ॥ ३ ॥	मनसः सर्वान् विकारान् निष्कासयेयुः। घटे अमृतधारां स्रवेयुः॥ ३ ॥
बिना तुम मेहर रहूँ कंगाल । प्रेम की दीजै दात दयाल ॥ ४ ॥	तव कृपां विना दरिद्रः भवेयम्। दातादयालु: प्रेम्णोपायनं यच्छेयु:॥ ४ ॥
धरो नहिं औगुन चित्त दयाल । दया कर कीजै आज निहाल ॥ ५ ॥	हे दयालो चित्ते अवगुणान् न धारयेयुः। अद्य दयां कृत्वा कृतार्थ: कुर्युः॥ ५ ॥
सरन में तुम्हरे जब आया । सुरत और शब्द भेद पाया ॥ ६ ॥	यदा तव शरणं आगतवान्। आत्माशब्दयो: भेदं प्राप्तवान्॥ ६ ॥
काल से नाता टूट गया । करम का लेखा छूट गया ॥ ७ ॥	कालात् सम्बन्धः अत्रुटत्। कर्मण: ऋणम् अमुञ्चत्॥ ७ ॥
मौज से तुम्हरे होय सो होय । दूसरा करनहार नहिं कोय ॥ ८ ॥	भवेत् यत्किमपि तवेच्छ्या भवेत् । कर्त्ता नान्यः कोऽपि ॥ ८ ॥
बिनय सुनो राधास्वामी गुरु प्यारे । देव मोहि चरनन आधारे ॥ ९ ॥	राधास्वामीगुरुप्रिय: विनयं शृणुयुः। मां चरणाधारं यच्छेयुः॥ ९ ॥
प्रेम रँग भीज रहे मन मोर । सुरत चढ़े पकड़ शब्द की डोर ॥१०॥	क्लिद्यति मम मनः प्रेमरङ्गे । आरोहयेतात्मा ग्राह्य शब्दतन्तुम् ॥ १० ॥
लेउँ नित घट में रस आनंद । फसूँ नहिं कबही माया फंद ॥११॥	घटे नित्यं रसानन्दं प्राप्नोमि। कदापि मायापाशे न बद्धी भवामि॥ ११ ॥
अर्ज यह राधास्वामी करो मंजूर । रखो मोहि हाज़िर चरन हज़ूर ॥१२॥	राधास्वामीप्रिय: प्रार्थनेयं स्वीकुर्युः। चरणारविन्दयोः मां उपस्थितं धारयेयुः॥ १२ ॥

॥ शब्द १२ ॥ सुरत पियारी शब्द अधारी	
हिंदी	संस्कृत
सुरत पियारी शब्द अधारी । करत आज सतसंग ॥ १ ॥	प्रियात्मा शब्दस्य आधारः । अद्य सत्सङ्गं करोति॥ १ ॥
बिरह अंग ले सनमुख आई । चित में धार उमंग ॥ २ ॥	आगत: सन्मुखं विरहाङ्गेन । चित्ते उल्लासं धार्य॥ २ ॥
जगत भोग से कर बैरागा । तज दिया माया रंग ॥ ३ ॥	जगद्भोगेभ्य: वैराग्यं कृत्वा। मायारङ्गः त्यक्त:॥ ३ ॥
रहत उदास चित्त में निस दिन । क्योंकर छुटे कुसंग ॥ ४ ॥	प्रतिदिनं चित्ते उदास: भवति। किमर्थं कुसङ्गं मुञ्चेत्॥ ४ ॥
बिघन अनेक डालता काला । माया करती कारज भंग ॥ ५ ॥	काल: अनेकविघ्नान् विक्षिपति। माया कार्यं विकारयति॥ ५ ॥
भजन ध्यान कुछ बन नहिं आवत। मनुआँ रहता तंग ॥ ६ ॥	भजनं च ध्यानञ्च न सम्भवति। मनः संतप्तं भवति॥ ६ ॥
दया करो गुरु लेव सम्हारी । मोड़ो याका अंग ॥ ७ ॥	गुरु आशीर्वृष्टिं कुर्यु: संरक्षेयुः च । अस्याङ्गम् प्रत्यावर्तयेयुः ॥ ७ ॥
चरन सरन गुरु दृढ़ कर धारे। घट में होय असंग ॥ ८ ॥	गुरुचरणशरणं दार्ढ्येन धृतवान्। घटे असङ्गं भूत्वा॥ ८ ॥
शब्द माहिं नित रहे लौलीना । सुरत चढ़े मेरी जैसे पतंग ॥ ९ ॥	नित्यं शब्दे लयलीनं भवेत् । ममात्मा पतङ्गवत् आरोहयेत॥ ९ ॥
ऐसी दया करो मेरे प्यारे भक्ति करूँ मैं होय निसंक ॥१०॥	मम प्रिय: ईदृशीदयां कुर्यु:। निर्भीकं भूत्वा भक्तिं कुर्याम् ॥ १० ॥
राधास्वामी चरनन बासा पाऊँ माया के उतरें सबहि कुरंग ॥११॥	राधास्वामीचरणयोः वासं आप्नुयाम्। मायाया: सर्वे कुरङ्गाः अपसरेयुः॥ ११ ॥

॥ शब्द १३ ॥ सुरत रँगीली सतगुरु प्यारी	
हिंदी	संस्कृत
सुरत रँगीली सतगुरु प्यारी । लाई आरती धार ॥ टेक ॥	रसिकात्मा सद्गुरूप्रियः । आरतिमाधृत्य आनीतवान्॥ टेक ॥
उमँग उमँग कर सेवा करती । धर गुरु चरनन प्यार ॥ १ ॥	अत्युल्लासेन सेवां करोति। गुरुचरणयो: प्रेम आधृत्य॥ १ ॥
दरशन करत फूलती तन में चरनन पर जाती बलिहार ॥ २ ॥	दर्शनं कृत्वा देहे प्रफुल्लति। चरणौ समर्पयति॥ २ ॥
सतसँग सतगुरु प्यारे लागे । बचन सुनत हुशियार ॥ ३ ॥	सत्संगसद्गुरुश्च रोचेते। कुशलतया वचनं श्रृणोति॥ ३ ॥
सतसँगियन से हेल मेल कर । देखत बिमल बहार ॥ ४ ॥	सत्संगीजनैः सह सौहार्द्रं धारयति। विमलसौन्दर्यं पश्यति॥ ४ ॥
सुरत शब्द का ले उपदेशा । करत अभ्यास सम्हार ॥ ५ ॥	सुरतशब्दस्य उपदेशं गृहीत्वा। अवधानेन अभ्यासं करोति॥ ५ ॥
सुन सुन धुन मोहित हुई मन में । निरखत घट उजियार ॥ ६ ॥	श्रावं श्रावं ध्वनिं मनसि मोहितः। घटे प्रकाशं निरीक्षते॥ ६ ॥
राधास्वामी दया करी अब । लीन्हा गोद बिठार ॥ ७ ॥	राधास्वामीदाता अधुना दयां कृतवन्तः। अङ्के असादयन्॥ ७ ॥

॥ शब्द १४ ॥ सुरत प्यारी गुरु सनमुख आई	
हिंदी	संस्कृत
सुरत प्यारी गुरु सनमुख आई । आरती प्रेम सहित गाई ॥ १ ॥	प्रियात्मा गुरोः सम्मुखम् आगतः। प्रेम्णा आरतिः गीता॥ १ ॥
करत सतसँगियन सँग प्रीती । धार गुरु चरनन परतीती ॥ २ ॥	सत्संगीजनैः सह प्रेम करोति। गुरुचरणयोः प्रीतिम् आधृत्य॥ २ ॥
नित्त गुरु सतसँग में रहे जाग । बढ़ावत परमारथ का भाग ॥ ३ ॥	नित्यं गुरुसत्सङ्गे जागर्ति। परमार्थस्य भागं वर्धयति॥ ३ ॥
समझ सतसँग को निज सुख रास । कुटुंब सँग चहत चरन में बास ॥ ४ ॥	सत्सङ्गं निजसुखराशिः बुद्ध्वा। कुटुम्बेन साकं चरणयोः वासं वाञ्छति॥ ४ ॥
गुरू को छिन छिन कर परसन्न । चरन पर वारत तन मन धन ॥ ५ ॥	प्रतिक्षणं गुरुं प्रसन्नं कृत्वा। तनुमनधनञ्च चरणयोः समर्पयति॥ ५ ॥
दीन दिल करत गुरू की सेव । निमाना माँगत दया गुरु देव ॥ ६ ॥	दीनहृदयेन गुरुसेवां करोति। नम्रीभूय गुरुदेवस्य दयां वाञ्छति॥ ६ ॥
बाल को जस पित मात प्रिये । धरत अस राधास्वामी सरन हिये ॥ ७ ॥	बालाय प्रियौ पितरौ यथा । एवं राधास्वामीशरणं हृदये धरति॥ ७ ॥
चरन में खेलूँ धर बिश्वास । करें राधास्वामी पूरन आस ॥ ८ ॥	विश्वासं धार्य चरणयोः क्रीडामि। राधास्वामीदाता आशां पूर्णां कुर्युः॥ ८ ॥
मेहर से देव पिता प्यारे संग । करूँ तुम भक्ती उमँग उमंग ॥ ९ ॥	कृपया पिताप्रियः संगं ददयुः। अत्युल्लासेन तव भक्तिं करोमि॥ ९ ॥
होंय सब बिधि मेरे कारज पूर । रहूँ मैं राधास्वामी चरन हज़ूर ॥ १० ॥	मम कार्याणि सर्वविधिना सिद्धं भवेयुः। अहं पूज्यराधास्वामीचरणयोः उपस्थितं भवेयम् ॥ १० ॥